The Most Precious Gift For Your Daughter

लव यु डोटर

आपकी बेटी को
देने के लिए
सर्वश्रेष्ठ उपहार

Useful for
each women
&
Each parents
Also

प्रियम्

यह है आपकी बेटी के जीवन भर का सुख
और आपके जीवन भर की सन्तुष्टि
इसे यदि चूक गए तो वास्तव में पश्चात्ताप करना पड़ेगा
Don't miss this

अहो श्रुतम्

शा. बाबुलाल सरेमलजी बेडावाला
सिद्धाचल बंग्लोझ, हीरा जैन सोसायटी
साबरमती, अमदावाद-५
cell - 9426585904 - Email : ahoshrut.bs@gmail.com

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

पुस्तक का नाम : लव यु डोटर
लेखक : प्रियम्
प्रकाशक : श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार
भाषा : हिन्दी
विषय : बेटी के लिए लाईफ कोर्स
प्रकाशन वर्ष : संवत् 2078 इ.स. 2022
पृष्ठ : 380
आवृत्ति : तीसरी
किंमत : रू. 300/-

❖ प्राप्ति स्थान ❖

शाह बाबुलाल सरेमलजी
शा. सरेमल जवेरचंद फाइनफेब (प्रा.) ली.
672/11, बोम्बे मार्केट, रेल्वेपुरा,
अहमदाबाद – 380002. फोन : 2132543

श्री कुलीनभाइ के. शाह
श्री आदिनाथ मेडीसीन
TU-02, शंखेश्वर कोम्प्लेक्ष, कैलाशनगर, सुरत.
मो. 9574696000

श्री हर्ष शाह
702A, गणेश दर्शन एपार्टमेन्ट,
9th खेतवाडी, गीरगाम, मुंबई – 400004.
मो. 8828356826

Contents

THE MOUNTAIN OF THE GIFTS 4
Why? When ? What ? How ? 10
Make-up 33
DRESS 47
LOGIC 71
MODESTY 84
SPEECH 100
SILENCE 107
SOCIETY 111
CHARACTOR 124
11 SECRETS 130
Earning 175
ENGAGEMENT 197
FAMILY 218
HOME 241
ART 245
WIFEHOOD 257
FREEDOM 294
EQUALITY 305
PARENTING 313
FEEDING 330
MIS-UNDERSTANDING 336
LAW 342
CRUELTY 347
FOURTH BIRTH 362
GOOD-BYE 368

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

Love You Daughter

प्यारी बेटी

आज तुम्हें यह प्यार भरा उपहार देते हुए

हम एक अद्भुत स्नेह से आप्लावित हो रहे हैं ।

स्कूल-कॉलेज से या क्लास ट्युशन से

तुम्हें जो नहीं मिल सका

वह जीवनोपयोगी अमूल्य ज्ञान

इस छोटे से वोल्यूम में है ।

This is the life science my daughter !

यह तुम्हारे जीवनपथ का मार्गदर्शक बनेगा

तुम्हारे भविष्य को यह स्वर्ग बनाएगा

यह तुम्हारे सारे सुखों का रिजर्वेशन कर देगा।

Read it carefully

& always keep it with you.

जब भी तेरे जीवन में कोई भी समस्या आए

तो पुनः इस पुस्तक के पृष्ठों को पलटना।

We promise you

तुम्हारी सारी समस्याओं का समाधान इसमें मिल जाएगा

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

लव यू डॉटर

My dear... dearer...dearest daughter !

You don't know, तुम मेरे लिए कितनी प्यारी हो !

दुनिया कहती है, बेटी प्यार का सागर है।

I have objection here

प्यार का सागर तो मैं हूँ।

जब तू मेरे सामने आती है, तब।

खैर, परन्तु इतना यश मिले, ऐसा मेरा भाग्य कहाँ?

मेरे से तो तू कितनी अधिक भाग्यशाली है,

देखो तो सही, गाँव-गाँव और गली-गली में तेरे यश के कैसे परचम लहराते हैं !!!

बेटी तो प्यार का सागर है.... बेटी तो कलेजे का टुकड़ा है....

बेटी तो ज्ञान का सरोवर है.... बेटी तो घर की रोशनी है....

बेटी तो घर का आनन्द है.... बेटी तो घर की जान है....

बेटी तो स्नेह की प्रतिमा है.... बेटी तो बेटे से बढ़कर है....

बेटी तो तुलसी की क्यारी है.... बेटी तो बरगद की छाया है....

बेटी तो प्रेम का पालना है.... बेटी तो स्नेह का झूला है....

बेटी तो प्रज्वलित दीपमाला है.... बेटी तो उछलता हुआ उल्लास है....

बेटी तो कोयल की कूक है.... बेटी तो आनन्द की किलकारी है....

बेटी तो स्नेह की वर्षा है.... बेटी तो श्रद्धा की संगति है....

बेटी तो विश्वास की नौका है.... बेटी तो सृष्टि का शृंगार है....

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बेटी तो धरती की धड़कन है.... बेटी तो अवनि का अलंकार है....

बेटी तो पृथ्वी का वसन्त है.... बेटी तो झांझर की झंकार है....

बेटी तो बाप का हृदय है.... बेटी तो बाप का आँसू है....

Wow my doll,

तुम्हें तो Gift का पहाड़ मिल गया, सही बात है ना?

My dear, Realy I have no objection here.

I accept

बेटी के नाममात्र से ही शीतलता मिल जाती है,
बेटी तो दूसरी माता ही है।

(दिलीपभाई रावल)

तुम्हें शायद पता नहीं,

बेटी की यह दास्तान आज की नहीं,

बल्कि सैकड़ों-हजारों-लाखों वर्ष पुरानी है।

तुलसी रामायण के शब्दों में -

पुत्री पवित्र कियेउ कुल दोउ
बेटी तो दोनों कुलों को पवित्र करती है।
बाप के खानदान को और ससुर के खानदान को।

याद आते हैं तुषारभाई शुक्ला -

उंबर परनुं कोडियुं दीकरी, अंदर बहार प्रकाश
दीपशिखाथी दीकरी रेले, बंने घर अजवास
लीलीछम लागणीए लथबथ, भीनुं-भीनुं जीवतर
जीवतरने मधमधतुं करतुं, दीकरी नामे अत्तर

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

हर्षदभाई चंदाराणा ने मेरे हृदय की बात कह दी है-

बचपन में सपने में देखी हुई परी ने
सहज ही मेरे घर में बेटी बनकर जन्म लिया है।
वह काँटों से रहित फुलवाड़ी है
चिड़ियों की चहचहाहट है
बिना पतझड़ का बसन्त है
सुगन्ध का अनन्त सागर है

मेरी प्यारी बेटी,

जाने दे इन बातों को

ये तो बौने से शब्द हैं

स्नेह के शिखर तो बहुत ऊँचे होते हैं।

उस कविता में कहा है-

कागळना कटकामां केम करी चीतरवी
रुदीयामां रणझणनी वात
कागळनी ते शी विसात ?

हम ऐसा करते हैं, तेरी नहीं, मेरी बात करते हैं।

बेटी के बाप की। गोरीसन किलोर ने बहुत सुन्दर बात कही है -

"बेटी के बाप की हालत अपहरण किए हुए धनाढ्य व्यक्ति जैसी होती है, वह अपने बेटों के प्रति कठोर चेहरा बना सकता है। उसे मार-पीट सकता है। उसे डांटकर भगा सकता है। **लेकिन जब बेटी उसके गले में बाँहें डालकर कहती है, 'पापा, मुझे आपसे एक बात पूछनी है।' उस समय उस पिता की हालत गरम कड़ाही में डाले हुए मक्खन जैसी हो जाती है।"**

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

देखो बेटा, मेरी मजबूरी को Misuse मत करना।

मेरी प्यारी बेटी,

दुनिया कहती है - जो इन्तजार करती है, वह माँ है। सच्ची बात है।

परन्तु इसके साथ ही एक दूसरा सत्य भी है -

जो इन्तजार कराती है, वह बेटी है।

Do you know - why ? Because

Daughter is a wondrous combinations of a mind, brain & heart.

Yes my dear,

That's my experience.

मेरी प्यारी बेटी,

तुझे पता है कि मनुष्य को सबसे अधिक दुःखी कौन कर सकता है?

कजियाखोर पड़ोसी? धन्धे का प्रतिद्वन्दी? कट्टर दुश्मन?

No my dear,

इनमें से कोई नहीं।

मनुष्य को सबसे अधिक दुःखी वही कर सकता है, जिसके ऊपर उसे सबसे अधिक प्रेम होता है।

जैसे मेरे लिए तुम।

I Don't say, कि तुमने मुझे दुःखी किया है, या करोगी।

This is the matter of the possibility.

यह तो एक सम्भावना है!

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तुम अभी भी उधेड़बुन में हो कि यह कैसे हो सकता है?

I tell you. तुम मुझे कैसे दुःखी कर सकती हो?

तुम कोई ऐसा काम करो, जिससे तुम दुःखी हो जाओ,

तो Sure, मैं तुमसे हजारगुणा दुःखी हो जाऊँगा।

कारण कि **मुझे तुम्हारे ऊपर बहुत प्यार है।**

अपने आप से भी ज्यादा। बहुत ज्यादा।

मेरी प्यारी बेटी,

दुश्मन तो क्या दुःखी कर सकता है?

दुश्मन के सामने तो मनुष्य कठोर बन जाता है।

दुःखी तो वही कर सकता है, जो आँखों का तारा हो,

कलेजे का टुकड़ा हो।

आज मुझे तुमसे बहुत सारी ऐसी बातें करनी है,

जो तुम्हारे लाईफ के लिए बहुत इम्पोर्टेन्ट है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

D	**Why?**
I	**When?**
E	**What?**
T	**How?**

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

You know very well,

कि मैं तुम्हें जो कुछ भी कहूँगा, वह सत्य ही कहूँगा।

तेरे भले के लिए कहूँगा। मेरी बात मानोगी ना?

Well,

पहली बात है डायट की।

इसके चार बिन्दु हैं।

Why to eat?

When to eat?

What to eat?

How to eat?

1. Why ? To maintain our body & it's activities.

My dear,

यदि 'Why' clear है तो सबकुछ Clear है।

यदि 'Why' में गड़बड़ है तो सबकुछ गड़बड़ है।

जब Diet का Main purpose TASTE बन जाता है।

वहाँ 'Why' कुचल जाता है।

नीतिशास्त्र में कहा गया है –

इष्टमूलानि शोकानि – शोक की जड़ है पसन्द – Choice

रसमूलानि व्याधयः – रोग की जड़ है रस – Taste

लोभमूलानि पापानि – पापों की जड़ है लोभ – Greed

त्रीणि त्यक्त्वा सुखी भव – इन तीनों को छोड़ दे और सुखी हो जा।

छगन एक बार बीमार पड़ गया। डॉक्टर के पास गया।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

डॉक्टर ने चेक-अप किया। दवा लिख दी।

छगन ने पूछा, "डॉक्टर साहब, खाने-पीने में...?"

डॉक्टर ने कहा, "सादी खुराक सबकुछ ले सकते हो।"

"और, डॉक्टर साहब खिचड़ी-कढ़ी जैसा?"

"हाँ, ले सकते हो।"

"और पौआ-उपमा ले सकता हूँ क्या?"

"बोला ना?सादी खुराक सबकुछ ले सकते हो।"

"और हाँ, डॉक्टर साहब, रोटी-सब्जी खा सकता हूँ?"

"हाँ, खा सकते हो।"

"और थोड़ा नींबु-पानी, नमकीन आदि..."

"तुम्हें जो भी खाना हो खाओ, पर मेरा दिमाग मत खाओ।"

Do you know my dear,

कोई प्राणी जब बीमार पड़ता है, तो सबसे पहले क्या करता है?

खाना बन्द कर देता है। इससे वह जल्दी स्वस्थ हो जाता है ।

How smart ? No ?

इस सम्बन्ध में मनुष्य बहुत पीछे है।

वह जब बीमार पड़ता है तो उसके खाने-पीने की इच्छा और अधिक बढ़ जाती है।

योगशास्त्र में कहा गया है -

अजीर्णे भोजनत्यागी ।

अजीर्ण अर्थात् खाया हुआ भोजन नहीं पचा हो, ऐसी स्थिति। इस

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

स्थिति में भोजन नहीं करना चाहिए।

We are on 'Why ?'

यदि आहार लेने का Purpose देह निर्वाह ही है,

तो फिर जो आहार लेने में शरीर का नुकशान हो,

वह आहार कैसे लिया जा सकता है ?

करोड़ों लोग इस Stupidity के भोग बने हैं।

जिसका सीधा लाभ डॉक्टर्स, हॉस्पीटल्स और मेडीकल स्टोर्स को मिलता है।

2. When ?

नीतिवाक्यामृतम् में कहा गया है -

क्षुत्काल एव भोजनकालः ।

जब तुमको खूब भूख लगी हो, तभी खाओ।

जठराग्नि से भूख लगती है।

बिना आग के इन्धन डालो तो वह सड़ जाएगा।

बिना भूख के खाना भ्रष्टाचार है।

मनुष्य स्वाद के लिए भूख के बिना भी खाता है।

लेकिन उसे पता नहीं है कि

स्वाद का जितना सम्बन्ध भोजन के साथ है,

उससे अधिक सम्बन्ध भूख के साथ है।

महाभारत में कहा गया है -

सम्पन्नतरमेवान्नं दरिद्रा भुञ्जते सदा ।

क्षुत् स्वादुतां जनयति, सा चाऽऽढ्येषु सुदुर्लभा ।।

गरीब हमेशा सम्पन्नतायुक्त भोजन करता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

भूख स्वादिष्टता का निर्माण करता है।

और सम्पन्न व्यक्तियों के लिए भूख अत्यन्त दुर्लभ होती है।

Actualy,

जिस व्यक्ति को जोरों की भूख लगी हो, उसे टाटा-बिरला समझना चाहिए।

He is the actual rich.

यदि मनुष्य सुबह का नाश्ता छोड़ दे,

तो पुराना अधिक खुराक, जिसे आम कहा जाता है,

वह अच्छी तरह पाचन हो जाता है और सभी रोगों से बचा जा सकता है।

और दोपहर तक ताजी और सच्ची भूख लगती है।

उस स्थिति में मनुष्य जो भोजन लेता है,

वह बहुत ही स्वादिष्ट लगता है। अच्छी तरह पाचन हो जाता है।

शरीर के पाचक रस इस स्थिति में सक्रिय होते हैं।

परन्तु, हमारी वृत्ति ऐसी है, कि ऐसी सलाह यदि कोई डॉक्टर देगा, तो डॉक्टर को ही बदल दिया जाएगा।

Am I right my dear ?

यह तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम मुझे बदल नहीं सकती, इसीलिए कहता हूँ।

आयुर्वेद का एक विशेषज्ञ।

एक लाख श्लोकों का ग्रन्थ लेकर राजा के पास आया।

राजा को जानने में अभिरुचि तो थी, परन्तु उसके पास उतना समय नहीं था।

Just like us.

राजा ने कहा, "मुझे short में इसका सारांश बता दो।"

एक ही श्लोक में नहीं १/४ श्लोक में बस।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

विशेषज्ञ ने समय मांगा।

खूब मेहनत करके फिर राजा के पास उपस्थित हुआ।

और समस्त आयुर्वेद का सार बता दिया।

"जीर्णे भोजनमात्रेय:"

आत्रेय कहते हैं कि -

"भोजन तभी करना चाहिए, जब पहले किया गया भोजन का पाचन हो गया हो।"

'When' के सम्बन्ध में एक बात और -

आयुर्वेद में जठर को 'कमल' कहा गया है। नाभिकमल।

जैसे सूरज ऊपर चढ़ता है, तब कमल खिलता है

और जैसे सूरज ढलता है, तब कमल मुरझा जाता है।

हमारे पेट की स्थिति भी ऐसी ही है।

अत: मध्याह्न के समय हमें भरपेट भोजन करना चाहिए।

सुबह और शाम में बहुत कम। और रात को बिल्कुल नहीं।

अतो नक्तं न भोक्तव्यम् ।

आधुनिक मेडिकल साईन्स ने आयुर्वेद की इस मान्यता को अनेक प्रकार से समर्थन दिया है।

तन-मन-धन सब बिगाड़ देगा।

I suggest you a book 'रात को खाने से पहले।'

इस किताब से इस बारे में तुझे काफी ज्ञान मिल जाएगा।

3. What ?

हमारे यहाँ एक सुन्दर कहावत है -

ताजा खाए समय पर सोए
उसके रोग सिसककर रोए ।

'**ताजा**' यह एक ही शब्द

होटल, लारी, पैक-फुड, टीन-फुड, जंक-फूड, बोटल-फुड

सबके ऊपर प्रश्नचिह्न लगा देता है ।

छगन ने एक बार अपने फैमिली डॉक्टर से पूछा, "बाजार की मिठाई-नमकीन खाने में तो कोई आपत्ति नहीं है ना?"

डॉक्टर ने सरलता से जवाब दिया, 'नहीं, नहीं, वही तो हमारे जीवन का आधार है ।'

My dear, I ask you one question.

एक व्यक्ति तुम्हारा भोजन छीन लेता है ।

और दूसरा व्यक्ति तुम्हें बासी भोजन करा देता है ।

Who is worse of them ?

भूखे रहने से तो शायद पाचन के द्वारा तुम्हारा स्वास्थ्य उत्तम बन जाएगा ।

परन्तु बासी भोजन तो कितने सारे रोगों को आमंत्रण देगा ।

तन मन धन सब खराब कर देगा ।

Do you know my dear ?

There are 5 types of the white poison

१.मैदा, २. नमक, ३. चीनी, ४. सोडा, ५. साइट्रिक एसिड

बाहर के खाने में इनमें से क्या नहीं होता है?

मेरी प्यारी बेटी,

पेट्रोल में गन्दगी रहती है तो गाड़ी हिचकोले खाने लगती है ।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

आहार में गन्दगी होती है, तो शरीर हिचकोले खाने लगता है।

बाजारू खाना अर्थात् सजी संवरी हुई गन्दगी।

एट्रेक्टिव प्रेजेन्टेशन, एडेड फ्लेवर्स, सुपर मार्केटिंग, होरिबल ट्रेड वॉर,रेइन औफ द एड्स... & the result... ब्रेन-वाश

Now you hate your mom's Bhakhari, No ?

U.S.A में मेक्डोनाल्ड बर्गर का Add करने में ५० करोड़ डॉलर खर्च करती है।

I ask why ?

जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं के sale में add की क्या जरूरत है?

But my dear,

यह बात तुम जितनी समझती हो, उतनी सरल नहीं है।

दुनिया का नैतिक पतन इस स्तर तक हो चुका है, कि वह पैसे के लिए ग्राहक के हेल्थ के साथ मजाक कर सकती है।

वह गेहूँ के साथ घुन (INSECT)को भी पीसकर तुम्हें ब्रेड-पाउ-बर्गर खिला सकती है।

वह मरा हुआ चूहा या छिपकली निकालकर आठ दिनों की बासी सब्जी तुम्हें परोस सकती है।

वह सात पैसे के रंगीन पानी में जंतुनाशक ज़हर डालकर तुम्हें सत्रह रुपये में बेच सकती है।

वह हानिकारक प्रिज़र्वेटिव्ज और कलर फ्लेवर्स Add करके तुम्हें केन्डी, चॉकलेट्स, केक्स आदि खिला सकती है।

My daughter,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तुम कई बार बची हुई सब्जी और रोटी लेकर सड़क पर जाती है,

गाय को, कुत्ते को, गरीब को दे देती है।

अपने घर में हम कल की बासी रसोई नहीं खाते हैं।

What do you think ?

Food business में भी कहीं ऐसा होता होगा?

Is it possible ?

खुराक के साथ जब व्यापार जुड़ जाता है।

तब तन्दुरुस्ती का कबाड़ा निकल जाता है।

Please, don't be fool.

तुम बीमार पड़ोगी, यह तो बाद की बात है।

तुम मूर्ख बनोगी, तभी से मुझे तुम्हारे ऊपर शरम आएगी।

I remember,

मैंने गुजराती में एक Health article पढ़ा था, उसका title था

बीमार पड़ना अपराध है और दवा ढकोसला है।

My dear,

तुम्हारे लिए दुनिया का श्रेष्ठ भोजन वही है, जो तुम्हारी मम्मी ने तुम्हारे लिए प्रेम से बनाया है।

हमारी संस्कृति ने भावना और विचार की शक्ति के विषय में बहुत कुछ कहा है।

मॉडर्न साईन्स भी इस सम्बन्ध में बहुत सारे सफल प्रयोग कर चुका है।

जब तुम कहती हो - बाहर का खाना 'अच्छा' होता है।

तब अच्छाई के कितने सारे मुद्दों को तुम Neglect करती हो, यह तुम्हें पता है?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कितने कर्मचारियों के निःश्वास, ऊब, दुःख और पीड़ा उसमें मिले होते हैं,

कितने जीवाणुओं के मुर्दे उसमें मिले होते हैं, Expiry date के सन्दर्भ में उसमें कितनी सारी अनियमितताएँ होती हैं।

जिसे Food की अपेक्षा Food poison कहना Better और correct होगा।

अगर वह अच्छा है, तो तुम 'खराब' किसको कहोगी?

Please think seriously - 'What?'

तीखा तला हुआ मसालेदार भोजन विचारों को तामसी बनाता है।

फिर वह व्यक्ति बात-बात में गुस्सा करता है।

सतत शंका-कुशंका करता है। छोटी-छोटी बातों में झगड़ पड़ता है।

अपराधी और संकुचित मनोवृत्ति का शिकार बनता है।

कंदमूल भी तामसी खुराक हैं।

हमारी संस्कृति में अत्यन्त कड़े शब्दों में उसका निषेध किया गया है।

पुराण में कहा गया है -

पुत्रमांसं वरं भुक्तं न तु मूलकभक्षणम्।

विविध प्रकार के कंदमूल खाना बेटे का मांस खाने से भी अधिक खराब है।

मेरी प्यारी बेटी, 'मांस' की बात ऐसी ही है, तो तुमको एक बात कह देता हूँ,

I know, Today you are pure veg. & you like it.

परन्तु कल का मुझे पता नही।

कोई पार्टी, किसी सहेली का आग्रह, कोई प्रलोभन...

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कुछ भी हो सकता है।

तुम मांस या अंडे से अपना पेट नहीं भरना।

यह मुरदों का दफनाने का कब्रिस्तान नहीं है।

मेरी बेटी,

May be, तुम्हारे सामने ऐसा Logic भी आएगा।

किसको क्या खाना है या नहीं खाना है, यह उसकी व्यक्तिगत बातें हैं।

इसमें किसी प्रकार का धार्मिक या सामाजिक बन्धन नहीं हो सकता है।

Well,

मनुष्य को इतना अधिक आहार स्वातन्त्र्य

और पशु-पक्षियों को जीने की भी आजादी नहीं?

Why? We battle for human-rights.

परन्तु वास्तव में तो Each living-being-rights होना चाहिए।

स्वास्थ्य और मानवता दोनों दृष्टिकोण से मांस-अंडे वर्जित हैं।

एक पुस्तक है -**स्मार्ट फुड,** इसमें इस बात को prove किया गया है।

You will like to read it.

My dear, शराब की बात करूँ उसके पहले एक घटना याद आती है।

फिल्म-स्टार राजकपूर की।

एक पार्टी में जादूगर के. लाल के साथ उसकी मुलाकात हुई।

उसने के. लाल को शराब का पैग ऑफर किया।

के. लाल ने इन्कार करते हुए कहा, "मैं नहीं पीता।"

राजकपूर ने आग्रह किया, "आज पीना पड़ेगा।"

बात बढ़ी। पार्टी के सारे लोग इकट्ठे हो गए।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

राजकपूर के लिए अब यह Prestige-issue बन गया।

उसने कहा, "मात्र मेरा मान रखने के लिए पी लो।"

के. लाल ने दृढ़ता और नम्रतापूर्वक इन्कार कर दिया।

अब राजकपूर ने अन्तिम दांव फेंका।

"आप यह पैग नहीं पियेंगे तो आपको मेरे पिता पृथ्वीराज कपूर की सौगन्ध है।"

के. लाल ने उसी नम्रतापूर्वक जवाब दिया।

"मैंने अपनी सात पीढ़ी की सौगन्ध लेकर शराब न पीने की प्रतिज्ञा ली है।"

सारे लोग अचम्भित हो गए।

शराब का गिलास छोड़कर राज कपूर ने के. लाल को गले लगा लिया।

My dear, I don't tell, कि तुम भी ऐसा ही करो।

I wish, तुम कभी भी ऐसी पार्टी में मत जाना।

तुम कभी ऐसे मित्रों की संगति मत करना।

जहाँ एक झटके में तुम्हारे संस्कारों का खून हो जाए।

मेरी प्यारी बेटी,

मनुष्य की सच्ची आत्मा तो उसके संस्कार ही होते हैं।

अगर संस्कारों का खून हो जाए, तो वास्तव में एक मुरदा ही बाकी रहता है।

शराब, तम्बाकू, सिगरेट, हुक्का तथा अन्य मादक पदार्थों ने आज तक करोड़ों लोगों के प्राण ले चुके हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

करोड़ों सुहागन नारियों को विधवा बना चुके हैं।

करोड़ों बालकों को अनाथ कर चुके हैं।

मेरी बेटी,

यदि तुमसे सम्भव हो, तो तुम कुछ ऐसा कर दिखाना कि नशे की इस गिरफ्त से यह दुनिया कुछ अंशों में भी मुक्त हो सके।

लेकिन यदि तुम स्वयं ही इस नशे की गिरफ्त में फँस गई तो मेरा सिर शर्म से झुक जाएगा।

तुम्हें अपने पापा का मस्तक गर्व से ऊँचा करना है या शरम से झुकाना है, यह तेरे हाथों में है।

I Know, drugs के प्रचार-प्रसार के लिए आज अनेक प्रकार के जाल बिछाए जाते हैं।

तम्बाकू से लेकर सेन्डविच और चॉकलेट तक की वस्तुओं में Drugs की मिलावट करके

मनुष्य को अनजाने में ही Drugs का आदी बना दिया जाता है।

बेटा, यह जिन्दगी ऐसी बेकार वस्तु के लिए फेंक देने जैसी चीज नहीं है।

तुम अपने मन को खूब दृढ़ और संयमित बनाना।

जीभ की गुलामी से तुम हमेशा मुक्त रहना।

One wrong step may give you a great fall.

Always Beware of it my daughter!

स्वीटू स्कूल में 7th standerd में पढ़ता था।

एक दिन वह घर पर था। तब उसके दोनों हाथ खिंचने लगे।

वह अचानक चीख मारने लगा। उसकी मम्मी घबरा गई।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

पड़ोसी इकट्ठे हो गए।

सबने देखा कि उसके हाथों की नसें सूज गई हैं।

स्वीटू बोलने लगा, "मुझे वह चॉकलेट दो। जल्दी मुझे..."

स्वीटू ने चॉकलेट का नाम बताया तो पड़ोसी का बेटा वह चॉकलेट लेकर आ गया।

स्वीटू ने चॉकलेट खायी, परन्तु आराम नहीं मिला।

उसने कहा, **"मेरे स्कूल के केन्टीन से वह चॉकलेट लेकर आओ।"**

लाया। चॉकलेट खाई। टेम्पररी रिलीफ हो गई।

एक चॉकलेट ने मासूम बालक की जिन्दगी बरबाद कर दी।

इसीलिए हमारी संस्कृति कहती है -**अज्ञातागमज्ञातम्** ।

अनजानी जगह से लाई गई वस्तु या अनजानी वस्तु कभी मत खाओ।

बेटा,

आज हमारे बुजुर्ग बालकों को खाने-पीने के विषय में अनेकों सलाह देते हैं।

टेलिविजन, एट्मोसफियर और मार्केटिंग

बालक का इस हद तक Brain Wash कर चुका है।

कि बालक को उसके हितचिन्तक दुश्मन जैसे लगते हैं।

मेरी बेटी,

तुम अपना जीवन बरबाद करो, यह भी मुझे अच्छा नहीं लगता है।

और हमारी टक-टक तुम्हें दुःखी करे, यह भी मुझे पसन्द नहीं।

मुझे तो पसन्द है समझदार बेटी।

स्वास्थ्य और संस्कारों से समृद्ध बेटी।

बेटा, जैसे बाहर का खाना हानिकारक है,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसी प्रकार घर का अयोग्य खाना भी हानिकारक है।

For Example

अति उष्ण : अधिक गरम भोजन शरीर में वायु का प्रकोप करता है, खांसी पैदा करता है। उससे खांसी, अम्लपित्त, रक्तपित्त, कमजोरी और अतिसार (दस्त) हो सकता है। कुछ लोगों को एकदम गरम चाय पीने की आदत होती है। ऐसी चाय दाँत और आँत दोनों को खराब करती है। दाँत के अधिकांश रोग बहुत गरम वस्तु खाने से होती है।

अति नमकीन : ऐसे भोजन से अतिसार, संग्रहणी और वीर्यपात का रोग होता है।

अति खट्टा : इससे आँत में घाव हो जाता है और वीर्यशक्ति पर असर पड़ता है।

अति आहार : कोई भी खुराक यदि बहुत अधिक लिया जाए, तो वह तन्दुरुस्ती का पहला दुश्मन बनता है। हमेशा भूख की अपेक्षा थोड़ा कम खाने से पाचन अच्छा होता है और स्वास्थ्य ठीक रहता है।

अति शीत : वायु का प्रकोप करता है।

(Ice-cream, cold-drinks etc.)

'What?' में आखिरी बात है सब्जी की।

शायद तुम कहोगी कि 'सब्जी' खानी तो अच्छी बात है।

Well, इस सन्दर्भ में एक मजे की बात है।

छगन बस में यात्रा कर रहा था।

उसकी बगल में एक Gentleman आकर बैठा।

छगन देख रहा था। एक तो गर्मी, और दोपहर का समय।

और उस महाशय ने शर्ट के ऊपर टाई चढ़ाकर ऊपर से कोट पहन रखा था।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

थोड़ी देर के बाद छगन से रहा नहीं गया।

उसने पूछा, "इतनी गर्मी में यह सूट?..."

उस Gentleman ने कहा, "इंग्लेण्ड में तो ठंडी है ना?..."

छगन समझ गया कि इसे समझाने से कोई फायदा नहीं है।

We are talking about vegitables.

विदेश में मांसाहार का प्रमाण बहुत अधिक है।

मांस मात्र कुछ जंगली प्राणियों का आहार है।

मानव शरीर की रचना शाकाहार प्राणियों के ही अनुरूप है।

इसीलिए विदेश के लोग मांसाहार के बहुत सारे दुष्परिणामों को भुगत रहे हैं।

अपचा से लेकर केन्सर तक।

अतः वहाँ के डॉक्टर्स तथा मेडीकल रीसर्च सेन्टर्स शाकाहार पर बहुत जोर देते हैं। उसके लाभ समझाते हैं।

वहाँ के लोगों को कब्ज का ट्रेफिक जाम होता है।

सब्जियों के द्वारा ही वह क्लीयर होता है।

हमें इसकी जरूरत नहीं है।

इसके विपरीत इससे हमारी आँतों पर बोझ बढ़ जाता है।

और पाचन क्रिया बिगड़ती है।

तीखी साग-सब्जी रक्त को दूषित करती है।

क्षार-पानीवाली सब्जी ज़ठर और आँत को बिगाड़ती है।

खट्टी सब्जियाँ-हाथ पैर के स्नायुओं में दर्द पैदा करती हैं।

सड़ी-गली सब्जियाँ स्वास्थ्य के लिए बहुत ही नुकशानदायक है।

परन्तु हमें विदेश के ऊपर बहुत विश्वास है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

शायद भगवान से भी अधिक।

इसीलिए हम आँखें बन्द कर उनके ऊपर भरोसा करते हैं।

और उसमें अपना गौरव समझते हैं।

और फिर बाद में दुःखी होते हैं।

इसलिए दोष की टोकरी दूसरों के सिर पर डालने का कारण ढूँढ लेते हैं।

महाभारत की एक घटना है – यक्षप्रश्न।

यक्ष युधिष्ठिर से प्रश्न करता है – कोऽरुक?

कौन निरोगी रहता है?

युधिष्ठिर उत्तर देते हैं –

हितभुक् – जो हितकारी भोजन लेता है।

मितभुक् – जो परिमित भोजन लेता है।

अशाक्भुक् – जो सब्जी नहीं खाता है।

इन तीन नियमों का पालन जो करता है, वही निरोगी रहता है।

चाणक्यनीति में कहा गया है – **शाकेन रोगा वर्धन्ते** ।

शाक से रोग बढ़ते हैं।

आश्चर्य की बात तो यह है कि ये सारी बातें अच्छी जगह पर अच्छे पानी से उपजाई हुई सब्जियों की है।

शहरों में नाले के दुर्गन्धयुक्त गन्दे पानी और गन्दगियों के द्वारा सब्जियाँ उगाई जाती हैं।

इन सब्जियों का असर जानने के लिए शायद नए सिरे से संशोधन करने की आवश्यकता है।

मेरी प्यारी बेटी,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तुमने सड़क पर काम करनेवाले या मकान बनानेवाले मजदूरों को देखा है?

उनके शरीर कितने मजबूत होते हैं!

उनका यह सौभाग्य है कि वे साग-सब्जी खरीदकर नहीं खा सकते हैं।

रोटी और उसके साथ चटनी या मिर्च... इसमें उनका पूरा भोजन आ गया।

मैं राजस्थान के मारवाड़ प्रदेश में गया था।

वहाँ के लोगों का शरीर हमारे शरीर की अपेक्षा तीन गुणा अधिक मजबूत होता है।

मोटी रोटी और छाश, यह उनका मुख्य आहार है।

या तो वे लोग सब्जी खाते ही नहीं हैं, या मात्र चटनी की तरह सब्जी खाते हैं।

मैंने मार्क किया उन लोगों में चश्मावाले लोगों का प्रमाण बहुत ही कम है।

मुझे तुरन्त ही **नीतिवाक्यामृतम्** का एक सूत्र याद आ गया-

सर्वे शाका दृष्टिहराः ।

सारी सब्जियाँ आँखों की रोशनी को कम कर देती हैं।

My dear,

यह दुनिया शायद सुनी हुई बातें करती हैं।

परन्तु मैं तुमको आँखों देखी कह रहा हूँ।

आधुनिक विज्ञान रोगों की जड़ पकड़ लेता है।

इतने में तो लोग उस रोग का भोग बन जाते हैं।

हेल्थ तथा स्ट्रेन्थ दोनों दृष्टि से सब्जी अच्छी नहीं है।

शाकेन वर्धते मलम् ।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

सब्जी से मल बढ़ता है।

खरीदने का खर्च, बनाने का श्रम, आँतों का परिश्रम और मल का उत्पादन

This is the shok-story

4 - How ?

किसीने बहुत अच्छी बात कही है।

Eat water, drink food.

पानी इतना धीरे-धीरे पियो, मानो उसे चबा रहे हो।

भोजन इतना चबाकर खाओ कि जब इसे गले से नीचे उतारो तो वह प्रवाही बन जाए।

बेटा,

पेट में दाँत नहीं होते हैं।

दाँत यदि अपना काम पूरी तरह न करे, तो एक दिन पेट जवाब दे देगा।

टी.वी. देखते हुए, मोबाईल या लेपटॉप चलाते हुए रीडिंग करते हुए खाना, यह अपने ही हाथों से अपना पाचनतन्त्र डिस्टर्ब करने का रास्ता है।

तुम्हारा मन कहीं और है और तुम कोई और काम कर रहे हो, तो उस काम में भूलें होंगी ही।

मेरी प्यारी बेटी,

That's possible कि तुम्हारा Interest देखकर मैं या तुम्हारी मम्मी तुम्हें नहीं रोकेंगे।

दादा या दादी तुझे रोकें तो भी तू रुकनेवाली नहीं है।

But, **जब तुम्हारी Body ही तुम्हारे oppose में होगी।**

तब तुम क्या करोगी

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

Be wise my daughter.

एक समय में एक ही काम। How? के बहुत सारे factors हैं।

खुले में नहीं खाना : आकाश से सूक्ष्म जीवाणु, रजकण आदि गिरते ही रहते हैं। लेकिन चील जैसा पक्षी साँप को पकड़कर ले जा रहा हो, उस साँप का विष नीचे गिर रहा हो और भोजन में Mix होकर उस विष ने किसीके प्राण ले लिए हों, ऐसी घटना भी घट चुकी है।

शरीर को टिकाकर नहीं खाना : पाचनतन्त्र की सक्रियता के लिए यह जरूरी है। आज टेबल-कुरसी का प्रचलन बढ़ा है। वैसे ही रोग भी बढ़े हैं। स्वस्थचित्त होकर, पालथी मारकर सीधा बैठकर शान्तचित्त से भोजन करना उत्तम आरोग्य के लिए बहुत ही उपयोगी है।

शरीर और वस्त्र की शुद्धतापूर्वक भोजन करना : हाथ-पाँव गन्दे हों, वस्त्र मैले हों, ऐसी स्थिति में भोजन करने से स्वास्थ्य बिगड़ता है।

मौन होकर भोजन करना : बोलते समय हमारे शरीर की वायु उर्ध्वगति करती है और भोजन करते समय नीचे की ओर गति करती है। अतः भोजन करते समय बोलने से आहार ठीक से अन्दर नहीं जाता है। खांसी आने लगती है और पाचन क्रिया बिगड़ती है। कोई खाते-खाते बोलता हो, वह देखना और सुनना भी बेहुदा सा लगता है।

One more reason,

शब्द ज्ञान है। जूठे मुँह बोलने से ज्ञान का अपमान होता है।

अतः हमारी संस्कृति में कहा गया है -

भुञ्जते केवलं पापं, यो न मौनेन भुञ्जते ।

जो मौनपूर्वक भोजन नहीं करता है, वह पाप ही खा रहा है।

माता-पिता आदि को खिलाकर खाना : माता, पिता, बालक, गर्भवती

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

स्त्री, वृद्ध और रोगी, इन्हें खिलाने के बाद ही भोजन करना चाहिए। भोजन करने से पहले हमें आश्रित, नौकर-चाकर तथा हमारे द्वारा पाले हुए पशु-पक्षियों ने खाया है या नहीं, यह भी देखना चाहिए।

धूप में बैठकर नहीं खाना : सूर्य की सीधी किरणों में बैठकर खाना स्वास्थ्य और नीतियों के विरुद्ध है।

अन्धेरे में नहीं खाना : भोजन ठीक से दिखाई न दे, ऐसे में खाना, यह जीवदया का त्याग है और स्वास्थ्य का सत्यानाश है।

वृक्ष के नीचे बैठकर नहीं खाना : वृक्ष में जीव-जन्तु से लेकर साँप तक रहते हैं। ऊपर डालियों पर बैठे पक्षियों की गन्दगी भी थाली में पड़ सकती है। अतः वृक्ष के नीचे बैठकर नहीं खाना चाहिए।

निर्वस्त्र होकर नहीं खाना : इस दशा में स्नान करना भी उचित नहीं है। इस स्थिति से वीर्यशक्ति को नुकशान पहुँचता है। मन क्षुब्ध होता है, एकाग्रता, स्मरणशक्ति तथा बुद्धि घटती है। अतः हमारी संस्कृति में ऐसा कहा गया है कि स्नान करते समय भी आंशिक वस्त्र भी अवश्य पहनना चाहिए। निर्वस्त्र दशा में एक विशेष प्रकार का शारीरिक और मानसिक परिवर्तन होता है, अतः इस दशा में किया गया भोजन ठीक से पाचन नहीं होता।

गीले कपड़े पहनकर नहीं खाना : गीले वस्त्र रक्तसंचार तथा शारीरिक धातुओं पर विशेष प्रभाव डालता है। अतः उस समय शरीर भोजन करने के योग्य नहीं होता है।

अत्यन्त आसक्तिपूर्वक भोजन नहीं करना : रुचिपूर्वक खाना और पागल बनकर खाना, इन दोनों में अन्तर है। स्वाद की लोलुपता मन की स्वस्थता को नष्ट करती है। भोजन का प्रमाण भी सीमित नहीं रहने देती है। परिणाम... अजीर्ण और रोग।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

चप्पल आदि पहनकर नहीं खाना : नंगे पाँव भोजन करना सुपाचन के लिए जरूरी है।

व्यग्र मन से नहीं खाना : टी.वी. आदि देखते हुए, घबराहट में, गुस्से में अथवा विचारों के घमासान में खाने से भोजन ठीक से पाचन नहीं होता है।

खुली जमीन पर बैठकर नहीं खाना : बाजोठ या आसन पर बैठकर खाना चाहिए, जिससे शरीर की ऊर्जा टिकी रहती है और जठराग्नि मन्द नहीं होती है।

पलंग आदि पर बैठकर नहीं खाना : भोजन करते समय शरीर की जो स्थिति होनी चाहिए, वह पलंग पर संभव नहीं है।

खाना को दुबारा गरम करके नहीं खाना : ताजा भोजन करो और ४ घन्टे के बाद खाने को दुबारा गरम करके खाओ, दोनों में वही अन्तर है, जितना अन्तर एक लाख रुपये और चार आने में है।

परमात्मा का स्मरण करके भोजन करना : परमात्मा का स्मरण करने से मन शान्त और प्रसन्न रहता है। परिणामस्वरूप पाचनतन्त्र व्यवस्थित हो जाता है।

जब दाहिनी नाक से सांस चल रही हो, तभी खाना : बांई नाक को बन्द करके दो-चार गहरी सांस लेने से दाहिनी नाड़ी शुरु हो जाती है, जिसे सूर्य नाड़ी कहा जाता है। योग्य पाचनक्रिया के लिए भोजन करते समय सूर्य नाड़ी का चलना उपयोगी सिद्ध होता है।

क्रमपूर्वक खाना : भोजन में मीठी या घीवाली वस्तुएँ सर्वप्रथम खानी चाहिए, नमकीन, या तरल वस्तु हो, उसे बीच में खाना चाहिए, तीखी और कड़ुवी वस्तु सबसे अन्त में खाना चाहिए।

जलपान योग्य समय पर ही करना : भोजन के आरम्भ में यदि पानी पिया जाए तो जठराग्नि मन्द हो जाती है, डाईजेस्टिंग पावर घट जाता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

भोजन के बीच में यदि पानी पिया जाए तो वह अमृत के समान होता है तथा भोजन के अन्त में यदि पानी पिया जाए तो वह विष के समान होता है। अतः भोजन के पहले या बाद में पानी नहीं पीना चाहिए।

भोजन के बाद कुछ समय तक

शरीर को दबाना, भार उठाना, बैठना, दौड़ना या स्नान करना, इनमें से कुछ भी नहीं करना चाहिए।

इस विषय में एक बहुत सुन्दर श्लोक है –

भुक्त्वोपविशतः तुन्दं : जमीन पर बैठे तो पेट बढ़ता है।

बलमुत्तानशायिनः : चित्त होकर सोए तो बल बढ़ता है।

आयुर्वामशयस्याथ : बांई करवट सोए तो आयु बढ़ती है।

मृत्युर्धावति धावतः : दौड़े तो मृत्यु दौड़ती हुई आए।

भोजन करने के बाद दो घड़ी (४८ मिनट) तक बांई करवट सोना चाहिए।

यहाँ सोने का अर्थ नींद में सोना नहीं है,

बल्कि जगे हुए रहकर लेटने की बात है।

तन्दुलवैचारिक आगम में कहा गया है –

वामे पासे सुहपरिणामे पण्णत्ते बांई करवट सुख देती है।

दाहिणे पासे दुरपरिणामे पण्णत्ते दाहिनी करवट दुःख देती है।

सोने की जगह १०० कदम चला भी जा सकता है।

मेरी प्यारी बेटी,

This is the right diet, This is the food science.

तुम्हारे पापा की एक छोटी सी भेंट सम्भालकर रखोगी ना ?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

Make-up

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बेटा, आजकल मैं देख रहा हूँ कि अपनी पर्सनालिटी–आउटलुक के ऊपर तुम बहुत ध्यान दे रही हो ।

बाथरुम में पहले तो एक ही साबुन रहता था, अब लिक्विड शॉप, शैम्पू, कन्डीशनर इत्यादि की ढेर लगी रहती है ।

आईने के पास तुम्हारा मेक–अप बॉक्स, स्कीन केयर और परफ्युम तो होता ही है ।

लेकिन इन सबका उपयोग कर लेने के बाद भी आईने के सामने तुम काफी समय व्यतीत करती हो ।

शरम मत कर बेटा,

मैं तुम्हारा मजाक नहीं उड़ा रहा हूँ, और तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, यह भी नहीं कहता हूँ ।

यह तो तुम्हारी इस उम्र का तकाजा है ।

इस उम्र में सुन्दर दिखने की चाहत सबको होती है ।

मैं तो तुम्हें यह कहना चाहता हूँ कि **सुन्दर दिखने का क्या अर्थ है?**

तुम्हारी कोई सहेली इतनी खूबसूरत हो, जो फिल्मी एक्ट्रेस को भी टक्कर मारे, परन्तु उसका Nature एकदम बेकार हो ।

सबकी बुराई, निन्दा–चुगली करने का उसका शोक हो,

छोटी–छोटी बात पर भी उसे गुस्सा आ जाता हो,

गुस्से में वह क्या बोल रही है, इसका पता भी उसे न हो ।

वह इतनी कंजूस हो कि किसी के लिए एक रुपये भी खर्च न करे ।

तो क्या उसे तुम पसन्द करोगी? उसे तुम अच्छा कहोगी?

नहीं ना?

बस, तुम समझ गई हो कि 'अच्छा' किसे कहते हैं?

वास्तविक सौन्दर्य तो सद्गुण है।

सद्गुणों से रहित बाह्य सौन्दर्य अत्यन्त कुरूप बन जाता है।

तुम्हारी ही बात करूँ तो

तुम हँसती, गाती, किसीकी मदद करती हुई अच्छी लगती हो।

परन्तु जब तुम गुस्से में होती हो तो, दलील करती हो या पाँव पटककर ऊँची आवाज में बोलती हो

तब तुम बिल्कुल अच्छी नहीं लगती हो।

मेरी प्यारी बेटी,

यह मात्र तुम्हारी बात नहीं है, बल्कि सबकी बात है।

मनुष्य जब गुस्से में होता है,

तब वह अपना चेहरा आईने में देख ले।

तो वह जरूर शर्मा जाएगा।

मनुष्य मेक-अप के अभाव में कुरूप नहीं लगता,

बल्कि सद्गुणों के अभाव में कुरूप लगता है।

इसीलिए,

'अच्छा' या 'सुन्दर' बनने के लिए ब्युटीपार्लर की नहीं, बल्कि सद्गुण पार्लर की आवश्यकता है।

हमारे देश की लाखों वर्षों की संस्कृति में माता, पिता और गुरु यह कार्य करते आ रहे हैं।

अपने आन्तरिक सौन्दर्य को सोलह कलाओं से विकसित करने का कार्य।

आवश्यकता बस इतनी सी है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

हमें वास्तव में किसकी आवश्यकता है

यह हमारी समझ में आ जाए।

I don't say

कि बाह्य सौन्दर्य में तुम इतनी लापरवाह बन जाओ, कि एक भी सौन्दर्य प्रसाधन का उपयोग न करो।

मेरी बात तो मात्र इतनी सी है, कि हमारे लिए अधिक महत्त्वपूर्ण तथा अधिक ध्यान देने योग्य कौन सी वस्तु है

वह वस्तु बिल्कुल भुला दी जाती है।

और बिल्कुल तुच्छ वस्तु सर्वेसर्वा बन जाती है।

और तब हम जिन्दगी को दांव पर लगा देते हैं।

वास्तव में तब हम मूर्ख बनते हैं।

My dear,

इस विषय में एक खास बात है कि कभी भी किसी खास त्योहार या किसी खास प्रसंग पर अगर तुम मेक-अप करो तो उसका मेटेरीयल नेचुरल होना चाहिए। इस बात का खास ध्यान रखना।

Natural means जिसका सोर्स वनस्पति इत्यादि हो।

पशु-पक्षी इत्यादि नहीं।

मेरी प्यारी बेटी,

शायद तुम्हें पता नहीं होगा कि व्हेल मछली को मारकर, उसे पीसकर लिपस्टिक बनाई जाती है।

उसका प्रयोग बन्दरों के ऊपर किया जाता है।

इस प्रयोग में वह तड़प-तड़प कर मर जाता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

चेहरे पर लगाए जानेवाले लोशन वगैरह में बन्दर की आँख और बन्दर के हृदय को पीसकर डाला जाता है। उसमें कछुए का तेल भी डाला जाता है।

सेन्ट्स, परफ्युम्स तथा डीओडोरेन्ट बनाने के लिए हिरण, कस्तूरीमृग, भालू आदि की निर्मम हत्या की जाती है।

शैम्पू अन्डे से बनता है।

उसका प्रयोग करने के लिए खरगोश के ऊपर भयंकर अत्याचार किया जाता है।

इस प्रयोग में खरगोश अन्धा हो जाता है और मर जाता है।

सुअरों को आग में जीते-जी जलाकर उसके बाल से **मेक-अप-ब्रश** बनाया जाता है।

बेटा,

मैंने वे फोटो देखे हैं।

देखे हैं, की जगह मैं यूँ कहूँ तो बेहतर होगा कि वे फोटो मुझसे देखे नहीं गए।

उस दिन मैं ठीक से खाना नहीं खा पाया।

मुझे पता है कि इस प्रोडक्ट्स के प्रोडक्शन तथा रिसर्च की फिल्म भी आती हैं।

जिसके हृदय में थोड़ी सी भी मनुष्यता होगी, वह यह फिल्म देखने के बाद उस प्रोडक्ट्स को युज करने का विचार भी नहीं करेगा।

मेरी प्यारी बेटी,

दूसरे को पीडा देकर... दूसरे को रुलाकर...

दूसरे को सिसका-सिसकाकर मारकर

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

स्वयं को सुन्दर दिखाने की वृत्ति कभी मनुष्य की हो सकती है क्या?

यह तो अमानवीय अपराध है।

यह तो कोई डाकिनी या राक्षसी ही कर सकती है, ऐसा काम है।

मेरी बेटी,

तुम सपने में भी ऐसी नहीं बनना।

तुमको तो देवी बनना है। दया और करुणा की देवी।

Itself beauty. Natural beauty.

I tell you a logic

एक लड़की ने शैम्पू का उपयोग किया है।

सुन्दर हेयर स्टाईल करके वह किसी विवाह-प्रसंग में गई है।

उसके साथ फूल साईज़ का एक बड़ा एलबम है।

उसमें उस शैम्पू का प्रोडक्शन आदि बतलाया गया है।

पॉल्ट्रीफॉर्म में मुर्गियों की चोंच और उसके पंख किस क्रूरता से काट डाले गए हैं।

किस प्रकार एक-एक पिंजरे में तीन-तीन, चार-चार मुर्गियों को बेरहमी से ठूँस दिया गया है।

किस प्रकार उन्हें कृत्रिम प्रकाश से कष्ट दिया गया,

किस प्रकार उन्हें कचरा जैसा हानिकारक आहार दिया गया।

किस प्रकार उन नर-मादा पक्षियों को अलग रखा गया।

किस प्रकार उन्हें हानिकारक इन्जेक्शन दिया गया।

किस प्रकार उन्हें दिन-रात उन्हीं की विष्टा में रखा गया।

और वही विष्टा खाने के लिए मजबूर किया गया।

किस प्रकार उन्हें कृत्रिम प्रसूति करा-कराकर अंडों का उत्पादन किया गया।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

किस प्रकार उनकी फर्टिलिटी पूरी हो जाने के बाद

उनकी क्रूर हत्या कर दी गई।

अण्डा, जिसे पक्षियों का गर्भ कहा जाता है।

उससे किस प्रकार शैम्पू बनाया गया।

किस प्रकार खरगोशों को पकड़कर लाया गया।

किस प्रकार उन्हें मशीनों में फिट कर दिया गया।

वे अपनी आँखें बन्द न कर दे, इसलिए किस प्रकार उनकी पलकों को 'लिटरली' सी दिया गया।

किस प्रकार शैम्पू को उनकी आँखों में टेस्टिंग करते-करते उस असह्य वेदना को भोगकर वे कैसे अन्धे हो गए।

किस प्रकार उन्हें मारकर रैबिट चिकन के रूप में होटलों में सर्व किया गया।

कुत्ते जैसे प्राणियों का भोजन बना दिया गया।

ये सारे प्रॉसीजर उस एलबम में प्रत्यक्ष बतलाया गया है।

वह लड़की अपने चारों ओर खड़े लोगों को वह सब दिखा रही है।

और कहती है - इस शैम्पू का मैंने उपयोग किया है।

Tell me my daughter,

What will people feel for her?

क्या लोगों के दिल में इसके लिए सम्मान होगा?

या फिर नफरत होगी? उसे देखना कौन पसन्द करेगा?

एलबम की बात तो जाने दो।

जो क्रूरता मुर्गियो पर, अण्डों पर या खरगोशों पर की गई,

उसी क्रूरता का भाव यदि उसके चेहरे पर होगा,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

अथवा उसकी वाणी या व्यवहार में उस क्रूरता का भाव होगा,

तो क्या वह किसीको 'अच्छी' लगेगी?

This is the fact.

प्रत्यक्ष में उसका सौन्दर्य,.. उसका प्रेमपूर्ण स्मित.. प्रस्तुत की जानेवाली उसकी आत्मीयता। ये सभी छल हैं, प्रपंच हैं।

सौ बालकों का खून करके आया हुआ गुंडा एक सौ एकवें बालक को प्रेम से चुम्बन करता हो, ऐसा यह नाटक है।

मेरी प्यारी बच्ची,

जब इसका पर्दाफाश होगा, तो दुनिया जिन हीरोइनों तथा मॉडेलों के पीछे दौड़ रही है,

उनके ऊपर थूकेगी भी नहीं।

This is clearly dual character

बेटा,

तुम निश्चय कर लो कि तुम्हें क्या बनना है?

तुम्हें Transparency पसन्द है ना?

प्रेम और करुणा तुम्हें पसन्द है ना?

तो तुम Totally ऐसी ही बनो।

सारे चेहरे पर Non veg. लगाकर Veg. dish खानेवाला व्यक्ति दुनिया को बाद में ठगता है, पहले तो वह खुद ही मूर्ख बनता है।

विदेश में मात्र फूड प्रोडक्ट्स पर ही नहीं, बल्कि अन्य प्रोडक्ट्स पर Suitable/not-suitable for vegetarians

यह सूचना लिखना कम्पलसरी होता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

हमारे यहाँ ऐसा नहीं है।

जो सूचना होती है, वह भी सही होती हो, यह जरूरी नहीं है।

बहुत सी सजीव वस्तुओं को भी हमारे यहाँ निर्जीव माना जाता है।

शुद्ध उत्पादन के ऊपर भी अत्याचारी रिसर्च हुआ होगा।

वह पता नहीं चलता।

कोडवर्ड्स का युज़ करके कन्टेन्ट्स में हमें सरेआम उल्लू बनाया जाता है।

मेरी प्यारी बेटी,

खाने में या सौन्दर्य प्रसाधनों में जितनी घर की वस्तुएँ होंगी, उसमें हमारे सद्गुणों की रक्षा है।

इसके अतिरिक्त 'हत्यारा' बनने से भी नहीं बच सकते।

ऐसा ऑलमोस्ट एटमोस्फेयर है।

Do you know my dear ?

Lux जैसे साबुन की Add में जो सेलिब्रिटीज़ दिखाई देती है। वह कभी Lux से नहीं नहाती है।

They live on the skin.

They are the most conscious for it.

They know very well,

Most soaps are not good for the skin.

इसलिए वह साबुन की जगह हल्दी आदि का उपयोग करती है।

Why are you laughing ? I'm not joking,

तुम स्वयं इस बात की जाँच कर सकती हो।

परन्तु Lux वालों ने लाखों रुपयों से उसका मुँह बन्द कर दिया होता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इसलिए उसके पास तुम्हारे सवालों का सही जवाब नहीं मिल सकता है।

This is also a fraud.

मेरी बेटी, तुम तो समझदार हो ना?

तो इस बात को अच्छी तरह से समझ लो

Soap etc. is not for skin & not for beauty,

But for business, Just to earn money.

मेरे मन में कई बार ऐसे विचार आते हैं।

कि **मेरी पौत्री की पौत्री बिल्कुल इसी तरह जिएगी,**

जिस तरह मेरी दादी की दादी जीती थी।

शायद तबतक इस सबका पर्दाफाश हो जाएगा।

और एक चक्र पूरा हो जाएगा।

लेकिन तुम्हारा क्या होगा बेटा? यदि तुम चाहो तो आज भी बच सकती हो।

तुम भोजन के विषय में Health-care के Purpose से या सौन्दर्य के विषय में Skin-care के purpose से भी बच सकती हो।

परन्तु मुझे तुम्हारे ऊपर उस समय गर्व होगा, जब तुम प्रेम और करुणा के Issue पर बचोगी।

मेरी प्यारी बेटी,

वैसे देखा जाए तो बचने की बात तो एक ही है, लेकिन इसमें जमीन और आसमान का अन्तर है।

बेटा,

Now I come to the third point of view.

I don’t know

तुम्हें पता है या नहीं,

परन्तु कॉलेज में पढ़नेवाली लड़कियों को घर से कॉलेज की फीस, तथा पुस्तकें खरीदने के लिए पैसे मिलते हैं।

बस-ट्रेन का किराया अथवा पेट्रोल के पैसे मिलते हैं।

परन्तु मँहगे परफ्युम्स और मेक-अप के पैसे देना उनके पिता के लिए असम्भव है।

उनमें से कुछ लड़कियों ने ये खर्च निकालने के लिए रास्ते ढूँढ लिए हैं।

और वे रास्ते बिल्कुल गन्दे हैं।

I think you can understand.

कुछ लड़कियों की वृत्ति ऐसी है, कि मेक-अप करना है लड़कों को इम्प्रेस करने के लिए, लड़कों को इम्प्रेस करने है दुराचार करने के लिए,

और दुराचार करना है मेक-अप आदि के बजट के लिए,

है ना दिमाग घुमा देनेवाली दास्तान।

बेटा,

मुझे पता है

यह सब सुनने के बाद तुम्हें उनके ऊपर घृणा हो आई है।

My points is this.

जीवन में किसी भी वस्तु की ऐसी आवश्यकता नहीं होने देनी है कि वह वस्तु हमारे ऊपर राज करे और हमें अपने Principals तोड़ने के लिए मजबूर कर दे

हमें Boundries cross करने के लिए लाचार कर दे।

और हमें अपने Character से पतित कर दे।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मेरी प्यारी बेटी,

चरित्र ही हमारी आत्मा है। That's our self

उसका खून करके जो सुख मिलता है,

वह वास्तव में मुर्दे पर किया गया शृंगार है.

Which is actually meaningless or horrible.

Always beware of it.

बेटा,

हमारी संस्कृति में तो जो स्त्री बहुत खूबसूरत होती थी

वह अपने शील की रक्षा के लिए अपनी पीठ पर एक पोटली बाँधती थी,

जिससे देखनेवाले को ऐसा लगता था कि वह कुब्जा (कुबड़ी) है।

हमारे यहाँ प्रत्येक स्त्री लज्जा का पालन करती थी,

वह बन्धन नहीं, बल्कि सुरक्षा थी।

आज वेस्टर्न कल्चर के अन्धे अनुकरण में लाज तो गई, माथा ढँकना भी गया।

कपड़े या तो संक्षिप्त होते गए या चुस्त होते गए।

परन्तु इस सारे रामायण में एक समान्तर घटना यह घटी कि जो-जो भाग खुले होते गए उन्हें सजाने और संवारने के झंझट बढ़ते गए।

आईने के सामने खड़े होने का समय बढ़ता गया।

हिसाब लगाकर देखा जाए तो पता चले कि हमारी इस छोटी सी जिन्दगी के अमूल्य वर्ष इस टीप-टॉप के पीछे बर्बाद होते जा रहे हैं।

छगन ने अखबार पढ़ते हुए अपनी पत्नी से कहा,

"अब ऐसा फोन आएगा, कि रिसीव करने के साथ ही एक दूसरे का चेहरा

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

भी दिखाई देगा।"

वाईफ कहती है : "तो फिर फोन करने से पहले मेक-अप करने के लिए दौड़ना पड़ेगा।"

लाख रुपये का प्रश्न यह है कि यह सब किसके लिए?

I mean, किसको दिखाने के लिए? सारे गाँव के लिए? सारे शहर के लिए? जिसका सौन्दर्य सारे शहर के लिए हो,

वह स्त्री हमारे यहाँ नगरवधू कहलाती है।

जिसका दूसरा अर्थ होता है - वेश्या।

एक कुलीन स्त्री का सौन्दर्य मात्र उसके पति के लिए होता है।

यह स्वाग्रह की बात नहीं है, बल्कि सहज बात है।

निर्मल प्रेम, सहज आत्मीयता तथा स्वस्थ दाम्पत्य की यह एक महत्त्वपूर्ण आधारशिला है।

जिसे गँवाकर आज लाखों घर टूटे हैं।

और लाखों कुंआरी कन्याओं की कीमत फूटी कौड़ी की भी नहीं रही।

मेरी प्यारी बेटी,

दुनिया क्या कर रही है, यह तुम दो मिनट के लिए भूल जाओ,

और न्यूट्रली विचार करो।

यह वेस्टर्न ड्रेस पहनकर, मेक-अप करके परफ्यूम छिड़ककर खूली सड़क पर स्वयं का प्रदर्शन करके कॉलेज के पाँच सौ/हजार लड़के टकटकी लगाकर देखे

पाँच-पच्चीस लड़कों के साथ खुली बात-चीत, मजाक-मस्ती करनेवाली लड़की हो, उसके चारित्र्य की भूमिका किस प्रकार की कही जा सकती है?

बेटा,

जो सबकी होती है, वह किसीकी नहीं होती है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

चकाचौंध और जीवन में बहुत अन्तर होता है।

छगन एक बार फिल्म सिटी में चला गया।

वैसे तो वॉचमैन उसे अन्दर नहीं जाने देता,

परन्तु कोई प्रेस-रिपोर्टर जा रहा था,

उसके साथ वह भी घुस गया।

रिपोर्टर एक एक्ट्रेस को मिला।

इन्टरव्यू प्रारम्भ हुआ।

छगन तीन फूट दूर से देखने लगा।

संवाद आरम्भ हुआ तभी एक्ट्रेस के पास एक व्यक्ति आया।

एक्ट्रेस ने कहा, "इनसे मिलिए, ये मेरे पति हैं।"

रिपोर्टर ने कहा, "तुम्हारे प्रत्येक पति से मिलकर बहुत खुशी होती है।"

अमेरिकन या युरोपियन लेडी

जो उसके चौथे पति की आठवीं पत्नी है।

उसके जीवन की यातनाओं को यदि तुम जान सको,

तो मेरी बात तुम्हारी समझ में अच्छी तरह आ सकती है।

हमारे यहाँ ऐसी स्थिति नहीं है।

परन्तु हम इस स्थिति की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

बेटा,

वहाँ की स्त्री सिगरेट, शराब और ड्रग्स की गिरफ्त में आ जाती है,

तरह-तरह के रोगों का शिकार बन जाती है।

और मनोचिकित्सक की सलाह लेने लगती है।,

यह सब नारी-स्वातन्त्र्य की कीमत है। बहुत ही भारी कीमत।

जिसके आखिरी हफ्तों में पागलपन और हृदयाघात भी हो सकता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

DRESS

मेरी प्यारी बेटी,

जो बात मेक-अप की है, वही बात ड्रेस की भी है।

अन्तर इतना ही है कि ड्रेस में यह मैटर अधिक सिरीयस होती है।

ऑल्टरनेक कपड़ा, छोटे स्कर्ट, बेली टॉप, लॉ-वेस्ट जीन्स... ये सभी हमारे मन में और दूसरों के मन में एक विशेष प्रकार के विचार उत्पन्न करते हैं।

थोड़ा अधिक स्पष्ट करूँ तो ये सभी हमारे ऊपर और दूसरों के ऊपर मानसिक जबरदस्ती करते हैं।

छोटे और चुस्त वस्त्रों के द्वारा अंगप्रदर्शन करके लोगों को उत्तेजित करने की यह मानसिकता पश्चिम की देन है।

बेटा,

मैं देख रहा हूँ।

कि आज की नई पीढ़ी पश्चिमी देशों का अनुकरण करते हुए शॉर्टकट रास्ते से आगे बढ़ने का मानसिक तनाव अनुभव कर रहे हैं।

अन्धा अनुकरण, अयोग्य पोशाक, अनिच्छनीय स्वतन्त्रता तथा लक्ष्मणरेखा का उल्लंघन ये सभी इस तनाव के परिणाम है।

मेरी प्यारी बेटी,

यौवन की दहलीज पर खड़ी बेटी

जब वेस्टर्न ड्रेस पहनकर घर के बाहर निकलती है,

तब उसके पिता किस व्यथा से गुजरते हैं,

इसका वह अंदाजा भी नहीं लगा सकती है।

I don't think,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

'यह व्यथा मोत जैसी होती है।'

मौत तो शायद उससे भी सस्ती होगी।

वह व्यथा उससे भी भयंकर होती है।

Dress-point पर माता-पिता के साथ संवाद करती हुई

जमाने का उदाहरण देती हुई,

'सब फ्रेन्ड्स' का बहाना बनाती हुई,

Fashion या Comforts के नाम पर बात को उड़ा देनेवाली लड़कियों को इस व्यथा का कोई अन्दाजा नहीं होता।

बेटा,

सिंह जैसा भी बाप हो,

वह विवाह मंडप में बेटी की विदाई के समय
बिल्कुल टूट जाता है।

ऐसे समय में सिसक-सिसककर रोते हुए पिताओं को मैंने अपनी आँखों से देखा है।

ऐसे अवसर पर एक पंक्ति याद आती है-

नाजों से तुझे पाला मैंने कलियों की तरह फूलों की तरह

बचपन में झुलाया है तुझको बाँहों ने मेरी झूलों की तरह

मेरी प्यारी बेटी,

मैंने ऐसे पिता को देखा है

जिसके पास बंगला है, गाड़ी है।

बेटी भी अच्छे घर में है।

प्रेमभरा परिवार है, स्वास्थ्य अच्छा है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

फिर भी वह दुःखी है।

कारण कि उसकी बेटी दुःखी है।

मेरे कहने का आशय यह है

कि बेटी के प्रति असीम स्नेह अनुभव करते हुए

तथा बेटी को केन्द्र में रखकर जीनेवाले पिता की व्यथा

बेटी की अपनी व्यथा नहीं बन जानी चाहिए।

You don’t know my dear.

माता-पिता सन्तान की बहुत सारी बातों में अपने मन को मना लेते हैं... कोम्प्रोमाईज़ कर लेते हैं।

परन्तु जो बात गम्भीर होती है,

जिस बात में कोम्प्रोमाईज़ करना बिल्कुल उचित नहीं होता है,

उस बात में यदि उन्हें कोम्प्रोमाईज़ करने के लिए जोर डाला जाए

तो उनके मन पर क्या बीतता होगा?

बेटा,

हम तुम्हारे दुश्मन नहीं हैं।

बल्कि तुम्हारे दुःख में दुःखी होनेवाले

तुम्हारे सुख की इच्छा करनेवाले

और तुम्हारे हित की बातें करनेवाले हैं।

जिस एक्ट्रेस, मॉडेल या फ्रेन्ड को देखकर

तुम ऐसा ड्रेस पहनना चाहती हो,

उनमें से कोई भी

तुम्हारे हित की जिम्मेदारी नहीं लेंगे।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तुम्हारा भविष्य, तुम्हारी सुरक्षा, तुम्हारा सुख

उसकी चिन्ता पल-पल

हमें सताती है, उन्हें नहीं,

बेटा,

हमने जमाना देखा है, और हम जमाने को देख भी रहे हैं,

टी.वी. और अखबारों में कैसे-कैसे समाचार आते हैं,

और हमारे आस-पास क्या हो रहा है,

इस बात की हमें पूरी जानकारी है।

इस स्थिति में तुम्हारा अनुचित पोशाक,

तुम्हारा अकेले बाहर जाना, या रात को घर से बाहर होना,

यह सब देखकर हम आधा मर जाते हैं।

तुम समझती हो ना? आधी मौत।

जिसमें मनुष्य मरता भी नहीं, और जीता भी नहीं।

मेरी प्यारी बेटी,

शायद हम तुम्हें ओर्थोडेक्स लगते होंगे,

आज कौन सा समय चल रहा है,

और हम कौन से समय की बात कर रहे हैं,

ऐसा लगता होगा, परन्तु यदि तुम सूक्ष्मदृष्टि से देखोगी, तो तुम्हें पता चलेगा

कि **पुराने समय में जिस मर्यादा की आवश्यकता थी,**

उसकी अपेक्षा सौ गुना मर्यादा की आवश्यकता आज है।

उस समय मनुष्य की कमजोर भावनाओं को उत्तेजित करनेवाला

ऐसा मीडियातन्त्र नहीं था।

टी.वी., सिनेमा, इन्टरनेट, मोबाईल... कुछ भी नहीं था।

आज का वातावरण बात-बात में

अच्छे-भले मनुष्य को उत्तेजित कर डालता है।

ऐसी स्थिति में यदि सौ गुनी मर्यादा का पालन किया जाए,

तो शायद बचा जा सकता है।

परन्तु आज की वास्तविकता यह है कि मर्यादा सौवें भाग से भी नीचे चली गई है।

You may ask, So what?

Indian Government crime beuro answers here.

इस देश में

प्रत्येक ४ मिनट पर स्त्री सम्बन्धी शारीरिक या मानसिक रूप से शोषण करने का एक अपराध होता है।

प्रत्येक १२ मिनट पर एक छेड़खानी का अपराध दर्ज होता है।

प्रत्येक २९ मिनट पर एक बलात्कार का अपराध दर्ज होता है।

प्रत्येक ५६ मिनट पर एक जातीय शोषण का अपराध दर्ज होता है।

प्रत्येक ७७ मिनट पर एक स्त्री की हत्या का अपराध दर्ज होता है।

मेरी प्यारी बेटी,

Mark this - **‘दर्ज होता है।’**

They don’t say - **‘होता है।’**

जबतक तुम यह पढ़ रही हो तबतक यह संख्या

और भी अधिक भयानक बन गई होगी।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

दर्ज किए गए केस बढ़े हैं।

और 90% केस तो दर्ज भी नहीं होते हैं।

समस्त विश्व में १५ से ४४ वर्ष की स्त्रियों की

जितनी मौतें होती हैं।

उनमें दुर्घटना या रोग के कारण बहुत कम होती हैं।

जातीय हिंसा के कारण अधिक होती हैं।

विकसित देश हो या विकासशील

स्त्री-शोषण हर जगह एक समान है।

स्त्री एक बार अपनी मर्यादा-कवच से बाहर निकली

बस सब समाप्त

शिकारी उसे अपना शिकार बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने

विश्व के १५ देशों की २९,००० स्त्रियों का सर्वे किया है।

उसके चौंकानेवाले तथ्य इस प्रकार थे-

75% स्त्रियों का शारीरिक,मानसिक और जातीय शोषण किया गया है।

20% स्त्रियों के ऊपर कम से कम एक बार बलात्कार का प्रयास किया गया।

70% से अधिक स्त्रियाँ छेड़खानी का शिकार बनी हैं।

मेरी प्यारी बेटी,

माता-पिता के लिए सिरदर्द बन जाए

इतनी अधिक आज़ादी हासिल करनेवाली आज की बेटियाँ

माता-पिता को सान्त्वना (!)देती हैं

कि 'मैं कोई भी ऐसा काम नहीं करूँगी, जिससे आपको लज्जित होना पड़े।'

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बेटा, 'प्रामाणिकतापूर्वक ऐसा वचन देने के बावजूद

इस वचन का पालन करना लगभग सम्भव नहीं होता है।'

फिर भी शायद सम्भव हो।

तो भी 'अपनी ओर से जानबूझकर लक्ष्मणरेखा पार नहीं की जाती।'

यही इसका अर्थ है।

Do you know my dear?

शहरों में कम से कम ५% युवतियाँ विकृत मानसिकता से पीड़ित पीछा करनेवाले लड़कों से परेशान हैं।

ऐसी स्थिति में क्या होगा?

हमारी संस्कृति में एक सचोट बात कही गई है -

इच्छमणिच्छे दोसा उ ।

स्त्री यदि उन वासनालोलुपों के वश में हो जाए, तो उसका चरित्र, उसका घर-संसार, उसकी सुख-शान्ति सबका सत्यानाश हो जाता है।

फोटो और वीडिओ की धमकियाँ उसे हमेशा के लिए आर्थिक और शारीरिक रूप से ब्लैकमेल करती रहती है।

और यदि वह स्त्री उसके वश में नहीं आती है,

तो वे शिकारी उसके ऊपर बलात्कार करते हैं।

शारीरिक हमला करते हैं, उसके ऊपर एसिड फेंकते हैं,

उसकी हत्या कर देते हैं।

कुछ नहीं तो उसे बदनाम कर देते हैं।

मेरी प्यारी बेटी,

मर्यादाकवच का कोई विकल्प नहीं है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कानून, दण्ड का प्रावधान, पुलिस, वीमेन हेल्पलाईन

ये सभी उसके सामने पंगु हैं।

अधिकांश केस तो दर्ज नहीं होते हैं।

यदि केस दर्ज भी होते हैं, तो अपराधी पकड़े नहीं जाते हैं।

यदि पकड़े जाते हैं तो आसानी से छूट जाते हैं।

कभी-कभी उन्हें छोटी-मोटी सजा हो भी जाती है।

लेकिन स्त्री का जो नुकसान होता है,

उसमें क्या फर्क पड़ता है?

मनुष्य शायद कुत्ते को मार भी डाले,

लेकिन उसने जो काटा है तो काटा ही है।

उसे मार डालने से क्या आपके शरीर का घाव भर जाएगा।

मेरी बेटी,

ऐसी घटनाओं में अपराधी का अपराध साबित नहीं हो पाता है।

जबकि स्त्री जब शिकायत करती है, तभी से अपराधी हो जाती है।

हर तरह से भुगतना तो स्त्री को ही पड़ता है।

This is the cost of the freedom.

बेटा,

दुनिया के रास्ते पर अन्धा बनकर दौड़ने के बदले

तुम यह विचार करो कि क्या यह Cost तुम्हें सस्ता पड़ता है?

I tell you the truth my daughter!

यह दुनिया तुम जितना समझती हो, उतनी अच्छी नहीं है।

यहाँ अच्छा व्यक्ति भी हमेशा के लिए अच्छा नहीं रह सकता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

निर्दोष मित्रता कब क्या मोड़ लेगी और जीवन में कैसे भूकम्प लाएगी, यह कहना मुश्किल है।

Dress जब अनुचित होता है, तब ऐसी सम्भावना अनेक गुना बढ़ जाती है।

That's but natural.

बेटा,

बदलते हुए समय के साथ अब मन्दिरों में सूचनाएँ लिखी मिलती हैं-

"यह धार्मिक स्थल है, यहाँ अभद्र वेश पहनकर न आएँ।"

What do you think over this?

क्या ये सूचनाएँ लिखी जानी उचित हैं?

मुझे तो बिल्कुल उचित नहीं लगता है।

Why in temples only?

रास्ते पर, मार्केट में, कॉलेज में या सार्वजनिक जगहों पर ऐसा अभद्र वेश चलेगा क्या?

वास्तविकता तो यह है कि अनुचित वेश का बहिष्कार घर से ही चालु होना चाहिए।

संस्कारी वेश की आवश्यकता जितनी बाहर है,

उतनी ही घर में है।

बेटा,

मेरा एक मित्र कुछ समय से बहुत उदास रहता था।

पिछले सप्ताह मैंने उससे आग्रहपूर्वक पूछा।

तो वह फूट-फूटकर रो पड़ा। मैं तो स्तब्ध रह गया।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मैंने धीरे-धीरे उसकी पीठ पर हाथ फेरा। उसके आँसू पोंछे।

उसे पानी पिलाया। और फिर उससे पूछा तो नहीं।

परन्तु उसने खुद ही दिल खोलकर सारी बात बता दी।

उसकी बेटी के वस्त्र ऐसे थे कि उसकी खुद की नजर उसके ऊपर बिगड़ने लगी थी।

बार-बार उसके मन में ऐसे विचार आते थे कि वह उसकी पत्नी होती तो अच्छा होता।

एक बार तो उसके मन में बेटी का बलात्कार करने की इच्छा हो गई थी।

बेटा,

पितृत्व की हत्या पिता की ही हत्या है।

आज की लाखों-करोड़ों बेटियाँ

जाने-अनजाने में यह हत्या कर रही है।

पिता हो, भाई हो, काका हो, मामा हो, या फिर देवर हो या ससुर हो, आखिर ये सभी पुरुष हैं।

पुरुषसुलभ वृत्तियाँ उनके अन्दर पड़ी होती हैं।

बस उसके अनुरूप निमित्त मिलने की देर है,

वे वृत्तियाँ जाग उठती हैं।

लड़कियों को छेड़नेवाले बदचलन लड़कों को

समझदार लोग कहते हैं

तुम्हारे घर में माँ-बहन है या नहीं?

भाई, तेरी कोई बहन है? +अच्छा

बेटा, तेरी कोई माँ है? +अच्छा

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

घर में तेरी बहू है? +अच्छा

लेकिन आज जब ऐसे समाचार छपते हैं,

कि 'सगे बाप ने बेटी के ऊपर...' 'सगे भाई ने बहन के ऊपर...'

निकट के सम्बन्धी ने.. तब उपर्युक्त प्रश्न व्यर्थ ही लगते हैं।

दिल को चीरकर एक प्रश्न बाहर निकलता है।

Why? आखिर क्यों ऐसा होता है?

एक प्राचीन प्राकृत कथा में दो ही शब्दों में इन प्रश्नों के उत्तर दे दिए गए हैं।

जुवइना वसुसंवुडंगी ।

कथा के प्रारम्भ में ही एक नगरी का वर्णन आता है।

अलग-अलग बिन्दुओं से अलग-अलग उपमाओं से उस नगरी का स्वरूप समझाते हुए लेखक लिखता है-

वह नगरी युवती के समान सुसंवृतांगी है।

जिस प्रकार युवती का शरीर सिर से लेकर पैर तक भलीभांति ढँका होता है।

उसी प्रकार वह नगरी भी

किले के द्वारा चारों ओर से अच्छी तरह आवृत्त (Covered) है।

बात तो नगरी की है,

परन्तु इसमें सहज नारीधर्म को अत्यन्त सरलता से समा लिया गया है।

Mark करने की बात यह है कि लेखक यह नहीं लिखता कि

युवती को अपने सम्पूर्ण शरीर को योग्य वस्त्रों से

अच्छी तरह से ढँककर रखना चाहिए।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

लेखक तो यह कह रहा है कि जिस प्रकार युवती, कोई भी युवती अच्छी तरह से ढँकी होती है,

वैसे ही उस Example से आप इस नगरी को भी समझें।

देखने में भी अच्छी नहीं लगे

वैसी वृद्धा के वस्त्र शायद कुछ अस्त-व्यस्त हो गए हों,

तो कोई बात नहीं, परन्तु युवती?

उसके कोई भी अंग यदि थोड़े से भी खुले हों, तो भयंकर जोखिम है।

बेटा, हमारी लाखों वर्षों की संस्कृति कहती है कि

युवती का पोशाक ऐसा होना चाहिए,

जो उसके सारे अंग को ढँककर रखे।

You may argue.

साड़ी में सारा शरीर नहीं ढँकता हो,

और किसी वेस्टर्न ड्रेस में ढँक जाता हो, तो?

But my daughter,

ढँकने का अर्थ तुमने अच्छी तरह से समझा नहीं।

जिसमें अंगों के बारे में अहसास तक न हो,

उसे ढँकना कहा जाता है।

वेस्टर्न ड्रेस का मतलब है कि वस्त्र के होते हुए निर्वस्त्र जैसा होना।

बेटा,

सभी खाने लगे तो भी ज़हर का असर दूर नहीं होता,

वह ज़हर ही रहता है। वह मृत्यु ही देता है।

भारतीय पोशाक में मर्यादा है,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

संस्कार है, सुशीलता है, शरम है

और स्वस्थ पारिवारिक जीवन है।

यौवन में मर्यादारहित पोशाक एक ही स्त्री को शोभा देता है,

और वह है वेश्या। उसे किसी प्रकार का जोखिम नहीं है।

कारण कि उसे कुछ भी गँवाना नहीं है।

क्योंकि उसके पास 'शील' जैसा कुछ है ही नहीं।

परन्तु वह हमें शोभा नहीं देता है।

हमें तो अपने खानदान की विरासत को सँभालना है।

किसी का अन्धा अनुकरण करने से पहले

तुम अपने हृदय से एक ही प्रश्न पूछना कि

क्या ये वस्त्र हमारी परम्परा को, हमारी संस्कृति को,

हमारे देश को तथा हमारे समाज को सुशोभित करते हैं?

मेरे कहने का आशय यह बिल्कुल नहीं है कि

वेस्टर्न सारी वस्तुएँ खराब हैं और इन्डियन सभी वस्तुएँ अच्छी हैं।

अच्छी-बुरी चीजें तो सब जगह रहनेवाली हैं।

पश्चिम से भी हमें कुछ वस्तुएँ सीखने योग्य हैं।

वह है उनका अनुशासन, उनकी नियमितता।

अपनी भाषा के प्रति उनका लगाव।

अपने देश के प्रति उनका प्रेम।

उसकी जगह हम उनसे यह सीखते हैं,

जिसने पश्चिम को डिप्रेशन में धकेल दिया है।

इन सारी बातों में पश्चिम का अनुकरण करके

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

हम गर्व का अनुभव करते हैं।

यह शायद हमारी सबसे बड़ी Tragedy है।

मेरी बेटी,

इस सम्बन्ध में मैं तुम्हें गुजराती भाषा की एक पुस्तक पढ़ने की राय देता हूँ–

'अमेरिका जाने से पहले'

वेस्टर्न कल्चर क्या है? और उसका रिज़ल्ट क्या है?

यह उस पुस्तक में To the point Clear किया गया है।

My daughter,

नया जमाना और सुधारवादी लोग

हमारी संस्कृति और परम्परा को बदनाम करते हैं।

इसे गाली देने में और इसे बदनाम करने में

उन्हें बहुत मजा आता है।

उनके हाथ इतने लम्बे हैं कि कॉलेज के पाठ्यपुस्तकों में भी उन्हें उसका ज़हर परोसा है।

शास्त्रों की और हितचिन्तकों की उपेक्षा करने की

उन्हें स्पष्ट सलाह दी गई है। वे एक मनोरंजक बात प्रस्तुत करते हैं।

"शास्त्रों के कोटेशन का क्या अर्थ है?

तुम्हारा अनुभव क्या कहता है? उसके ऊपर ध्यान दो।

तुम्हारी बुद्धि जिसे स्वीकार करती है, उसे अपनाओ।"

Very nice

लेकिन बेटी !

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

यह बात शास्त्र के अनुकरण में लगानी है ?

या फिर वेस्टर्न कल्चर के अनुकरण में लगानी है।

पश्चिम के लोगों में शरीर का तथा भौतिक आवश्यकताओं का

बहुत इम्पोर्टेन्स होता है।

एक वास्तविकता से शायद वे बिल्कुल अन्जान हैं

कि मात्र शरीर से नहीं जिया जा सकता है।

इसीलिए वहाँ १० में से ७ लोग

साइकियाट्रिस्ट के पास जाने लगे हैं।

हम उनके अनुकरण के उत्साह में बाहर की चमक-दमक, बाह्य सौन्दर्य और चकाचौंध में खो गए हैं।

इसीलिए आज की सिच्युएशन ऐसी है

कि टी.वी. की १० में से ८ विज्ञापन

देह-सौन्दर्य, स्वाद तथा प्रदर्शन के विषय में होते हैं।

इसका परिणाम चिंताजनक और भयानक है।

मेरी प्यारी बेटी,

शायद यह सब सुनकर तुम्हें चिन्ता होती होगी कि

इसका अमल करते हुए तुम सबसे अकेली हो जाओगी।

सबके बीच तुम कैसी लगोगी?

लेकिन बेटा,

ऐसा नहीं हो सकता है

कि तुम जमाने के पीछे जाओ, इसकी अपेक्षा

तुम स्वयं जमाने को अपने पीछे लाओ।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

छगन और मगन दोनों बातें कर रहे थे।

मगन ने छगन से पूछा, "सफल राजनीतिज्ञ किसे कहा जाता है"

छगन ने तुरन्त जवाब दिया, "जो पहले से जान ले कि समूह किस तरफ जाएगा? और जो दौड़कर उसके आगे चल सके।"

बेटा,

जिस प्रकार गलत अनुकरण का कोई अर्थ नहीं है।

उसी प्रकार गलत नेतागिरी का भी कोई अर्थ नहीं है।

हाँ, यदि सही हो तो ये दोनों प्रशंसनीय हैं।

मेरी बात इतनी ही है कि

तुम जमाने के साथ मत बदलो।

बल्कि जमाना तुम्हारे साथ बदले।

Yes my daughter, That's possible.

तुमको शायद पता होगा

अमेरिका में एक Woman Club है।

जिसका एक Basic identity है।

सारा शरीर जिसमें ढँक जाए, ऐसी पोशाक।

यह मेरा स्वप्न है।

तुम्हारी जैसी अच्छी लड़कियाँ ऐसा एक ग्रुप बनाएँ।

एन्टी जीन्स ग्रुप।

एन्टी टी-शर्ट ग्रुप।

नो बॉयफ्रेन्ड ग्रुप। etc.

बेटा, अन्धे अनुकरण की इस भूमिका से यदि हम ऊपर उठ सकें,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तो हमारा अनुभव और हमारा ज्ञान

हमें ऐसा ही करने की सलाह देते हैं।

याद रखना बेटा,

ग्रुप का प्रारम्भ व्यक्ति से होता है।

इसकी पहली पगडण्डी यह है कि

तुम्हारे जीवन में ये सारे सद्गुण आएँ।

तुम्हारी दृष्टि में परिवर्त्तन आए।

तुम्हारी सहेली ने क्या पहना है? इसका सारा आकर्षण दूर हो जाए।

और उसने कितनी और कौन सी पुस्तकें पढ़ी है,

इसकी सहज जिज्ञासा उत्पन्न हो।

उसके पास कितना पैसा हो, इसका कोई इम्पोर्टेन्स न रहे।

उसके पास कितना ज्ञान है, यह बात महत्त्वपूर्ण बन जाए।

उसने अपनी पार्टी में कितना खर्च किया,

ये सारी बातें लज्जाजनक बन जाएँ।

और उसने गरीबों को कितना डोनेशन दिया है,

यह बात उसकी प्रेस्टिज बन जाए।

मुझे विश्वास है बेटा,

कि तुम यह काम कर सकती हो। उस दिन मेरा यह स्वप्न साकार होगा।

और मेरी आँखों में हर्ष के आँसू आएँगे।

मुझे तुम्हारे प्रति Already गर्व है।

परन्तु उस दिन यह गर्व दोगुना हो जाएगा।

That will be the best gift for me my daughter!

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

Dress के विषय में Another point of view है जातिभेद।

Can you imagine?

कोई लड़का यदि साड़ी या सलवार कमीज पहनकर बाहर निकले

तो वह कैसा लगेगा?

लोगों में वह कितना हास्यास्पद और निंदाजनक लगेगा?

तो जिस प्रकार लड़का लड़की का ड्रेस नहीं पहन सकता है।

उसी प्रकार लड़की भी लड़के का ड्रेस कैसे पहन सकती है?

उपहास और निन्दा तो दोनों तरफ समान है।

परन्तु हमने एक ओर गलत तरीके से इस ड्रेस को स्वीकार कर लिया है।

और इससे अनेक प्रकार के Problems खड़े हुए हैं।

छगन एक विवाह प्रसंग में गया था। बारात में बैण्ड बज रहा था।

कोई विचित्र तरीके से नाच रहा था।

छगन ने अपने पास खड़े व्यक्ति से सहज ही कह दिया,

"यह लड़का कैसा बेहूदा नृत्य कर रहा है!"

उस व्यक्ति ने गुस्से होकर कहा-

"मुँह सम्भालकर बोलो, यह लड़का नहीं, मेरी बेटी है।"

बेचारे छगन ने तुरन्त माफी मांग ली और बोला-

"सॉरी, मुझे पता नहीं था कि आप इसके पापा हैं।"

"मैं इसका पापा नहीं, मम्मी हूँ।

बेटा,

यूरोप के शहरों में पुरुष लम्बे-लम्बे बाल और चोटी तक रखने लगे हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और स्त्रियाँ इतने छोटे बाल कटाती हैं कि उन्हें पहचानना ही मुश्किल हो जाता है।

ऐसी वृत्तियों को एक मानसिक रोग मानना चाहिए।

स्वयं जो नहीं है, वह बनने की होड़ का रोग।

उन लोगों को पता नहीं है कि मनुष्य के तन और मन पर उसके पहनावे का कितना गहरा असर होता है।

कोई लड़की अगर जीन्स पहनती है तो उसके मन की गहराईयों में पुरुषत्व की संवेदना जागृत होने लगती है।

फिर चूड़ी पहनने में या बिन्दी लगाने में उसे शरम आने लगती है।

इन अनुभूतियों के साथ-साथ

शारीरिक और मानसिक परिवर्त्तन भी शुरु हो जाते हैं।

यह परिवर्त्तन उसके स्त्रीत्व का परिवर्त्तन होता है।

फिर छोटे-मोटे स्त्रीरोग तथा वन्ध्यत्व तक के दोष

उस स्त्री को घेर लेते हैं।

जिसके मूल में पोशाक की पसन्दगी की भूल होती है।

विदेशों में दो लड़के या दो लड़कियाँ परस्पर विवाह कर लेती हैं।

और कानून उस विवाह को मान्यता भी दे देता है।

इसकी जड़ में ऐसी भूलें ही रहती हैं।

मेरी प्यारी बेटी,

एक स्त्री जब माँ बनती है ना? तब वह जब अपनी सन्तान को स्तनपान कराती है, तब तो ठीक,

परन्तु जब उसे स्पर्श करती है, तब भी उसका मातृत्व जाग उठता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और उसकी छाती में से दूध झड़ने लगता है।

यहाँ तक तो ठीक,

परन्तु जब अपनी सन्तान को देखती है या याद करती है,

तब भी वात्सल्य की यह प्रतिक्रिया हो सकती है।

आज बहुत सी मॉडर्न माताएँ

बच्चे को पशु के दूध के हवाले कर देती है।

उसे कोई इसका कारण पूछे तो बिल्कुल सही जवाब देती है-

"दूध नहीं आता है।"

पुराने लोगों को यह सुनकर आश्चर्य होता है,

ऐसा कैसे हो सकता है?

सगे बेटे को पिलाने के लिए दूध नहीं आए...?

परन्तु इसका जवाब सरल है।

ये सारी क्रिया-प्रक्रिया एक 'माँ' की ही हो सकती है।

और 'माँ' एक स्त्री ही बन सकती है। पूर्ण स्त्री।

बेटा,

This is the genetic maths.

जीन्स का प्रचलन बढ़ेगा

तो स्त्रीत्व समाप्त हो जाएगा।

My daughter,

Now you can see,

A dress is not only a dress, But much more than it.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

I come to the third point of the view.

हमारे शरीर में एक विशेष प्रकार का हार्मोन होता है।

जिसका नाम है **टेस्टेस्टोरम**

चुस्त कपड़ा पहनने से यह हार्मोन डिस्टर्ब्ड हो जाता है।

जिसका असर Blood circulation

और Blood pressure पर पड़ता है।

तुमको पता होगा कि

दो पीढियाँ पूर्व जो गोलियाँ ७०-८० वर्ष तक भी नहीं ली जाती थी,

वे गोलियाँ आज ३०-४० वर्ष की उमर से ही

शुरु हो जाती हैं।

३०वर्ष में B.P. और ३५ वर्ष में अटैक

इस परिस्थिति में पहनावे का भी कम योगदान नहीं है।

इसके अतिरिक्त चुस्त वस्त्र शारीरिक विकास को अवरुद्ध कर देता है।

स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचाता है।

कमर पर के चुस्त वस्त्र से पेट का भाग दबा रहता है।

इससे पाचनक्रिया ठीक से नहीं हो पाती है।

छाती पर के चुस्त वस्त्रों से छाती और फेफड़ा दबा रहता है।

जिससे श्वासोच्छ्वास की क्रिया ठीक से नहीं चलती है।

मेरी प्यारी बेटी,

स्त्री और पुरुष दोनों के लिए चुस्त वस्त्रों की यह समस्या Common है।

विदेश के संशोधक, वैज्ञानिक और डॉक्टर अपने रोगियों को ढीले-ढाले

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

वस्त्र पहनने की सलाह बहुत पहले से दे रहे हैं।

धोती से धोती तक की इस यात्रा में

आज शायद हम बीच में खड़े हैं।

इस सन्दर्भ में तुम्हें एक अच्छा उदाहरण देता हूँ।

English toilet

हँसना बाद में बेटा, पहले इसे समझ लो।

वैज्ञानिकों ने यह प्रमाणित किया है कि

शौच जाने की हमारी पारम्परिक मुद्रा/आसन सर्वश्रेष्ठ है।

क्योंकि इस आसन में उत्सर्ग-अवयवों को

मलनिकास में अधिक सरलता रहती है।

वायु का प्रचार भी अनुकूल रूप से हो सकता है।

तुम्हें पता होगा

हमारे शरीर का प्रत्येक सरक्युलेशन वायु के कारण होता है।

हम जिसे प्रेशर या मोशन कहते हैं, वह भी वायु का ही कार्यक्षेत्र है।

परन्तु हमें यह श्रेष्ठ मुद्रा नापसन्द लगने लगी।

हम English का अनुकरण करने लगे।

और घर-घर ले आए English toilet.

इसमें जिस मुद्रा में शौच किया जाता है,

वह मुद्रा तो शौच की दृष्टि से C-grade की मुद्रा है।

परिणाम?

कब्ज, अपच, गैस और अनेक प्रकार के रोग।

तो अब क्या करें?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

Please note this question-mark.

यह प्रश्न यह नहीं कहता कि English toilet का क्या करें?

उसे तो कोई आँच नहीं आनी चाहिए। नहीं तो हम पिछड़े हो जाएँगे।

प्रश्न तो यह कहता है कि इस कब्ज और गैस आदि का क्या करें?

डॉक्टर तो प्रश्नकार महोदय को गोली लिखकर दे देते हैं।

यदि उस गोली से फरक नहीं पड़ता है तो हाई-डोज़...

पैसे भले ही बरबाद हों,

शरीर भले रोगग्रस्त हो जाए, आगे जाने पर भले ही ऑपरेशन कराना पड़े.

परन्तु हमें मॉडर्न बनकर टिके रहना चाहिए।

Tell me my daughter.

हकीकत में किसे जड़ कहना चाहिए?

पुराने लोगों को या ऐसे Modern को?

मेरी प्यारी बेटी,

There is the same story of the dress also.

शारीरिक दृष्टि से, मानसिक दृष्टि से,

पारिवारिक दृष्टि से, सुख-शान्ति की दृष्टि से

हर तरह से वेस्टर्न ड्रेस हानिकारक है।

फिर भी यदि हमें इसे पकड़े रखना हो

तो वह English toilet जैसा ही हुआ ना?

I know my daughter, You are Intelligent.

तुम कभी भी इस जड़ता का भोग मत बनना।

I'm realy proud of you. Love you very much.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

LOGIC

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बेटा

सन्तान जैसे-जैसे बड़ा होता है,

वैसे-वैसे माता-पिता के लिए उसका Option बदलता रहता है।

चार वर्ष का बच्चा कहता है - मेरे पापा बहुत महान हैं।

छः वर्ष का बच्चा कहता है - मेरे पापा सबकुछ जानते हैं।

आठ वर्ष का बच्चा कहता है - मेरे पापा बहुत अच्छे हैं।

दस वर्ष का बच्चा कहता है - मेरे पापा हरेक बात में मना कर देते हैं।

बारह वर्ष का बच्चा कहता है - मेरे पापा मानो मेरे विरोधी बन बैठे हैं।

चौदह वर्ष का लड़का कहता है - मेरे पापा को समझाना बहुत मुश्किल है।

सोलह वर्ष का लड़का कहता है - मेरे पापा को कुछ पता ही नहीं चलता है।

अठारह वर्ष का लड़का कहता है - मेरे पापा बेवकूफ हैं।

मेरी प्यारी बेटी,

लेकिन उनके जीवन में एक दिन ऐसा आता है

जब उसकी सन्तान ८...१०...१२ वर्ष की अवस्था से गुजर रही होती है।

तब उसे याद आते हैं वे दिन और उसकी अन्तरात्मा कहती है

मेरे पापा सही थे

मेरे पापा बिल्कुल सही थे।

उन्होंने हम तीन-चार भाई-बहनों का

पालन-पोषण कितनी कुशलता से किया था।

हमारे दिल में भी उनके प्रति कितना मान था।

जबकि मेरा बेटा तो मुझे Stupid समझता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

सचमुच बढ़ती उम्र के बाद मैंने उनके बारे में जो सोचा था
वह बहुत गलत था।

मेरे पापा वास्तव में महान हैं।

बेटा

बात मात्र स्पीच की नहीं, फीलिंग्स की है।

Teen-age में आनेवाले लड़के-लड़कियाँ

माता-पिता के साथ दलीलबाजी करते हैं।

यह घर-घर की कहानी है।

मम्मी-पापा को बात-बात में गलत ठहराने में उन्हें आनन्द आता है।

दलीलबाजी में आखिरी शब्द उनका ही होता है।

उस बात में उनका बहुत ध्यान रहता है।

मम्मी-पापा की बात सही है। यह शायद उनकी समझ में आ जाए।

तो ये एकाध दलील कर लेने का लोभ वह कभी छोड़ नहीं सकता है।

मेरी प्यारी बेटी,

आज की नई पीढ़ी की शायद यह सबसे बड़ी करुणता है

हद तो तब होती है

जब बुजुर्गों की बातों को बिना सोचे काट डालने की

आदत ही पड़ जाती है।

बेटा,

वाणी या विचार व्यक्ति का ही एक स्वरूप है,

जब हम किसी की बात काटते हैं,

तो वास्तव में हम उस व्यक्ति को काट देते हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

विनय किसे कहा जाता है ? इस विषय में **पुष्पमाला** नामक ग्रन्थ में एक बहुत अच्छी घटना का वर्णन किया गया है

एक वृक्ष के नीचे गुरु और शिष्य बैठे हैं।

शिष्य गुरु से ज्ञान प्राप्त कर रहा है।

उसी समय वृक्ष की डाल पर एक कौआ आकर बैठता है।

गुरु शिष्य को वह कौआ दिखाता है और कहते हैं–''यह कौआ सफेद है।''

शिष्य हाथ जोड़कर कहता है –

“आप जैसा कहते हैं, वैसा ही है।”

अभ्यास चलता रहा, शाम हो गई।

शिष्य ने गुरु का वन्दन करके पूछा,

“सुबह आपने कौए को सफेद कहा था, वह वैसा ही है।”

उसमें किसी प्रकार की शंका नहीं है, परन्तु मुझमें अल्पबुद्धि होने के कारण मैं इसका रहस्य नहीं समझ सकता। आप कृपा करके मुझे समझाएँ।

गुरु ने प्रेमपूर्वक कहा,

“वत्स, मन और आत्मा को पढ़ने की शक्ति से मैंने देखा था, कि उस कौए की भावना शुद्ध थी,

उसकी आत्मा शुभ थी,

इस दृष्टिकोण से – आन्तरिक निर्मलता की अपेक्षा से

मैंने उसे सफेद कहा था।”

शिष्य ने नतमस्तक होकर कहा, “जैसा आपने कहा, वैसा ही है।”

ग्रन्थ के शब्द हैं –

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

जइ सेयं वायं वए पुज्जा, तह वि य से नवि कूडे।

This is विनय

Can you imagine? उस शिष्य के पास कितने Options थे?

१. अरे गुरुजी! आपका दिमाग तो ठिकाने है ना? कौए को सफेद कह रहे हैं।

२. आपको गलतफहमी हुई है। यह हंस नहीं, कौआ है। और कौआ तो काला ही होता है।

३. लगता है आपसे कोई भूल हो रही है। आप पुनः भलीभांति देख लें।

४. क्या? कौआ और सफेद? क्या बात करते हैं? यह कैसे हो सकता है?

५. आप कहते हैं तो मान लेता हूँ, वर्ना मुझे तो काला ही दिखाई देता है।

६. ठीक है, आपको जो लगा, वह सही है।

७. जी, गुरुजी, आप जैसा कहते हैं, वैसा ही है।

उस शिष्य ने 7th option choose किया था।

जब गुरु की बात को शिष्य अपने मन से

Aproved करता है, और फिर वह बात मानता है,

तब Actualy वह शिष्य गुरु की नहीं मानता है,

बल्कि अपने मन की मानता है।

मेरी प्यारी बेटी,

I know very well,

Your generation lives on HOW & WHY.

This is good, I like it

लेकिन जब यह विनय की सीमा को cross कर जाए,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तब कलंक बन जाता है।

You may argue

“लेकिन यह तो Blind faith हो गया।

जो दिखाई नहीं दे रहा है, वह मानना पड़ा।”

अरे, जो दिखाई देता है, उसके विपरीत मानना पड़ा।

How can it be possible.

No, I can’t keep blind faith.”

तुम जो कह रही हो, उसमें तुम्हारे सम्पूर्ण जनरेशन का प्रतिबिम्ब है।

लेकिन मैं तुम्हें यह कहना चाहता हूँ, कि तुम्हारा यह जनरेशन

कौन-कौन सी जगह पर Blind faith रखता है।

लॉजिक पर जीनेवाला व्यक्ति डॉक्टर पर Blind faith रखकर एनेस्थेसिया लेकर बेहोश होकर ऑपरेशन टेबल पर सो जाता है।

वकील पर Blind faith रखकर

उसे अपना caseसौंप देता है।

विमान और पायलट पर Blind faith रखकर

हजारों फीट की ऊँचाई पर सफर कर लेता है।

Barbar (नाई)पर Blind faith रखकर

उसके धारदार शस्त्र के पास सर झुका देता है।

मेरी प्यारी बेटी,

तुम्हारे साथ जिसका किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है उन व्यावसायिक लोगों की अपेक्षा तो तुम्हारे माता-पिता, दादा-दादी आदि लाख गुणा विश्वसनीय हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

On the spot,

उनकी बातें काटकर, हम कोई कमाई नही करते हैं।

बल्कि बहुत कुछ गँवा देते हैं।

मेरी प्रिय बेटी,

तुम आज एक प्रयोग करो,

किसी निश्चित विषय में तुम्हारे जो विचार हों, जो अभिप्राय हों,

वह तुम एक कागज पर लिख दो।

उस कागज को एक लिफाफे में रख दो।

दस वर्ष के बाद उस लिफाफे को तुम खोलना।

उस कागज को पढ़ना और अपने मन से एक प्रश्न करना,

कि तुम इन विचारों या अभिप्रायों से सहमत हो?

तुम मेरी बात समझ रही हो ना?

दस वर्ष के बाद उन्हीं विषयों के प्रति तुम्हारे विचार और अभिप्राय

बिल्कुल बदल गए हों, यह सम्भव है।

बेटा,

समय में मात्र समय नहीं होता।

नया ज्ञान, नया अनुभव, नई समझ... ये सभी होते हैं।

जो हमारे मन को प्रौढ बनाते हैं। अधिक विकसित बनाते हैं।

चालीस वर्ष की उम्र में हमारे मन की जो स्थिति है

या साठ वर्ष की उम्र में तुम्हारे दादा-दादी की जो विचार-प्रौढता है,

वह तुम्हारे अन्दर बारह-तेरह वर्ष की उम्र में नहीं होगी ना?

हमारे और तुम्हारे मन्तव्य एक ही होने चाहिए,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

ऐसा हमारा कोई आग्रह नहीं है।

बल्कि, मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि ऐसा होना सम्भव भी नहीं है।

मैं तो इतना ही कहता हूँ मेरी बेटी, कि मैं अपने विचार रखूँ

और तुम तुरन्त उसे काट डालो, यह उचित है?

व्यक्ति जब सही बात को काटता है,

तब वास्तव में वह अपने आपको काटता है।

बेटा,

वह उचित बात भी जब किसी शुभचिन्तक के द्वारा कही गई हो,

तब उसका मूल्य लाखों गुना बढ़ जाता है।

और वह शुभचिन्तक भी जब अत्यन्त उपकार करनेवाला व्यक्ति हो,

तब उस बात का मूल्य

दुनिया भर के सोना-चांदी और हीरे-मोती से भी नहीं चुकाया जा सकता।

तुम्हें जब बुजुर्गों की बात पर विश्वास नहीं होता,

तब वह अविश्वास भी उस बात की सच्चाई के आधार पर ही होता है।

बुजुर्गों की शुभेच्छा और उपकार

इन दो आधारों पर हो तब भी अविश्वास नहीं होता।

ठीक है ना बेटा ?

तो फिर अब मुझे इतना ही कहो,

कि हमारे शुभेच्छुक और हमारे उपकारी के प्रति

हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए?

उन्हें प्रसन्नता प्रदान करे, ऐसा? या आघात लगे, ऐसा?

एक बात हमेशा याद रखना बेटा,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कि **घर कभी भी सत्याग्रह करने की जगह नहीं है।**

यह तो प्रेम, लगाव, आत्मीयता, विनय

और कृतज्ञता का मन्दिर है।

एक माँ के लिए कभी भी उसका बेटा

सही या गलत नहीं होता,

बेटा ही होता है।

तुम जब छोटी सी थी।

तब कितनी सारी ऐसी हरकतें करती थी

जो बौद्धिक रूप से बिल्कुल ही गलत थीं।

कभी-कभी तो घर के लिए या हमारे लिए हानिकारक भी थी।

तुम अपनी तोतली भाषा में

जाने क्या-क्या बोलती थी।

उसे काटने का हमने कभी प्रयास नहीं किया।

तुम्हारी बालसुलभ चेष्टाओं के ऊपर हमने कभी गुस्सा नहीं किया।

मेरी प्यारी बेटी,

तुम जिसप्रकार आज हमें पसन्द हो,

वैसे ही उस समय भी पसन्द थी।

और इसीलिए तुम्हारी सारी हरकतें हमें पसन्द थीं।

जो व्यक्ति पसन्द हो, उसके सारे व्यवहार पसन्द आते हैं।

बेटी, तुम तो बहुत अच्छी हो,

लेकिन आज दुनिया की लाखों सन्तानें ऐसी हैं,

जिन्हें यह पता नहीं होता,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कि वे जिनके सामने सत्याग्रह कर रहे हैं,

वे उनके हजारों झूठ को निगल चुके हैं।

तर्क और वितर्क तो कोर्ट में होते हैं, बेटा,

घर तो तर्पण, अर्पण और समर्पण का पुण्यप्रयाग है।

दलीलबाजी और आक्षेपबाजी

इस प्रयाग में कोर्ट का कुरुक्षेत्र खड़ा कर देता है।

जिसके परिणाम में त्रास और विनाश के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

मेरी प्यारी बेटी,

सत्य का मतलब क्या है, तुम्हें पता है?

जो हमें सत्य लगे, वही सत्य नहीं है।

जो हो, वही सत्य है, ऐसा भी नहीं है।

व्याकरण पर आधारित व्युत्पत्तिशास्त्र में सत्य की अद्भुत व्याख्या की गई है।

सद्भ्यो हितम् - सत्यम्

जो हितकारक हो, वही सत्य है।

इसीलिए **योगशास्त्र** में कहा गया है -

तत् सत्यमपि नो सत्यमप्रियम् चाहितम् च यत्।

वह सत्य भी सत्य नहीं है, जो अप्रिय और अहितकर हो।

मेरी प्यारी बेटी,

अपने से बड़ों के प्रति हमारा आदर बना रहे, यह हितकर है।

उपकारी के प्रति हमारी कृतज्ञता अखंड रहे, यह हितकर है।

किसी के हृदय को हमसे ठेस न लगे, यह हितकर है।

घर का वातावरण तंग न हो जाए, यह हितकर है।

दूसरे के स्थान में अपना स्थान बना रहे, यह हितकर है।

You can see my daughter,

Logic ic logically false.

दुनिया के श्रेष्ठ विचारकों ने कहा है –

वाग्युद्ध में हार जानेवाले ही जीतते हैं।

तुम्हें यदि दुश्मन चाहिए

तो तुम अपने मित्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ बनो।

परन्तु यदि तुमको मित्र चाहिए,

तो अपने मित्रों को तुम्हारे ऊपर विजय प्राप्त करने दो।

तुम्हें पता है बेटा?

मनुष्य दलील क्यों करता है?

स्वयं को श्रेष्ठ और महान् साबित करने की आन्तरिक सूक्ष्म वृत्ति मनुष्य को दलील करने के लिए प्रेरित करती है।

परन्तु दलील करनेवाला कभी श्रेष्ठ और महान् नहीं लगता,

बल्कि इसके विपरीत खराब लगता है। हाँ

जो अन्तरात्मा से कह सके कि

"मैं प्रायः भूल करता रहता हूँ। हो सकता है मुझसे भूल हो रही हो, और आप सही हों,"

तो वह Definitely श्रेष्ठ और महान् लगता है।

हकीकत यह है मेरी बेटी कि

जो श्रेष्ठ और महान् होते हैं,

वे ही ये शब्द बोल सकते हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

छगन रास्ते पर जा रहा था।

रास्ते में उसने एक भीड़ देखी,

छगन ने नजदीक जाकर देखा,

तो भीड़ के आगे एक गधा था,

गधे की पूँछ एक लड़के ने पकड़ रखी थी।

और गधा उस लड़के को धड़ाधड़ लात मार रहा था।

लोग दूर खड़े चिल्ला रहे थे।

छगन जरा हिम्मत करके नजदीक गया।

और लड़के से कहने लगा,

"अरे, छोड़ दो गधे की पूँछ।"

"नहीं छोड़ूँगा" लड़के ने तुरन्त जवाब दिया।

"इतना लहूलुहान हो गया है...क्यों नहीं छोड़ोगे?"

"मेरे पापा ने कहा है"

"क्या कहा है?" "जीवन में कभी कुछ पकड़ना नहीं और कुछ पकड़ा हो तो उसे छोड़ना नहीं।"

My dear,

आग्रह हमेशा गधे की पूँछ की तरह होती है।

तुम अगर उसे छोड़ नहीं सको तो तुम्हारे लिए लात खाना ही एकमात्र विकल्प है।

पंचसूत्र में 'मुनि' का एक मजेदार विशेषण कहा गया है।

णिअत्तऽग्गहदुक्खे

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

आग्रह – दुःख से रहित।

कितनी अद्भुत बात...**आग्रह स्वयं ही दुःख है।**

सुखी होने के लिए आग्रह करना

यह जीने के लिए जहर खाने जैसा है।

मात्र हमारे साथ व्यवहार में ही नहीं बेटा!

अपने जीवन के प्रत्येक व्यवहार में तुम इस बात को याद रखना।

इससे तुम्हारा सम्मान इतना बढ़ जाएगा,

कि तुमको जीवन में कभी भी आग्रह या दलील करने की

जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

झुकता वही है, जिसमें जान होती है,

अकड़ना तो मुरदे की पहचान होती है।

और जो झुकता है, उसकी सारी बातें पसन्द आती हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

MODESTY

मनुस्मृति में विनय के चार फल बतलाए गए हैं –

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।

चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ।। २-१२१

जिसका स्वभाव नम्र है,

और जो हमेशा श्रेष्ठ जनों के प्रति **विनय** करता है,

उसकी **आयु** बढ़ती है, **ज्ञान** बढ़ता है,

यश बढ़ता है और **बल** बढ़ता है।

बेटा,

जब आँधी आती है, तब एक विलक्षण घटना घटती है।

बड़े-बड़े मजबूत वृक्ष टूट जाते हैं।

और छोटे-छोटे कोमल पौधे बच जाते हैं।

Do you know why?

कारण कि बड़े वृक्ष अकड़कर खड़े होते हैं,

और छोटे पौधे झुक जाते हैं।

मेरी प्यारी बेटी,

I tell you one top secret.

अकड़ मूर्खता है, जड़ता है।

मनुष्य को जो अपेक्षित होता है, वह अकड़ से नहीं मिलता है बल्कि नम्रता से मिलता है।

कितनी सुन्दर है हमारी परम्परा !!!

रोज सुबह घर के बुजुर्गों को प्रणाम करने की पद्धति...

प्रणाम का क्या अर्थ है?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

समर्पण की अभिव्यक्ति।

पाँच सेकन्ड के लिए झुककर

फिर पाँच सेकन्ड भी उद्दण्डता का प्रदर्शन हो,

वह प्रणाम नहीं है।

'प्रणाम' तो यह कहता है कि आप हमारे लिए हमेशा सम्माननीय हैं।

'प्रणाम' तो यह कहता है कि आप मेरी अपेक्षा अधिक ज्ञानी हैं।

'प्रणाम' तो यह कहता है कि आपके वचन मेरे लिए आदरणीय हैं।

बेटा,

जहाँ अलग-अलग मन्तव्य हों,

वहाँ सुख-शान्ति प्राप्त करने के लिए एक ही शर्त्त है।

कि किसी एक के मन्तव्य को मान देना चाहिए।

अब प्रश्न यह है कि किसके मन्तव्य को मान दिया जाए?

कौन सही अर्थों में प्रणाम करता है?

औचित्य, सत्य और नीति की दृष्टि से विचार करोगी

तो जवाब बहुत ही सरल है।

You will find my daughter.

सारी दुनिया का Art of living,

सारी दुनिया का Life Science

हमारी संस्कृति में पहले से ही विद्यमान है।

अन्तर मात्र इतना है, कि दुनिया की दृष्टि मात्र तत्कालीन लाभ और स्वार्थ पर है।

हमारी संस्कृति इसी कला को औचित्य और कृतज्ञता की भावनाओं से

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

प्राकृतिक और सजीव बनाती है।

बेटा,

मुम्बई - बोरीवली में एक सोसायटी है - पुष्पा पार्क

उसमें एक परिवार रहता है।

माता-पिता हैं, ४०-४२ वर्ष के दो पुत्र हैं।

पूत्रवधुएँ हैं, पौत्र हैं।

इस परिवार में एक विशेषता है

माता-पिता से ऊँची जगह पर कोई नहीं बैठता है।

उनके equal-level में भी कोई नहीं बैठता है।

पिताजी बाहर से घर आते हैं तो दोनों भाई सोफे से उठकर खड़े हो जाते हैं।

पिताजी सोफे पर बैठते हैं और दोनों भाई नीचे जमीन पर बैठ जाते हैं।

फिर तो पुत्रवधुएँ, पौत्र सभी जमीन पर।

मेरी प्यारी बेटी,

I don't expect you to do so.

I am just showing you the modesty.

New generation will ask.

What's the need to do so?

Well,

Very nice question.

My dear,

एक माँ अपने बालक को छाती से चिपकाए रखे, इसकी क्या 'जरूरत' है।

एक प्रेमी अपनी प्रेमिका को स्नेह से चुम्बन करे, इसकी क्या 'जरूरत' है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

प्रेम को 'जरूरत' का गणित आता ही नहीं।

एक विशेष व्यक्ति के प्रति तुम्हें विशेष प्रेम होता है।

और उस प्रेम की एक विशेष अभिव्यक्ति होती है।

बुजुर्गों ने हमारे ऊपर जो उपकार किया है,

और उससे हमारे हृदय में जो कृतज्ञता की संवेदनाएँ जन्म लेती हैं,

उनकी यह सहज अभिव्यक्ति है।

एक अपरिचित व्यक्ति के साथ जिसका हमारे ऊपर कोई उपकार नहीं है।

ऐसे व्यक्ति के साथ हम जैसा व्यवहार करते हैं,

यदि इसी प्रकार अपने बुजुर्गों के साथ व्यवहार करें,

तो इसका अर्थ यही हुआ ना कि हमारे लिए दोनों समान हैं।

It means

हमारे ऊपर हमारे माता-पिता का कोई उपकार ही नहीं है।

बेटा,

इसे अपलाप, अपह्नव या निह्नव कहा जाता है।

एक व्यक्ति ने किसी व्यक्ति से १ lac Rs. उधार लिया हो।

और वह व्यक्ति जब माँगे, तब वह अन्जान बन जाए,

और रुपये लिए ही नहीं, ऐसा कह दे।

ऐसी ही यह घटना है।

This is a type of theft my daughter!

This is a type of corruption.

More horrible corruption.

Honesty **उसे ही कहा जाता है।**

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कि हमारे उपकारी के साथ किए जानेवाले प्रत्येक व्यवहार में
उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञता...सभावता
सहज रूप से उभर आना चाहिए।

पुष्पा पार्क की उस Family के दोनों भाईयों को
नीचे बैठने में loss क्या होता है?
उन्हें तो आनन्द आता है... कृतज्ञता की अभिव्यक्ति का।
उनके माता-पिता को आनन्द आता है
पुत्र के विनय को देखकर
सारे घर में आनन्द का वाईब्रेशन स्प्रेड हो जाता है।
सारा वातावरण ही बदल जाता है।
प्रफुल्लित... खुशनुमा... सुप्रसन्न...
My dear, Science says
ऐसे वातावरण में रोग नहीं होते हैं।
रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ती है।
मन की शक्तियों का विकास होता है।
शायद कोई रोग हो भी जाए, तो ज्यादा तकलीफ नहीं होती है।
जल्दी मिट जाता है।
हमारी संस्कृति में इसे आशीष या दुआ कहा जाता है।
इसके विपरीत यदि कृतज्ञता की संवेदना नहीं होती हो,
नम्रता या विनय नहीं होता हो,
उद्दण्डता या अकड़ होती हो,
तो माता-पिता का हृदय हमेशा दुःखी रहता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उनकी वेदना के बादल सारे घर को घेर लेते हैं।

हमारी परम्परा इसे 'हाय' कहती है।

बेटा,

यह 'हाय' बहुत बुरी चीज होती है।

सन्त तुलसीदास कहते हैं -

तुलसी हाय गरीब की, कबहु न खाली जाय ।

मुआ ढोर के चाम से, लोहा भस्म हो जाय ।।

शायद साईन्स भी एक दिन इसका साईन्टिफिक एक्स्प्लेनेशन दे देगा।

लेकिन हमें तबतक राह क्यों देखनी चाहिए?

एक ओर आनन्द है और दूसरी ओर दुःख है,

ऐसा तो हमारा अनुभव ही कहता है ना?

मुम्बई की चौपाटी के किनारे एक विदेशी वृद्ध दम्पत्ति बैठा था।

उसी समय एक कार वहाँ आकर खड़ी हुई।

दो बालक उसमें से नीचे उतरे।

कार में बैठे दादा-दादी के हाथ पकड़कर

उन्होंने उन्हें नीचे उतारा।

दोनों झगड़ने लगे

"मैं दादा-दादी को ले जाऊँगा..." "मैं ले जाऊँगा..."

उनके मम्मी-पापा कार से बाहर निकले।

उन्होंने कहा, "बेटा तुम इन्हें नहीं ले जा पाओगे। हम इनके हाथ पकड़ते हैं।"

"नहीं, मैं ले जाऊँगा।"

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

लड़के उनकी जिद पूरी करने लगे।

यह दृश्य देखकर वे विदेशी दम्पत्ति हिचकियाँ ले-लेकर रोने लगे।

वैसे तो इसमें रोने जैसा कुछ भी नहीं था।

लोगों का ध्यान उनकी ओर गया।

एक व्यक्ति ने उनके रोने का कारण पूछा।

उन्होंने जवाब दिया कि **“हमारे तीन बेटे हैं,**

परन्तु उन्हें हमसे कोई मतलब नहीं है।

एक स्पेन में रहता है, दूसरा फ्रान्स में।

और तीसरा न्यूयार्क में रहता है।

वे कभी हमारी खबर-अन्तर भी नहीं पूछते हैं।

हमें हमारी एकाकी जिन्दगी नरक जैसी लगती है।

यह Indian family देखकर

हमें...”

My dear,

This is India

सारे जहाँ से अच्छा...

New generation के पास Logic है।

हमें अपनी जिन्दगी अपने ढंग से क्यों नहीं जीनी चाहिए?

क्या हमें अपने Parents के Under में ही रहना है?

उनकी सेवा में हमें अपने मौज-शौक की आहुति दे देनी चाहिए?

But they don’t know my daughter,

कि यदि उनके Parents अपनी जिन्दगी अपने ढंग से जीते

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तो या तो उनका जन्म ही नहीं हुआ होता, या वे अनाथों की तरह बड़े हुए होते।

Point no.2 - Under में रहना।

यह तो अच्छा ही है।

चिलचिलाती धूप में छत्रछाया मिले, इससे अच्छा और क्या होगा?

दुनिया का कोई भी स्कूल, कॉलेज या युनिवर्सिटी

जो जीवनोपयोगी शिक्षा नहीं दे सकती,

वह शिक्षा माता-पिता और दादा-दादी सहज ही देते हैं।

आज भारत में लाखों परिवार ऐसे हैं, जिसमें परम्परागत रूप से दादी माँ की देशी दवा,

क्लिनिक्स और हॉस्पीटल की भागदौड़ को सरलता से दूर कर रहा है।

किशोरावस्था तथा युवावस्था की अपरिपक्वता

तथा बुजुर्गों की छत्रछाया का अभाव

इन दोनों विषमताओं ने पश्चिम के देशों में समस्याओं की शृंखला बना दी है।

ड्रग्स से लेकर खून-खराबा तक की समस्याओं की जड़ में ये ही विषमताएँ पाई जाती हैं।

भारत का लाखों वर्षों का इतिहास कहता है कि

बुजुर्गों के बहुमुखी व्यक्तित्व ने आश्रितों को

अद्भुत सुरक्षाकवच प्रदान किया है।

उन्होंने पुलिस का काम किया है।

कोर्ट का काम किया है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

युनिवर्सिटी का काम किया है।

डॉक्टर का काम किया है।

प्रसूतिगृह का काम किया है।

बेबी सीटर का काम किया है।

नर्स का काम किया है।

होमगार्ड का काम किया है।

यह सूची तो बहुत बड़ी है।

आज भी भारत में जहाँ-जहाँ भारत जी रहा है,

वहाँ-वहाँ बुजुर्ग ये काम कर रहे हैं।

वह भी अनेकगुणा अच्छी तरह।

पूर्ण प्रेम और निःस्वार्थभाव से।

इस स्नेहछत्र को ठुकराकर लोगों ने वास्तव में इससे होनेवाले सैकड़ों सुखों को ठुकरा दिया है।

बुजुर्गों की अनुपस्थिति में उन कार्यों के लिए व्यावसायिक व्यक्तियों के गिरफ्त में पड़कर लोग शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रूप से कितना दुःखी होता है।

यह हम अपने आसपास देख ही रहे हैं।

मेरी प्यारी बेटी,

बुजुर्ग जब शरीर से बिल्कुल लाचार हो जाते हैं,

और कोई काम नहीं कर सकते हैं,

तब भी वे एक महान काम कर रहे होते हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

Do you know what is it?

दुनिया के कोई भी माँ-बाप आशीर्वाद देते समय ऐसा नहीं कहते कि बेटा मुझे सुखी रखना

वे ऐसा ही कहते हैं-

बेटा सुखी रहो।

बेटा उनके पैर छुए या न छुए,

माँ की अन्तरात्मा सतत् उसके ऊपर आशीर्वाद बरसाया करती है।

यह अमृतवर्षा पुत्र के लिए और समस्त परिवार के लिए जीवन-संजीवनी बन जाती है।

भावना और विचारों की शक्ति के विषय में वैज्ञानिकों ने जो संशोधन किया है।

उसके सारांश Blessings के इस principal को prove करते हैं।

I suggest you a book - संस्कार ABCD

इसमें इस विषय के साईन्टीफिक रिसर्च की बात है।

मेरी प्यारी बेटी,

भारतीय सामाजिक जीवन

सामाजिक जीवन का श्रेष्ठ उदाहरण है।

युवावस्था में अपने माता-पिता को छोड़ देनेवाले तथा उनसे छुटकारा पानेवाले अपनी वृद्धावस्था में अपने पुत्रों से किस प्रकार की अपेक्षा रख सकते हैं ?

यदि रखेंगे भी तो क्या उनकी यह अपेक्षा कभी पूरी होगी?

पाश्चात्य जीवनपद्धति स्वार्थी, स्वकेन्द्री तथा लगभग उद्धत प्रकार की है।

इसी प्रकार सुखी रहा जा सकता है।

वे इसी भ्रम के शिकार हुए हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उन्हें पता नहीं है कि

जो वस्तु समाज के हित में नहीं है,

वह व्यक्ति के हित में भी नहीं होती।

कारण कि व्यक्ति भी समाज का ही एक अंश है।

नीतिवाक्यामृत का एक दिव्य सूत्र है

वृक्षपातनेन फलावाप्तिः सकृदेव।

वृक्ष को गिराकर फल की प्राप्ति

मात्र एक ही बार होती है।

बेटा, शान्ति से इस सूत्र पर विचार करना।

जीवन के कई रहस्य इस सूत्र में समाविष्ट हैं।

Let's come to the last point - मौज-मस्ती।

तो इसका सीधा समाधान यह है कि

मौजमस्ती तो मन की व्याख्या पर आधारित है।

तुम्हारा मन जिसे मौज-मस्ती मानता है, वह तुम्हारे लिए मौज मजा है,

गर्मी के मौसम में खुले मैदान में भरी दुपहरी में चार घन्टे तक

पसीने से लथपथ होकर शरीर को दौड़ा-दौड़ाकर

हाँफ जानेवाला व्यक्ति भी इसे 'मौज-शौक' मानता है,

I am talking about the cricket.

We saw in the chowpaty-example.

दादा-दादी की सेवा उन बालकों के लिए एक मौज शौक की वस्तु थी,

एक माँ अपनी सन्तानों के लिए जितना त्याग कर सकती थी,

जितना वात्सल्य दे सकती है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

वे सभी उसके लिए मौज-मजा ही होते हैं ना?

My dear,

There are two Types of the fun,

१ सात्विक तथा २. तामसिक

जो हमारे संस्कारों को सुशोभित करता है,

वह मौज-मस्ती सात्विक मौज मस्ती है।

और जो इसके विपरीत होता है, वह तामसिक मौज-मस्ती है।

तामसिक मौज-मस्ती

ऐसी आईटम है, जिसमें जहर मिश्रित है,

उसे खाने से आनन्द आए, यह सम्भव है,

परन्तु बाद में यह मौत की वेदना देती है।

पुष्पा पार्क के परिवार के बालकों ने

अपने पिता के अन्दर जो विनय देखा

उसे उन्होंने बिना किसी उपदेश के अपना लिया है।

वह उनकी सहज जीवनशैली बन गई है,

और Modesty की यह Cycle आगे चलेगी।

लाखों वर्षों की इस स्वस्थ परम्परा के ऊपर आज अनेक प्रकार के माध्यमों के द्वारा Western attacks हो रहे हैं।

जैसे-जैसे परम्पराएँ टूटती हैं,

वैसे-वैसे लोगों की परेशानियाँ बढ़ती जाती हैं।

हमारे जीवन में

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इस परम्परा को टूटने देना या अटूट रखना यह हमारे हाथ में है।

परम्परा ने विनय के सूक्ष्म स्वरूप को समझाया है।

त्रिसन्ध्यं नमनक्रिया : माता पिता तथा बुजुर्गों और उपकारी जनों को दिन में तीन बार प्रणाम करना चाहिए।

चेतस्यारोपितस्य तु : वे यदि उपस्थित न हों तो उन्हें मन में याद करके प्रणाम करना चाहिए।

अभ्युत्थानादियोगश्च : वे जब आएँ तब आदरपूर्वक खड़े हो जाना, उन्हें बिठाकर उनसे नीचे के आसन पर बैठना।

तदन्ते निर्भृतासनम् : उनके पास इसप्रकार आदरपूर्वक बैठना चाहिए, जिससे उनके प्रति मान-सम्मान के भाव प्रतित हों।

वचनप्रतिपत्ति : उनकी बातों को आनन्दपूर्वक स्वीकार करना चाहिए।

नावर्णश्रवणं क्वचित् : उनकी निन्दा कभी नहीं करनी चाहिए, उनकी निन्दा सुननी भी नहीं चाहिए।

त्यागश्च तदनिष्ठानाम् : उन्हें जो पसन्द न हों, वह नहीं करना चाहिए।

तदिष्टेषु प्रवर्तनम् : उन्हें जो पसन्द हों, वही करना चाहिए।

साराणां यथाशक्ति निवेदनम् : हमारे पास जो भी वस्त्र, आभूषण, चीज-वस्तु अच्छी हों, वह उन्हें देनी चाहिए।

नामग्रहश्च नास्थाने : जब हम गंदे स्थान पर हों, तो उनका नाम नहीं लेना चाहिए।

परलोकक्रियाणां कारणम् : उन्हें समाधि और सद्गति मिले, ऐसी धर्म और अध्यात्म की प्रवृत्ति में उन्हें प्रेमपूर्वक जोड़ना चाहिए और स्वयं भी

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

जुड़ना चाहिए।

तदासनाद्यभोगश्च : उनकी चीज-वस्तुएँ स्वयं उपयोग नहीं करनी चाहिए।

तीर्थे तद्वित्तयोजनम् : उनकी मृत्यु के बाद उनकी सम्पत्ति पुण्य-कार्य में दे देनी चाहिए, स्वयं उनका उपयोग नहीं करना चाहिए। स्वयं उपयोग करने से "उनकी मृत्यु हुई, यह अच्छा हुआ, जिससे यह वस्तु उपयोग करने को मिली" ऐसे दुष्ट विचार आ सकते हैं।

तद्बिम्बन्याससंस्कारः : उनकी मूर्ति बनवाकर उसका हमेशा सत्कार करते रहना चाहिए।

मेरी प्यारी बेटी,

उपकारियों के उपकार को समझे, उन्हें इसमें कुछ भी अधिक नहीं लगता है, बल्कि कम ही लगता है।

अथर्ववेद में कहा गया है -

पितरो देवाः - माता-पिता साक्षात् देवता हैं।

तैत्तरीयोपनिषद् में कहा गया है -

मातृदेवो भव - माता तुम्हारे इष्टदेवता हैं।

पितृदेवो भव - पिता तुम्हारे इष्टदेवता हैं।

स्कन्दपुराण का वचन है -

मातापित्रोस्तु यः पादौ, नित्यं प्रक्षालयेत् सुतः ।
तस्य भागीरथीस्नान-महन्यहनि जायते ।।

जो पुत्र माता-पिता के चरणों का हमेशा प्रक्षालन करता है,
वह प्रतिदिन गंगास्नान का फल प्राप्त करता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

My dear,

Do you know, How can I tell you all these things?

तुम्हें इस प्रकार मेरा सत्कार करना चाहिए।,

यह मैं तुम्हें कभी कह सकता हूँ क्या?

यह तो मेरे लिए शर्म की बात हुई।

But I have other points of view.

१. तुम्हारे अन्दर यदि ये संस्कार होंगे,तो तुम्हारा After marriage life बहुत ही सुखी होगा।

२. तुम्हारा यश बढ़ेगा, तुम्हारा सम्मान बढ़ेगा।

३. तुम्हारे सन्तानों में ये संस्कार सहज ही आ जाएँगे।

४. मेरी लाडली हमेशा रानी की भांति तथा देवी की भांति जिएगी।

Can you understand my daughter?

All this is for you

& not for me.

हाँ, तुम्हारे सुख से मैं सुखी हो जाऊँगा, इतना ही इसमें मेरा स्वार्थ है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

SPEECH

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इरान के दार्शनिक लुकमान एक वृक्ष के नीचे बैठे थे।

कुछ जिज्ञासु आकर उनसे प्रश्न करते हैं,

“हमारे शरीर का श्रेष्ठ अंग कौन सा है?”

लुकमान ने जवाब दिया – “जिह्वा ।”

“और सबसे खराब अंग” उन्होंने दूसरा प्रश्न किया।

“जिह्वा ।” लुकमान ने उसी अदा से जवाब दिया।

सभी जिज्ञासु एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

लुकमान ने कहा –

“श्रेष्ठ अंग जिह्वा है,

कारण कि यह मुरदे को भी जीवित कर सकती है।

सबसे खराब अंग भी जिह्वा है,

कारण कि यह जीवित व्यक्ति को खड़े-खड़े चीर सकता है।”

This is a fact my daughter,

The tongue is the instrument

Of the greatest good & the greatest evil

That is done in the world.

महाभारत की जड़ क्या थी ?

“अन्धे का बेटा अन्धा”

एकमात्र इसी वाक्य से युद्ध में कौरवों का विनाश हुआ, यह सत्य है।

परन्तु द्रौपदी ने भी अपने पाँचों पुत्रों को गँवाया।

क्या लाभ हुआ द्रौपदी को?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मेरी प्यारी बेटी,

शब्द शस्त्र से भी अधिक भयंकर हो सकता है।

महाभारत में लिखा है -

रोहते सायकैर्विद्धं वनं परशुना हतम् ।

वाचा दुरुक्तं बीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम् ।।

कुल्हारी और बाणों से छिन्न-भिन्न हो चुका जंगल फिर से उग सकता है,

परन्तु

कड़वे और तीखे शब्दों से जो घाव होते हैं, वे मुरझा नहीं सकते।

कितने साल गये उसे मिटाने में !

क्रोध में जो दो-चार शब्द बोले ।

My dear, there are eight secrets of a good speech.

(१) **महुरं** - Speak sweet. मीठी वाणी वशीकरण मन्त्र है। जिस प्रकार हमें मधुर वचन सुनना अच्छा लगता है, उसी प्रकार दूसरों को भी यह सुनना अच्छा लगता है। सबका प्रिय बनने का यह सरल और सटीक उपाय है - **बोलना तो मात्र मधुर ही बोलना ।**

(२) **निउणं** - Speak smart. जिस विषय में पूरी जानकारी हो, वही बोलना चाहिए। **जब आपकी बात गलत होती है, तब वास्तव में आप स्वयं गलत होते हैं।** इतनी तेजी से अथवा इतने धीरे से नहीं बोलना चाहिए कि सुननेवाले को पता ही न चले। हँसते-हँसते बोलने से भी हमारी बात दूसरे की समझ में नहीं आती है।

(३) **थोवं** - Speak slight. कम बोलना। seet n smart भी Over हो जाए, तो कोई भी नीरस हो सकता है। जो कम बोलता है, उसका

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

गौरव और सम्मान बढ़ता है। उसकी बातें सभी ध्यान से सुनते हैं। वह व्यक्ति कम जानता हो, फिर भी स्कॉलर लगता है। **अधिक बोलनेवाला स्कोलर हो तो भी बुद्धु लगता है।**

(४) कज्जावडियं - Speak for purpose काम से ही बोलना चाहिए, **बिना काम के नहीं बोलना चाहिए** । Words are gems, Don't waste those

(५) अगव्वियं - Speak ego free. चाहे कितनी भी सुन्दर तथा कितनी भी सच्ची बात हो, परन्तु जब उसमें अभिमान के भाव छलकते हों, तो उन बातों का कोई इम्पोर्टेन्स नहीं रहता है। Ego **में भले ही बड़प्पन की फीलिंग होती हो, परन्तु इससे मनुष्य हमेशा निम्न ही प्रतीत होता है।** चाहे कितना भी बड़ा व्यक्ति हो, जब वह स्वयं अपना गुणगान करता है, तब अपनी महानता को गँवा देता है।

(६) अतुच्छं - हृदय को संकीर्ण और तुच्छ बनाए बिना जो शब्द नहीं बोले जाते, वे शब्द कभी नहीं बोलने चाहिए। किसी की कमजोरी, किसी की दुखती नस, किसी का मर्मस्थान, यह कभी बोलने जैसी वस्तु है ही नहीं। यह तो निगल जानेवाली वस्तु है। **किसी को तुच्छ बनाकर वास्तव में हम स्वयं ही तुच्छ हो जाते हैं।**

(७) पुव्विं मइ संकलियं - Think before you speak. सोच-विचारकर बोलना चाहिए। जबतक हम बोलते नहीं हैं, तबतक हम मालिक होते हैं और शब्द हमारे गुलाम होते हैं, लेकिन जैसे ही हम बोल देते हैं, वैसे ही शब्द हमारे मालिक बन जाते हैं और हम उनके गुलाम बन जाते हैं। बुद्धिमान व्यक्ति हमेशा बोलने से पहले विचार करते हैं, मूर्ख बोलने के बाद

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

विचार करते हैं "मैंने क्या कहा?" **बिना सोचे बोलने का सीधा यही अर्थ है कि निशान लगाए बिना तीर चला देना ।**

(८) धम्मसंजुत्तं - Speak suitable to religion. धर्म को सुशोभित करे, वैसा बोलना चाहिए। क्रोध में या मजाक-मस्ती में कभी ऐसा नहीं बोलना चाहिए, जिससे हमारा धर्म लज्जित हो। समझदार ड्राईवर टेढ़े मेढ़े रास्ते पर हमेशा कार पर कन्ट्रोल बढ़ा देता है। **जब संयोग असामान्य हों, तब वाणी के ऊपर विशेष रूप से काबू रखने में ही समझदारी है।**

मेरी प्यारी बेटी,
मैंने कहीं एक घटना पढ़ी थी।
बहन की शादी के अभी तो हफ्ता भी नहीं बीता था,
तभी भाई को फोन आया,
"तेरी बहन को वापस ले जा,
हम सभी इससे परेशान हो गए हैं।"
भाई दौड़ते हुए पहुँचा।
अकेले में बहन को बुलाया और कहा
"धन्धे में बहुत नुकशान हुआ है,
ज्योतिषी ने कहा है कि तेरी बहन
सारा दिन सोने की चेन अपने मुँह में रखे,
तो बरकत आएगी...
लेकिन मैं तुम्हें यह सब कैसे ..."
बहन की आँखों में आँसू आ गए।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

"मेरे भाई, तुम्हारे लिए चेन तो क्या
जंजीर भी मुँह में रखने के लिए तैयार हूँ।"
समधी को भाई ने जैसे-तैसे मना लिया ....
"एक सप्ताह देखो, फिर मैं अवश्य वापस ले जाऊँगा..."
एक सप्ताह के बाद फोन किया,
"अब कैसा है? लेने आऊँ क्या?"
"ना भाई ना, तुम्हारी बहन तो देवी है देवी,
उसने तो मेरे घर को स्वर्ग बना दिया है।"
सारा ससुराल इस बात पर एक मत था।

My dear,

कुछ स्त्रियाँ अपने संसार की कब्र अपनी जीभ से खोदती रहती है।
अमेरिका में एक धनी व्यक्ति की मृत्यु हो गई।
उसने अपनी सारी जायदाद अपनी पत्नी को दे तो दी थी,
परन्तु इसके लिए will में एक शर्त्त रखी थी,
"प्रत्येक वर्ष मेरी श्रद्धांजलि पर
अपने शहर के सभी समाचारपत्रों में यह प्रकाशित करना होगा कि
"यदि **मैंने अपनी जीभ छोटी रखी होती,**
तो मेरा पति और अधिक जीता।"

What did she achieve my daughter?

पुराने जमाने में चूल्हा फूँकने के लिए फूँकनी का उपयोग किया जाता था।
निरंकुश वाणी ऐसी फूँकनी है, जो सारे घर-संसार को जलाकर राख कर

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

देती है।

टॉल्स्टॉय ने अपनी डायरी के एक पन्ने में लिखा था -

"एक दिन भी यदि मेरी पत्नी ने मुझे मीठे शब्द कहे होते,

तो उसे याद कर मैं जीवन भर आनन्द मना सकता था।"

छगन को एक दिन शान्ति की अत्यन्त आवश्यकता थी।

परन्तु उसकी पत्नी बिना कुछ सोचे-समझे

बस बोले ही जा रही थी...

"मुझे एक बात का जवाब दो ना?

डॉक्टरों में Eye specialist होता है।"

Ear specialist तथा Teeth specialist होता है।

Heart specialist और Skin specialist होता है।

इसीप्रकार Tongue specialist क्यों नहीं होता है?"

छगन ने कलेजे पर हाथ रखकर कहा-

"जीभ का Treatment सम्भव ही नहीं है।

उसके डॉक्टर को हमेशा अपयश ही मिलता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

SILENCE

बेटा, हमेशा शोरगुल मचाती हुई इस दुनिया को पता नहीं है

कि मौन में कितना आनन्द है!

शेक्सपियर ने लिखा है-

Silence is the perfectest herald of joy,

I were but little happy,

If I could say how much.

मेरी प्यारी बेटी,

मौन आत्मा की मातृभाषा है। इसमें आत्मा को जितनी सुविधा और अनुकूलता रहती है, उतनी और कहीं नहीं रहती।

मनुष्य अपनी भूलों को ढँकने के लिए या अपने अधूरेपन को छुपाने के लिए भी हमेशा बोलता रहता है।

लेकिन वह एक बात भूल जाता है, कि वाचालता भी एक प्रकार की भूल और अधूरापन है।

नीतिशास्त्र में लिखा गया है-

मौखर्यं लाघवकरं - अधिक वाचालता की आदत से तुच्छता आती है।

मौनमुन्नतिकारणम् - मौन से उन्नति होती है।

मुखरं नूपुरं पादे - झांझर आवाज करता है, इसलिए पैरों में पहना जाता है।

कण्ठे हारो विराजते - हार मौन है, इसलिए गले की शोभा बनता है।

मेरी लाडली,

रमण महर्षि ने सच ही कहा है

"मौन सर्वोत्तम भाषा है"

मूर्ख व्यक्ति जिस अवसर पर उछल पड़ता है, टूट पड़ता है, बेफाम शब्दों

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

की मार चलाता है।

ऐसे अवसर पर बुद्धिमान व्यक्ति मौन रहता है।

मेरी प्यारी बेटी,

ऐसे नाज़ुक पलों में मौन रहना,

किसी भी व्यक्ति को खरीद लेने जैसा है।

मौन का Max. benefit उसे समय पर मिलता है।

दुनिया का कोई भी व्यक्ति बहुत आसानी से समझ जाता है, कि ऐसे समय में मौन रहनेवाला मनुष्य कितना महान् होगा!

एक कहावत है-

एक चुप सौ को हरावे ।

चाणक्य तो इससे भी आगे की बात कहता है-

मौने च कलहो नास्ति ।

मौन हो तो झगड़ा या विवाद की समस्या नहीं रहती है।

बेटा,

दुनिया कहती है, कि एक स्त्री के लिए चुप रहना बहुत कठिन है।

शेक्सपियर ने एक नाटकीय संवाद में लिखा है -

Don't you know? I'm a woman.

When I think, I must speak.

परन्तु मुझे विश्वास है कि तुम इस बात को गलत सिद्ध करके दिखाओगी।

My dear,

तुम्हारे सम्पर्क में आनेवाली स्त्री को तुम आसानी से स्वीकार कर सकती हो।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इसलिए तुम इस बात को हमेशा याद रखना।

और नापसन्द शब्दों को हल्के से लेना।

लेकिन जब तुम्हारे विषय में यह बात हो,

तो इस बात का कोई अस्तित्व नहीं रहने देना।

Let Silence be your power my daughter.

Love you very much.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

SOCIETY

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बेटा,

समाज में आज भी कुछ ऐसे व्यक्ति हैं, जो रामायण के धोबी का रॉल करते हैं।

बिल्कुल निर्दोष स्त्री को भी वे बदनाम कर सकते हैं।

तो फिर जो लड़की स्वच्छंदतापूर्वक व्यवहार करती हो,

उसके लिए तो क्या नहीं हो सकता है ?

जिस लड़की का एक बार नाम बिगड़ जाता है,

उसे अच्छा लड़का मिलना मुश्किल हो जाता है।

सत्या वा यदि वा मिथ्या, प्रसिद्धिर्जयिनी नृणाम् ।

प्रसिद्धि उचित हो या अनुचित, उसका असर जरूर होता है।

मेरी प्यारी बेटी,

बात मात्र 'धोबी' पर जाकर नहीं रुकती है।

हमारे आस-पास रावण और दुःशासन भी हैं।

आज की मीडिया ऐसे लोगों को पकड़ने के लिए अपनी सारी ताकत झोंक देती है।

जब कोई दुर्घटना घटित होती है, तो उसमें स्त्री के पक्ष में अन्य कारण भी होते हैं।

जैसे उसके आचार-विचार, व्यवहार, उसकी पोशाक, बात-चीत की आजादी, पुरुषों का सम्पर्क, जरूरत से ज्यादा घूमने-फिरने की आजादी, इत्यादि।

स्कूल-कॉलेजों में कुछ ऐसे आवारा युवक होते हैं,

जिनकी पहली पसन्द ऐसी लड़कियाँ होती हैं।

वे उन्हें विवाह का वचन देते हैं,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

फिर उसके साथ सम्बन्ध स्थापित करते हैं,

और फिर गन्ने के कूचे की तरह उसे निकालकर फेंक देते हैं।

लड़की सामाजिक रूप से बदनाम हो जाती है।

और उसके सिर पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ता है।

वह लड़का पैसेवाले घर का हो, या अच्छी कमाई करता हो,

तो उसके साथ अपनी बेटी का विवाह करने के लिए

लोग तैयार होते हैं।

लेकिन जो लड़की एक बार बदनाम हो जाती है,

उसके साथ विवाह करने के लिए कोई भी तैयार नहीं होता है।

मेरी प्यारी बेटी,

यह समस्या इतनी गम्भीर है कि इसमें वह लड़का लोफर या आवारा नहीं है, वह बहुत अच्छा लड़का है, संस्कारी लड़का है,

He is just a friend.

ये सारी बातें अर्थहीन हो जाती हैं।

तुम इस समय ऐसे Time-period से गुजर रही हो,

कि इस समय तुम्हारे द्वारा की गई एक छोटी सी भूल तुम्हें और मुझे जीवन भर का रुदन दे सकती है।

Will you believe my daughter?

लड़के की बात तो दूर की बात है,

इस उम्र में समवयस्क लड़कियों के साथ भी,

जरूरत से ज्यादा मिलना या एकान्त में मिलना, अच्छी बात नहीं है।

आज भी जापानी माता

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

अपनी बेटी के विवाह के दिन एक सीख देती है

कि **तुम भले Young हो,**

लेकिन तुम युवतियों की टोली में मत बैठना,

बल्कि बुजुर्ग महिलाओं के पास ही बैठने की आदत डालना।

बेटा,

स्त्री को यदि किसी कारण से घर से बाहर जाना पड़े,

तो अपनी माता जैसी स्त्रियों के साथ ही जाए।

ऐसा हमारी संस्कृति में कहा गया है।

मर्यादा से छिटकना बहुत ही सरल है, परन्तु मर्यादा से छिटकने के परिणाम से छिटकना सरल नहीं है।

संस्कृति के ऊपर हँसनेवाले, चौक-चौराहों पर उसका मजाक उड़ानेवाले और मर्यादा की धज्जियाँ उड़ाने के लिए स्त्रियों को उकसानेवाले तत्त्व एक भी स्त्री को उसके दुष्परिणाम से बचा सकते हैं क्या?

'बचा सकना' तो बहुत अच्छा शब्द है।

बाकी,

भूखे भेड़ियों के बीच तड़पती, पिसती, सिसकती हुई

कोमल कन्याओं की उन तत्त्वों को कोई परवाह नहीं होती है।

यदि होती, तो वे ऐसे धन्धे ही नहीं करते।

मेरी प्यारी बेटी,

यदि तुम्हारी मर्यादा किसीको पसन्द न पड़े, और वे लोग तुम्हें मणिबहन कहे, मात्र इतने से तुम्हें अपने लाईफ स्टाईल में चेन्ज कर देना कोई जरूरी नहीं है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तुम्हें अपना रिमोट उनके हाथों में क्यों दे देना चाहिए?

एक मणि बहन मेडोना बनने के बाद जिन दुःखों का सामना करती है, इसका अन्दाजा उन्हें नहीं है।

उन्हें यदि अन्दाजा भी हो, तो भी उन्हें इसकी कोई चिन्ता नहीं होती है।

Use your own brain my daughter,

लड़कियाँ ऐसे कोमेन्ट्स को मन पर ले,

और अपने ड्रेस, अपना बिहेवियर - सबकुछ चेन्ज कर दे।

तो फिर वे ही लोग

उसे 'चालु' का खिताब दे देते हैं।

बेटा,

हमारी पोशाक और हमारा व्यवहार

समाज में एक अलग इमेज खड़ी करते हैं।

इनसे आजाद होनेवाली लड़कियाँ अपने व्यक्तिगत जीवन में अनिच्छनीय स्वतन्त्रता प्राप्त करती होगी।

ऐसी सहज कल्पना लोगों को होती हैं।

इस स्थिति में उस लड़की की बदनामी हो और आवारा लड़कों के द्वारा उन्हें फँसाने के प्रयास किए जाएँ, ये दोनों स्वाभाविक हैं।

हो सकता है कि वह लड़की अपने व्यक्तिगत जीवन में अच्छी भी होगी,

लेकिन उसका कोई प्रमाणपत्र नहीं होता।

As a result,

She has to suffer.

She has to fight a horrible life-war

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मेरी प्यारी बेटी,

समाज की अपेक्षा है कि तुम अपनी मर्यादा में रहो।

पूर्ण मर्यादा में,

और इसमें कुछ गलत भी नहीं है।

मर्यादा समाज के भी हित में है। व्यक्ति के अपने हित में भी है।

और व्यक्ति के परिवार के हित में भी है।

बेटा,

समाज को कभी तिरस्कृत मत करना,

हमारी परम्परा की समाज व्यवस्था

मानव स्वभाव और सुखी जीवन के बिल्कुल अनुकूल है।

आज गाँव का पढ़ा-लिखा वर्ग शहर में जाता है।

तो समाज और जाति से अलग होने के लिए बहुत प्रयत्न करता है।

लेकिन जब प्रश्न वहीं आकर खड़ा रहता है, तब वह समाज को ढूँढता है।

आज भी ऐसे बहुत से समाज हैं, जो स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा, न्याय आदि अनेक विषयों में सरकारी या व्यक्तिगत संस्थाओं की अपेक्षा अनेकगुणा अच्छी सेवाएँ दे रहे हैं।

वह भी निःस्वार्थ भाव से।

इन सेवाओं के लोभ से समाज को अपनाओ,

यह मैं नहीं कहता, यह तो समाज के योगदान की बात है।

मेरी प्यारी बेटी,

वास्तव में तो समाज की शरम

मानव को दानव बनने से रोकती है,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और व्यक्तिगत-समष्टिगत अनेक अनहोनियों से बचा लेती है।

यही समाज का सर्वोत्कृष्ट योगदान है।

समाज के अभाव में पैदा हुए दानवों ने विदेशों में कैसा हाहाकार मचाया है! यह जब तुम जानोगी तो सचमुच चौंक पड़ोगी।

हकीकत में परिवार और समाज के बिना

दो ही व्यक्ति सुख से जी सकते हैं,

एक - पागल

और दूसरा - योगी।

बेटा,

एक ओर हमारे पास

सदियों की परंपरा से आया हुआ एक स्वस्थ समाज है।

और दूसरी ओर नए विचारों की बाढ़ है।

मुझे तुम पर भरोसा है बेटा,

कि तुम इसमें डूब नहीं जाओगी

तुम कभी भी उद्दंड लडकियों की तरह

Just for fun

Enjoy and forget

सिर्फ मनोरंजन के लिए आनंद लें और भूल जाएँ,

ऐसी छिछोरी प्रवृत्ति का शिकार नहीं बनोगी

जो बात गंभीरता और जिम्मेदारी का विषय है

इसे तुम इस तरह से ही समझोगी।

Am I right my dear?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

O my wise daughter

यह नई विचारधाराओं की बाढ़ है

Live in relationship

एक आधुनिक लड़की शादी नहीं करना चाहती और पति नहीं चाहती

She argues - Why Responsibility?

जिम्मेदारी नहीं चाहिए,

उससे तो Live in relationship क्या गलत है?

एक छत के नीचे पति-पत्नी के रूप में साथ रह सकते हैं।

किसी भी रिवाज/शर्त का पालन न करें।

इसका एक और आधुनिक रूप है।

Marriage live apart arrangement.

अलग अलग रहना।

सप्ताह में थोड़े दिन साथ में व्यतीत करना।

Long term commitment भी नहीं।

लेकिन बेटा,

इसमें स्त्री का शोषण नहीं होगा इसकी कोई गारंटी है ?

क्या सन्तान नहीं होगा ?

यदि होगा तो उसका भावी क्या ?

मेरी प्यारी,

इस पद्धति से विदेश में परिवार, समाज, देश-सब गड्ढे में चले गये हैं

आत्महत्याएँ बढ़ गई हैं पागलपन और मानसिक बीमारियों में वृद्धि हुई है

और अपराध भी पहले से ज्यादा बढ़े हैं

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बेटा,

पौधों को बार-बार उखाड़ोगी तो उसकी जड़ें गहरी नहीं होंगी

फल-फूल नहीं आएँगे पौधे स्वस्थ नहीं रहेंगे वे तुरन्त मुरझा जाएँगे

एक बात सदैव याद रखना

कि **मानव स्वभाव मशीन की तरह है**

नये पात्र के साथ सेट करना

और पुराने लोगों को भूलना संभव नहीं है

विदेशों में स्वस्थ और टिकाऊ विवाह की कमी

सबसे ज्यादा किसको दुःखी करता है? पता है?

वह है औरत

६०-६५ साल की उम्र में भी वह परिश्रम करती है

घर-के अनिवार्य खर्च देती है

और सतत् असावधानी का अनुभव करती है

जब पुरुष उसको निकाल देता है तब उसको निकल जाना पड़ता है

निकलकर कहाँ जाना? इस प्रश्न का उसके पास कोई उत्तर नहीं है

शायद उसकी जिंदगी खत्म हो जाएगी

फिर भी इस सवाल का उत्तर नहीं मिलेगा।

वजह

वह जहाँ भी जाएगी वहाँ असुरक्षा की तलवार इसके सिर पर लटकती ही रहेगी

आधुनिक औरत को मालुम नहीं है कि परावलंबी होना जिस प्रकार पुरुष के लिए कलंकरुप है उसी प्रकार स्वावलंबी होना औरत के लिए कलंकरुप है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

दूसरे शब्दों में कहें

तो **एक औरत के लिए**

परावलंबन ही वास्तविक अर्थ में स्वावलंबन होता है

नौकरी करता हुआ आदमी शेठ के अधीन रहता है और उसके द्वारा आर्थिक लाभ प्राप्त करता है

उसी प्रकार औरत भी पति के अधीन रहकर

शील की सुरक्षा का लाभ प्राप्त करती है

नौकरी करनेवाले आदमी की जिस प्रकार पराधीनता नहीं देखी जाती है

बल्कि सिर्फ लाभ ही दिखता है

उसी प्रकार इस विषय में भी समझना जरुरी है

मेरी प्यारी

तुमने अक्सर News में पढ़ा होगा

कि कॉलेज की लड़कियों को किसी नराधम ने पकड़ा

उसका बॉयफ्रेन्ड भाग गया और वह बेचारी उसका शिकार बन गई

Why did he run away?

Yes my daughter

Find out the answer

कारण कि उस बॉयफ्रेन्ड को

उस लडकी की जिम्मेदारी जैसा कोई अहसास ही नहीं था

उसके विपरीत

ऐसे thousands of examples हैं

जिसमें पति ने अपनी पत्नी की सुरक्षा के लिए

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

अपनी जान की बाजी लगा दी हो ।

या अपनी जान भी दे दी हो ।

शादी बंधन नहीं है बेटा

वह बंधन है तो नराधमों के लिए

वह उस औरत का शोषण करते हुए उसे रोकते हैं

जबकि औरत के लिए विवाह एक सुरक्षा है

पूर्ण सुरक्षा

पति जिसके लिए अपनी जान भी देने को तैयार है

उसके ऊपर थोड़ा बहुत आधिपत्य का भाव तो रखेगा ना?

इसमें गलत कहाँ है?

यदि ऐसा है तो भी औरत ही मुनाफे में है

पति को परमेश्वर मानने की अपनी संस्कृति जिसकी समझ में नहीं आती है उसकी नासमझी का क्षेत्र बहुत बड़ा है ।

मिथ्या गुमान में वे लाखों प्रकार की गुलामी स्वीकार कर लेते हैं

मेरी प्यारी

शादी एक महत्वपूर्ण व अर्थपूर्ण सम्बन्ध है

इसको सफल बनाया जा सकता है

तुम्हें शायद मालुम नहीं होगा

विवाह तो ज्योतिषशास्त्र का मुहूर्त–सम्बन्धी शब्द है

हम जिसे लग्न कहते हैं

इसके लिए सही शब्द है **'विवाह'**

वि+वह् धातु से यह शब्द बना है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

जिसका अर्थ होता है विशेष रूप से वहन करना–उठाना

इस सन्दर्भ में पति के लिए समानार्थी शब्द है – **'विवोढा'**

जिसका अर्थ है विशेष रूप से वहन करनेवाला

एक पुरुष एक स्त्री की सारी जिम्मेदारियाँ अपने सिर पर ले ले इसका नाम है विवाह

आधुनिक औरत जिसे स्वतंत्रता समझती है

इसकी कीमत वह सारी जिम्मेदारियाँ अपने सिर पर लेकर चुकाती है

इन जिम्मेदारियों को उठाना इसके लिए वास्तव में सम्भव ही नहीं होती है

बेटा

वैवाहिक जीवन औरत के लिए स्वर्ग है

साध्वी संन्यासिनी को छोड़कर

अपरिणीत स्त्री नरक की यातनाएँ भोगती हैं

विदेशों में ऐसे लाखों उदाहरण हैं

यह भार कौन उठाए?

ऐसी मेन्टालिटी के कारण वहाँ के पुरुष विवाह ही नहीं करते हैं

प्रेम के भावावेश में कभी कोई अपनी गर्लफ्रेन्ड को मैरेज के लिए प्रपोझ कर दे

तो वह लडकी खुशी के मारे चीख पड़ती है।

तब कितनी उदासी का प्रतीक होती है यह खुशी?

तू समझ रही है ना बेटा

अपने यहाँ भी इन विचित्र परिस्थितियों ने

प्रवेश करना शुरु कर दिया है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

शादी के लायक पुरुष हो, फिर भी
पाश्चात्य देशों की अन्धी दौड़ में
ऐसी दलील करनेवाली औरतें दिखती हैं
जो कहती हैं कि 'शादी की क्या जरुरत है?'
इस प्रश्न का सही उत्तर उसे मिल जाता है
लेकिन तबतक बहुत देर हो चुकी होती है
एक सुखी और स्वस्थ वैवाहिक जीवन प्रारम्भ करने की योग्यता
वह औरत खो चुकी होती है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

CHARACTOR

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बेटा

पवित्र आचरण सफल वैवाहिक जीवन की सीढी है

जिस कन्या को ये बातें देर से समझ में आती हैं

वह कन्या

माता-पिता के लिए एक समस्या बनकर रह जाती है

आत्महत्या...किसी केनाल में डूबना....किसी मकान की छत से कूदना गाड़ी के नीचे आकर आत्महत्या कर लेना.... फांसी लगा लेना....ज़हर पी लेना।

ये सारी घटनाएँ लगभग स्त्री-पुरुषके चारित्रिक प्रश्नों के कारण घटित होती हैं

मेरी प्यारी

एक सूत्र तुम अपने जीवन में हमेशा याद रखना

If Wealth is lost, nothing is lost.

If Health is lost, something is lost.

But,

If character is lost, everything is lost.

बेटा,

आज के समय में कुछ ऐसी लड़कियाँ हैं,

जिन्हें 'महत्वाकांक्षा' नाम की बीमारी लगी हुई है।

वह शीघ्र मंज़िल पाना चाहती है।

बहुत ज्यादा रुपया, प्रसिद्धि और स्टेटस चाहती है,

और वह भी चरित्र की कीमत पर।

उसके मन में ऐशो-आराम, सुख-सुविधा और रुपये-पैसे की कीमत बहुत ज्यादा होती है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कुछ पाने के लिए कुछ खोना पडता है

यही उसके जीवन की फिलोसोफी है

वह बहुत सहजता से सोचती है

Give & take इसमें क्या गलत है?

सीढियाँ चढ़कर ऊपर जाना

उससे तो यह सेक्स-एस्केलेटर क्या गलत है?

My dear,

They don't know, what's not wrong here.

गलत रास्ते से मिली हुई सफलता या संपत्ति हमेशा लघु अवधि की होती है

प्रसिद्धि के पीछे दौड़ते हुए शायद गाड़ी और बंगला मिलता है

लेकिन परिवार से... शान्ति से ... स्वस्थता से

और सच्चे सुख से वंचित रह जाते हैं

मेरी प्यारी

सफल और धनी व्यक्ति की व्याख्या

हमेशा बदलती रहती है

सबसे ज्यादा संपत्ति पानेवालों की सूची में

हर साल बदलाव होते रहते हैं

आज बॉलीवुड का सुपरस्टार कोई और है

तो कल कोई और होगा।

जो इस रेस में उतरते हैं

और जीवनभर दौडते ही रहते हैं

वो भी कितने अनिच्छनीय समाधानों के साथ

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तो इस रेस में उतरने की अपेक्षा श्रेष्ठ और उत्तम बनना ही ज्यादा अच्छा नहीं है

सही अर्थों में इसे ही सफलता कहनी चाहिए,

और इसी को संपत्ति कहनी चाहिए।

शीलं हि विदुषां धनम्

शील ही विद्वानों का धन है

जो लोग समझदार होते हैं उन्हें तो केरेक्टर ही वेल्थ लगता है

Tell me my daughter, What's the beauty of a woman

You may say,

जो पसंद है वो सौदंर्य

Well, मनुष्य को क्या पसंद है?

क्या लिपस्टिक सौंदर्य है?

No, यदि ऐसा ही होता

तो लिपस्टिक लगाने से हर स्त्री सुन्दर बन सकती थी

क्या पफ पाउडर, ब्युटी क्रीम, फेसियल और आइब्रो ट्रीट ये सौन्दर्य हैं?

ना, यदि ऐसा ही होता

तो रेग्युलर इन सबका उपयोग करनेवाले के साथ

कोई डाईवोर्स नहीं लेता

क्या ज्वेलरी और वेस्टर्न ड्रेस ही सौंदर्य हैं?

ना, यदि ऐसा ही होता

तो वेस्टर्न कन्ट्रीज़ में इतने सारे मर्डर्स

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और इतनी सारी मारा–मारी नहीं होती

हम फिर वहीं आकर खड़े हैं।

What's beauty

ऐसा कौन सा तत्त्व है जिसकी गैरहाजरी सुन्दर को भी असुन्दर बना देती है

ऐसी क्या चीज है? जो नारी के सोलह शृंगार से भी बढ़कर है

ऐसा क्या हो सकता है? जो सही अर्थों में नारी का शृंगार करता है

My dear,

वह है शील और लज्जा

बृहत्कल्प आगम में कहा गया है

ण भूसणं भूसयते शरीरं

विभूसणं सील हिरी य इत्थीए

वास्तव में आभूषण शरीर को नहीं सजाते हैं बल्कि शील और लज्जा सजाते हैं।

औरत का सही आभूषण यही है

शील और लज्जा

मन, वचन और काया की पवित्रता ही शील है

सहज शरम ही लज्जा है

जिस औरत के पास ये दो शृंगार नहीं हैं वह चाहे दुनियाभर का शृंगार करे फिर भी सही अर्थों में वह कुरूप ही होगी।

मेरी प्यारी

तुम जिस समय में जी रही हो, उस समय में संस्कृति पर विकृति का आक्रमण हुआ है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

शील और लज्जा का मजाक उड़ाने की जैसे प्रतियोगिता चल रही है

और इसके साथ साथ ही दुनिया इसके दुष्परिणामों को भुगत रही है

मेरी प्यारी,

हमारी सांस्कृतिक जीवनशैली में शील और लज्जा जीवित थे सौंदर्य और शृंगार जीवित थे

और सही शब्दो में बताऊँ

तो नारीत्व जीवित था

बेटा

१०में से १० जाए तो ० बाकी रहता है

परन्तु

यदि नारी में से नारीत्व चला जाय

तो अनहोनी ही बाकी रहती है

यह एक कडवा सच है

कि आधुनिक लोग जिसको नारी स्वातंत्र्य कहते हैं

वह actualy नारी की स्मशानयात्रा है और यह माना हुआ - 'विकास' मुरदे के शृंगार से अधिक कुछ बचता नहीं है।

नारीत्व की हिंसा में मुझे वर्त्तमान समय का बहुत बडा अपराध दिखाई दे रहा है

जिससे शायद हमारा समग्र समाज सर्वनाश के खप्परमें नष्ट हो जाएगा

मेरी प्यारी

नारीत्व ही सामाजिक जीवन की संजीवनी है

वह जीवित होगी

तो समाज जीवित हो उठेगा।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

11 SECRETS

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

My dear,

I tell you 11 Secrets to protect our character.

(१) एकान्त त्यागः

शील के लिए Most dangerous है एकांत

अपने भीतर के पशु बाहर आने के लिए एकांत की राह देखते हैं

एकांत में मन को पवित्र रखने का प्रयास करना

काजल की कोठरी में रहकर स्वच्छ रहने का प्रयास करने जैसा है

That's almost difficult or impossible.

मेरी प्यारी,

बाइबल में तो साफ शब्दों में कहा गया है

कि जब परस्त्री और परपुरुष एकांत में बैठते हैं

तब उन दोनों के बीच शैतान आकर बैठता है।

हमारी संस्कृति कहती है –

अग्निकुण्डसमा नारी, – नारी अग्निकुंड के समान है

घृतकुण्डसमो नरः – नर घी के कुंड के समान है

संसर्गेण विलीयेत – संसर्ग होने से वह पिघलता है।

तस्मात् सङ्गं विवर्जयेत् – इसलिए संग का त्याग करना चाहिए

धम्मिल चरित्र नामक ग्रंथ में तो यहाँ तक कहा है –

आस्तां परपुमान् यूना – परपुरुष की बात तो जाने दो किन्तु अपने

पिता भ्राता सुतेन वा – जवान पिता-भाई-पुत्र भी

एकाकिना सहैकान्ते – अकेले हों तो उनके साथ एकांत में

न स्थातव्यं कुलस्त्रिया – कुलीन स्त्री को नहीं रहना चाहिए

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मेरी प्यारी,

सत्य तो सत्य ही है

'इसमें क्या हुआ?' ऐसे लाखों तर्क भी सत्य को असत्य नहीं कर सकते

सत्य तो सूर्य है

उसके सामने धूल उड़ाओ

फिर भी वह तो 'वही' रहता है

इसलिए पुरुषों को ध्यान में रखकर प्राचीन शास्त्रों ने स्पष्ट कहा है कि

माता स्वसा दुहित्रा वा	सगी माता, बहन या बेटी (को)
न विविक्ताऽऽसनो भवेत्	साथ में एक आसन पर एकांत में नहीं बैठना चाहिए
बलवानिन्द्रियग्रामो	इन्द्रियाँ इतनी बलवान है कि
विद्वांसमपि कर्षति	समझदार को भी गलत रास्ते पर ले जाती हैं। (मनुस्मृति २-२१५)

This is the fact my daughter.

पवित्र से भी पवित्र संबंधों को एकांत रफा-दफा कर सकता है

तो फिर दूसरे व्यक्तियों के साथ एकांत तो कितना खतरनाक कहा जाता है

शायद 'खतरनाक' शब्द उसके लिए कम पड़ता है

महाकवि कालिदास से एक बार राजा ने पूछा

सबसे खराब क्या है ?

कालिदास चिन्ता में पड गए।

जवाब के लिए समय मांगा।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

घर आए चिंता से परेशान हो गये।

राजा के प्रश्न का उत्तर दिए बिना कोई उपाय नहीं था।

पिताजी को परेशान देखकर बेटी ने इसका कारण पूछा

कालिदास ने उसे सारी बात बताई।

बेटी कुछ नहीं बोली।

रात हो गई

कालिदास अपने कक्ष में अकेले थे

उनकी बेटी सोलह शृंगार सजकर वहाँ आई

सोलह कलाओं से चमकता हुआ आकर्षण

बिजली गिराए, ऐसा रूप

और इसमें भी एकांत

कालिदास मूढ बन गये,

बेटी से लिपटने के लिए दौडे,

उसी समय दीपक को बुझा दिया गया और

बेटी दौडकर वहाँ से भाग गई।

सुबह हुई

कालिदास अपना चेहरा ढंककर

अश्रु की धार बहा रहे थे

वहाँ बेटी आई

पिताजी को प्रणाम करके कहा

रोना मत पिताजी

कुछ भी नहीं हुआ है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

यह तो मैंने केवल आपके प्रश्न का उत्तर ढूँढ दिया है।

सबसे खराब है एकांत, कारण कि वह अच्छे से अच्छे व्यक्ति को भी खराब बना देता है

मेरी प्यारी,

पुरुष या औरत का किसी पुरुष के साथ का एकांत भी खराब है और किसी स्त्री के साथ का एकांत भी खराब है

और

व्यक्ति बिल्कुल अकेला भी हो तो वह एकांत भी खराब है।

पवित्रता को खतरे में रखकर फिर उसे बचाने की कोशिश करें

उससे लाख गुना बेहतर है

कि पवित्रता को खतरे में मत डालो।

बेटा,

कुछ नियमों के मामले में किसी प्रकार की लापरवाही मत करना

तो शील पालन आसान हो जाएगा

और नहीं तो उसके जैसा कुछ भी कठिन नहीं है

(२) सात्त्विक वांचन:

पढ़ना वही

कि जो अपने संस्कार की शोभा बढाए

और अपनी पवित्रता का पोषण करे

आज के News papers, Magazines, Novels etc.

अधिकतर संस्कार और पवित्रता के enemies होते हैं

मेरी प्यारी,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

पढना ऐसा, जिसे हम घर के सदस्यों के बीच घोषित कर सकते हैं

और

जिसे कोइ घोषित करे

तो हमें शर्मिंदा होने की जरूरत न पड़े।

बेटा,

हमारा गौरव उस भूमिका तक पहुँचने में है

जिसमें हमारे सारे विचार भी घोषित हो जाएँ

फिर भी अपने सम्मान को किसी प्रकार की खरोंच न आए।

बल्कि अपना सम्मान बढ़ जाए

लेकिन यह भूमिका कब मिलेगी?

जब हमारी सारी प्रवृत्तियाँ अच्छी हों

अच्छी प्रवृत्ति अच्छे विचारों की

एक मात्र आधारशिला है

आज भी इस तरह की सैकड़ों पुस्तकें मिलती हैं,

जो हमारे सद्‌गुणों की रक्षा करती हैं

हमारे दोषों को दूर करती हैं। जीवन जीने की नई शक्ति भी देती हैं और हमारी आत्मा का समुचित विकास करती हैं

My dear,

Good books are the nectar on the earth &

bad books are the most dangerous poison.

Always beware of those.

दूषित साहित्य मन को अस्थिर और चंचल बनाते हैं

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

प्रसन्नता को हर लेते है

नकारात्मक विचारों को जन्म देते हैं और नतीजा जीवन के हर क्षेत्र में मनुष्य को पीछे छोड़ देते हैं

यहाँ तक, कि उसका शरीर भी बीमार पड़ जाता है

My dear,

Nagative is nagative.

Actually

हम जिस लेखक के लेख पढते हैं

उसे हम अपने जीवन के निर्माण का कार्य सौंपते हैं।

हम जैसे साहित्य पढते हैं

वैसे साहित्य के अनुसार स्वयं को ढालने का प्रयास करते हैं।

जैसी-तैसी पुस्तकें पढना

यह एक प्रकार से स्वयं के साथ जुआ खेलने जैसा है।

इस जुए में हार निश्चित है

पढने की प्रेरणा और अभियान हमारे यहाँ बहुत चलाए जाते हैं फिर भी मात्र 'पढना' ही काफी नहीं है

Important matter यह है

कि तुम क्या पढते हो? कैसा पढते हो?

पुस्तक हमारा श्रेष्ठ मित्र है

यह बात Half truth है

Half truth यह है

कि अच्छी पुस्तक श्रेष्ठ मित्र है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और

इसमें अच्छी की व्याख्या खास समझने जैसी है

It dosen't mean - हमें बेहतर पसंद है

It dosen't mean - हमारे दोस्त को पसंद है

It dosen't mean - Best seller अच्छी है

It dosen't mean - जिसका Super marketing वह अच्छी है

My dear,

I give you a simple & perfect definition.

जो हमें अच्छा बना दे वही अच्छा

जो ऐसा नहीं है तो यह या तो बेकार है और या तो खराब है

यह या तो हमें बेकार बनायेगें और या तो खराब बनायेंगे

My dear,

So read the best & be the best

(३) सात्विक श्रवण :

अच्छा ही सुनना

'अच्छा' की व्याख्या वही, जो मैंने अभी कहा है

मेरी बेटी,

बिना सुर-ताल का संगीत यदि हमें आनंद देते हैं

तो वह या तो स्वयं सुर-ताल से रहित होते हैं

और या तो सुर-ताल से रहित हो जाते हैं

जो संगीत किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति के लिए सिर दर्द होता है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

वह संगीत जिसे पसंद हो, अच्छा लगे उसे कैसा आदमी मानना चाहिए?

कान में इयर-फोन डालकर घूमनेवाले लोगों की आज भी कमी नहीं है।

लेकिन यह लाखों रुपये का सवाल है-

What do you hear?

My dear,

Perhaps you don't know

भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रत्येक राग में एक विशेष क्षमता है।

ऋतु में परिवर्त्तन करने की Capacity

वातावरण को बदल देने की Capacity

मन को प्रफुल्लित कर देने की Capacity

तन को निरोगी कर देने की Capacity

एक एक राग कौन-कौन से रोगों को दूर कर सकती है, उसकी पूरी सूची मैंने देखी है।

शास्त्रीय रागों का चिकित्सा के रूप में उपयोग भी प्रारम्भ हो चुका है।

मेरी प्यारी,

जिस प्रकार विधिवत् शास्त्रीय राग..... विधिवत् शास्त्रीय संगीत

रोगों को दूर कर सकते हैं और मन को प्रसन्न कर सकते हैं,

उसी प्रकार

इस पद्धति से जिसे कोई लेना-देना नहीं है,

ऐसा संगीत रोगों को पैदा भी कर सकता है।

और मानसिक स्थिति को डिस्टर्ब भी कर सकता है।

घर का सबकुछ आउट ऑफ डेट.... बेकार.....नीरस....लज्जाजनक

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और बाहर का सबकुछ सरस और सुन्दर

इस नासमझी के जो भोग बने हैं,

उन्हें पता नहीं है कि विदेशी रिसर्च ही शास्त्रीय और अशास्त्रीय संगीत के इन प्रभावों को प्रमाणित कर रहा है।

बेटा,

I know,

New generation आज Western Music के पीछे पागल है।

लेकिन उसे पता नहीं है, कि विदेशों में आज भी पागलखाने भरे पड़े हैं।

जिसमें इन बेढंगे नाच-गानों का तथा छिछोरे शब्दोंवाले गीतों का बहुत बड़ा योगदान है।

यह वस्तु ही इतनी विकृत है कि यह विकृति को ही जन्म देती है।

और फिर मनोचिकित्सकों के क्लीनिक्स में रोगियों की लाईनें लगती हैं,

अपराध बढ़ते हैं और लज्जाजनक नीच कृत्य भी बढ़ने लगते हैं।

Music हो, Speech हो या Live - face to face talk हो,

इसमें Spirituality होना बहुत जरूरी है।

तुम इसका आग्रह रखोगी, तो बहुत सारी अनहोनी से बच जाओगी।

मेरी प्यारी,

इनमें से बहुत सारी वस्तुएँ ऐसी हैं, जो अच्छे Friend-Circle से बहुत सरल हो जाती हैं।

जैसी तेरी सहेलियाँ होंगी, वैसी ही तुम भी हो जाओगी।

सात्विक अध्ययन के विषय में मैंने जो कहा है,

वे सभी सात्विक श्रवण के विषय में भी समझ लेना।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

(४) सात्त्विक दर्शन :

As above

I mean, जो हमें 'अच्छा' बना दे वह सात्त्विक दर्शन है।

देशी-विदेशी टी. वी. चैनल, सिनेमा, वीडियो, इन्टरनेट और मोडर्न नाटक इत्यादि

Most of इससे बिलकुल विपरीत काम करते हैं

मेरी प्यारी,

आज की दुनिया में एक बालक जब तक बड़ा होता है

तब तक हजारों या लाखों बार

खून, चोरी, बलात्कार और अत्याचार देख चुका होता है

Can you imagine?

ये सारे तामसी दृश्य इसके ऊपर कितना बुरा असर डालते होंगे?

अमेरिका की पाठशाला में हजारों लड़के गन लेकर जाते हैं

कब किसके दिमाग में भूत सवार हो जाए और धुआँधार गोलियाँ चलने लगे इसका वहाँ कोई ठिकाना नहीं है

इसका कारण टी.वी. है

युरोप के एक स्कूल में ही एबोर्सन और बेबीसीटर्स की व्यवस्था करनी पड़ी। इसका कारण टी.वी. है

आज के मनुष्य को ज्यादा से ज्यादा एग्रेसिव बनाने में

हद से ज्यादा ग्रीडी बनाने में

और स्वभाव से विचित्र बनाने में

टी.वी. का बहुत बड़ा हाथ है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

अमेरिकन टी.वी. को 'इडियट बॉक्स' कहते हैं।

टी.वी., कम्प्युटर आदि का उपयोग जैसे-जैसे बढ़ता है,

वैसे-वैसे मनुष्य की विचारशक्ति, कल्पनाशक्ति

और सर्जनात्मक शक्ति घटती जाती है।

In short वो इडियट बनता जाता है।

दुनिया के अधिकांश लोग

जिसे देखने में अपने जीवन के

लाखों घन्टे बर्बाद कर देते हैं,

सच्चे इन्टेलीजेन्ट लोग उनकी तरफ

नजर भी नहीं करते हैं।

'एपल' कम्पनी के फाउन्डर स्टीव जोब्स ने

आई फोन, आई पेड आदि के द्वारा

कम्युनिकेशन के क्षेत्र में गजब का परिवर्त्तन किया था।

उसके घर जानेवाले लोग ऐसी कल्पना करते थे कि

उसके घर की दीवालें टच-स्क्रीनवाली होंगी

और टाईल्स आई पोड की बनी होंगी,

लेकिन उनके घर की सादगी को देखकर वे स्तब्ध हो जाते थे।

स्टीव जोब्स की सन्तानों ने कभी भी उन साधनों का उपयोग नहीं किया था।

उसकी कम्पनी के रिसर्च डिपार्टमेन्ट के बड़े-बड़े इन्जीनियर

उनके बालकों को ऐसे स्कूलों में पढ़ने के लिए भेजते थे,

जहाँ कम्प्युटर होते ही नहीं थे।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इन सारे साधनों के भयानक स्थानों को वे भली-भांति जानते थे कि टी.वी. और इन्टरनेट का सबसे बड़ा भयानक स्थान है

कैरेक्टर का सत्यानाश

खुली सड़क पर जिस दृश्य को देखकर

एक सज्जन व्यक्ति लज्जा के कारण आँखें बन्द कर देता है,

उसी दृश्य को वही व्यक्ति परिवार के साथ शान्ति से देखता रहे

ऐसी बिल्कुल बेढंगी परिस्थिति का निर्माण टी.वी. ने किया है।

मनुष्य का मन संवेदनशील है।

उस दृश्य को देखता है

और उसके कुप्रभाव का अनुभव करता है।

यह असर

मानसिक व्यभिचार का स्वरूप धारण करता है

तब मनुष्य अपनी अमूल्य सम्पत्ति, अपना कैरेक्टर गँवा चुका होता है।

मेरी प्यारी,

मन की पवित्रता के लिए आँखों की पवित्रता अत्यन्त आवश्यक है।

जो दृश्य इस पवित्रता की धज्जियाँ उड़ा दे,

उस दृश्य के वाहक सभी साधनों की धज्जियाँ उड़ा देने में ही होशियारी है।

'उन साधनों का विवेकपूर्वक उपयोग करना चाहिए,'

इन आदर्शवादी बातों का कोई मतलब नहीं है।

जहाँ हर पल गिर जाने की सम्भावना है,

उस जगह पर जाकर सावधानी रखनी

ऐसा कहने की अपेक्षा ऐसी जगह पर मत जाना,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

यही कहना बेहतर है।

'मन' अत्यन्त चंचल है।

कमजोरी की तरफ झुक जाना इसका स्वभाव है।

स्मार्ट फोन जेब में हो और दो सेकेन्ड में गन्दगी दिखाने की क्षमता रखता हो,

यह स्थिति ही विवेक को नष्ट कर देती है।

कौन बच सकता है?

Better है कि स्मार्ट फोन रखें ही नहीं,

स्मार्ट फोन से ब्रेन केन्सर होता है।

ये बातें इतनी खतरनाक नही - जितनी 'Horrible' हकीकत यह हैं

कि ये सारे साधन कैरेक्टर को केन्सरग्रस्त करते हैं।

एक बार हिम्मत करके टी.वी. को तोड़ देना सरल है,

परन्तु हमारी सभ्यता को लज्जित कर देनेवाला दृश्य आने पर

चेनल बदल देना बहुत कठिन है।

स्मार्ट फोन फेंक देना सरल है,

परन्तु उसका विवेकपूर्वक उपयोग करना

Almost impossible है।

थियेटर में गटर फ्लो चालु हो जाए,

तब आँखें बन्द करके परमात्मा का ध्यान करना मुश्किल है।

लेकिन 'मैं कभी थियेटर में नहीं जाती हूँ'

इस निश्चय को टिकाए रखना सरल है।

My dear,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मैंने एक पुस्तक में पढ़ा था,

स्टार टी.वी. का मालिक रुपर्ट मरडोक अपनी सन्तानों को कभी भी स्टार टी.वी. देखने नहीं देता है।

ऐसी बातें सुनकर कई बार मेरा खून खौल जाता है।

Supose

तुम किसी डॉक्टर के पास गई हो,

डॉक्टर की बेटी को भी Same problem है।

Case हर प्रकार से same होने पर भी

वह डॉक्टर तुम्हें दूसरी दवा देता है,

और अपनी बेटी को दूसरी दवा देता है,

तो वह डॉक्टर तुमको कैसा लगेगा?

उसके द्वारा दी गई दवा तुमको कैसी लगेगी?

Now you can realize STAR T.V.

अब तुमको पता चलेगा कि वे सभी अपने स्वार्थ के लिए हमें मूर्ख बना रहे हैं। हमें अनेक प्रकार से लूट रहे हैं।

बेटा,

आज बहुत सारे पेरेन्ट्स ऐसे होते हैं,

जो स्वयं टी.वी. के साथ चिपके होते हैं

और सन्तानों को धमकाते हैं- अन्दर के कमरे में चले जाओ।

तुम्हारा एक्जाम है/तुम्हारा होमवर्क बाकी है।

कैसा लगेगा सन्तान को?

कैसा होगा घर का वातावरण?

कैसे होंगे पारिवारिक सम्बन्ध?

इडियट बॉक्स सचमुच में इडियट है

आज लोग रोते हुए बालक को टी.वी. के सामने बिठा देते हैं।

चेनल या टी.वी. जैसे शब्द सन्तानों को आते भी नहीं थे।

तभी से डिस एन्टीना लगा दिया जाता है।

बाद में वही सन्तान जब रात के बारह बजे तक

डिश एन्टीना का पूरा उपयोग करने लगे,

तब उसके पैरों के नीचे से धरती खिसक जाती है।

सन्तान का शरीर कमजोर हो जाता है।

उसके मन में गन्दगी भर जाती है।

उसमें मात्र सन्तानों का ही दोष नहीं होता है।

मेरी प्यारी,

तुम्हारी सन्तान को हर प्रकार से निस्तेज बनाना है या हर प्रकार से तेजस्वी बनाना है यह तुम्हारे हाथ में है।

सबसे जरूरी बात यह है कि तुम्हारा अपना तेज safe हो,

Totally safe.

बेटा,

रशिया की एक लड़की।

नाम तो अभी याद नहीं है।

लेकिन घटना अच्छी तरह याद है।

एक दिन उसकी बहन के जीवन को कुछ नरपिशाचों ने बरबाद कर दिया।

उस दिन वह लड़की खूब रोई।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसने मनोमंथन किया कि ऐसा क्यों हुआ?

इसके लिए वास्तव में जिम्मेदार कौन?

जवाब मिला- T.V.

उस लड़की ने T.V. के विरुद्ध जंग का एलान किया। हजारों लोगों को उसने T.V. के व्यसन से हमेशा के लिए मुक्त कर दिया।

मेरी प्यारी,

हमारे किसी स्वजन के साथ यदि ऐसा कुछ हो जाए, तो हमें T.V. के प्रति नफरत हो जाती है।

शायद अपराधी यह कहेगा, कि अमुक सीरियल/मुवी देखकर मैं आवेश में आ गया और मुझसे यह अपराध हो गया।

तो हमें उस सीरियल/मुवी पर उसके हीरो-हीरोइन के ऊपर कितना गुस्सा आएगा!

कल तक शायद वह अच्छे लग रहे होगे,

फिर भी आज हम उसके ऊपर थूकेंगे,

वह हमें हत्यारा प्रतीत होगा।

नीच और हल्कट लगेगा।

शायद उस लड़की की तरह

हम T.V.- Cinema के विरुद्ध आन्दोलन नहीं छेड़ेंगे

लेकिन

कम से कम हम तो उस गन्दगी से मुक्त हो ही जाएँगे।

तो सबसे बड़ा प्रश्न यह है

कि आज की तारीख में यही गन्दगी

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

लाखों लड़कियों के जीवन को बरबाद कर ही रही है।

क्या उसके प्रति हमारे मन में कोई भाव नहीं है?

वे सभी हमारे स्वजन नहीं हैं?

क्या कहता है हमारे देशप्रेम का संस्कार?

'सारे भारतवासी हमारे भाई-बहन हैं'

यह बात मात्र पाठ्यपुस्तकों की ही प्रतिज्ञा थी?

या हमारी भी प्रतिज्ञा थी?

मेरी प्यारी,

क्या हम इतने बड़े स्वार्थी हैं?

कि जो वस्तु लाखों नारियों के जीवन को उजाड़ देती हो,

उसमें हम अपना मनोरंजन ढूँढेंगे?

और ताली बजाकर उसका स्वागत करेंगे?

बेटा,

तुमको पता नहीं है,

आज का मनुष्य सुख के लिए टी.वी. और मुवी के

चक्कर में पड़ता है।

Wife force कर करके

सिनेमा का प्रोग्राम बनाती है।

तीन घन्टे तक पति-पत्नी उन दृश्यों को देखते हैं।

पति को हीरोइन पसन्द है।

पत्नी को हीरो पसन्द है।

अब जो पसन्द है, वह मिलनेवाली नहीं है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और जो मिली है, वह कभी पसन्द आनेवाली नहीं है।

Result?

रामायण और महाभारत।

When love is thin, faults are thik.

छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा,

अकारण झगड़ा। गृहक्लेश, मानसिक तनाव, मार-पीट, कोर्ट केस, तलाक,... आपघात।

करोड़ों घरों की सुख-शान्ति में आग लगाने का काम

इस गन्दगी ने किया।

लाखों तलाकों की जड़ में यही गन्दगी है।

जब भी कोई सज्जन इस गन्दगी को साफ करने के लिए आगे आता है,

तब

कुछ सनकी टाईप के लोग अभिव्यक्ति और स्वतन्त्रता के नाम पर

इसका विरोध करते हैं,

"मुझे क्या देखना है? यह मुझे निश्चित करना है।"

ऐसी अल्हड़ बातें करते हैं।

उन्हें पता नहीं होता कि वे खूनियों और बलात्कारियों को पैदा करने का पाप कर रहे हैं,

जो तात्विक दृष्टि से खून और बलात्कार करने से भी अधिक

निन्दनीय कृत्य है।

मेरी प्यारी,

व्यक्ति और समाज

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

दोनों का सुखकारक और हितकारक सात्विक दर्शन ही है। वह है परमात्मा का दर्शन। सत्संग का दर्शन। कुदरत के प्रेरणादायी दृश्यों का दर्शन।

बेटा,

तुम्हारी संगति में आकर तुम्हारी दो-चार सहेलियाँ भी

टी.वी., मुवी, नेट और मोबाईल से मुक्त हो जाएँगी,

तो मेरे मन में तुम्हारे प्रति गौरव बढ़ जाएगा।

कम से कम

तुम स्वयं यदि इन गन्दगियों से दूर रहोगी,

तो यह भी हमारे लिए एक बहुत बड़ी सौगात होगी।

जीवन भर के लिए एक गहरे आत्मसन्तोष की।

छगन पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराने गया

चोरी हुई वस्तुओं की

लम्बी सूची लिखते-लिखते पुलिस थक गया।

उसे संक्षेप में लिखाने के लिए कहा,

छगन ने कहा-'टी.वी. के अलावा सब चोरी हो गया।'

पुलिस ने सहज ही प्रश्न किया-'T.V. क्यों नहीं चोरी हुई?'

छगन ने कहा -'वह तो मैं देख रहा था।'

बात मात्र छगन की नहीं है, बल्कि सारी दुनिया की है।

T.V. पर कोन्सन्ट्रेट होने के कारण सभी जगह से उसका ध्यान हट गया है। पर इसका उसे कोई अन्दाजा नहीं है।

वह सचमुच लुट रहा है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उन परिणामों को भोग रहा है।

कभी-कभी उसके कारणों को समझता भी है।

परन्तु गुटखा के व्यसनी की भांति

उसे छोड़ नहीं सकता है।

एन्टरटेनमेन्ट के नाम पर ऐसी होरीबल ट्रेजेडी के शिकार आज दुनिया के अधिकांश लोग हो चुके हैं।

और नए-नए साधनों के प्रयोग से

यह ट्रेजडी बढ़ती ही जा रही है।

लाखों लोग जिसे Like करते हैं।

वह कभी Like Comment करने नहीं बैठता है।

साधारण लोग यदि यह मूर्खता भरा काम कर रहे हैं।

तब असाधारण लोग अपने काम में व्यस्त होते हैं।

Uplift Yourself my daughter,

अन्तर के सहज आनन्द और सात्विकता की सहज संवेदना जो सुख प्रदान कर सकती है,

वह दुनिया भर के चैनल्स या मूवी आदि प्रदान नहीं कर सकते हैं।

(५) सात्विक भोजन :

तम्बाकू, गांजा, अफीम, तथा शराब जैसे नशीले पदार्थों से लेकर

चाय-कॉफी जैसे केफी पदार्थों में विकारक तत्त्व होने के कारण

वे शरीर के सभी धातुओं को विकारी बना देते हैं।

इतना ही नहीं

बल्कि उनका सूक्ष्म तत्त्व मन की गहराईयों तक पहुँचता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और मन और आत्मा को विकारी बना देता है।

ये पदार्थ एक प्रकार के ज़हर हैं।

इन पदार्थों का सेवन करनेवाले

कभी भी शारीरिक, मानसिक या आत्मिक आरोग्य

प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

शुद्ध आहार भी आवश्यकता से अधिक खाओगी

या अच्छी तरह से चबाए बिना खाओगी

तो वह ज़हर का उत्पादन करने के समान है।

शक्कर-घी-तेल-मशाले का अधिक उपयोग

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए घातक सिद्ध होता है।

अधिक मिष्टान्न और तली हुई वस्तुएँ

फूर्त्तीले शरीर और स्वस्थ-पवित्र मन के दुश्मन हैं।

सात्विक भोजन के विषय में प्रारम्भ में जो बाते कही गई हैं,

उन सारी बातों को यहाँ भी ध्यान में लेने योग्य है।

That's th way to protect our charater.

(६) सात्त्विक वेश :

I told you so many points

About good dress.

My dear,

फिर भी यह इतना Important matter है।

कि अभी भी इस विषय में कुछ कहना चाहता हूँ।

एक लड़की घर से कॉलेज तक जाती है,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तब तक में रोज कितने लड़के उसके सामने कोमेन्ट्स करते हैं, सीटी बजाते हैं।

लड़की ने अपने पापा से शिकायत की।

पापा ने पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई।

इन्स्पेक्टर ने अपने आदमियों को

सादे कपड़े में On the way खड़ा कर दिया।

उन लोगों ने तो लड़को को पकड़ लिया।

उन्हें पुलिस स्टेशन ले जाया गया।

इन्स्पेक्टर ने उन लड़कों को कड़ी चेतावनी दी।

और उनसे दण्ड लेकर उन्हें छोड़ दिया।

दूसरे दिन पुनः यही स्थिति उत्पन्न हुई।

इन्स्पेक्टर ने उस लड़की के पिता से कहा कि

"आपकी लड़की जो कपड़े पहनकर

कॉलेज जाती है, उन्हीं कपड़ों में उसे यहाँ बुलाओ।"

लड़की आई।

इन्स्पेक्टर ने उसे देखा

और देखते ही उसे कारण समझ में आ गया।

लड़की के पिता से उसने कह दिया,

कि **"आपकी लड़की कॉलेज जाती है या 'फैशन-शो' में ?**

यदि ऐसे पोशाक पहनकर कॉलेज जाएगी तो

इस तरह की घटनाएँ तो होंगी ही।

इसके लिए शिकायत दर्ज करने का कोई मतलब नहीं है।"

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मेरी प्यारी,

बलात्कार के एक ऐसे ही केस में

जज ने युवती को दोषी सिद्ध कर दिया था और उसे दण्डित किया था।

जज ने कहा था,

कि "इस युवक की जगह यदि मैं होता, तो शायद मैं भी यही कर बैठता।"

बेटा,

बात मात्र दोषारोपण की नहीं है।

Character की है।

भरी सड़क पर मशीनगन से धुआँधार गोलियाँ चलाते हुए आतंकवादी और वासना उत्तेजक पोशाक पहननेवाली लड़की इन दोनों के बीच में वास्तव में कोई अन्तर नहीं है।

शायद

उस आतंकवादी की अपेक्षा अधिक दोषी और अधिक भयंकर है वह लड़की।

जो स्वजनों से लेकर

समग्र समाज की आँखों में वासना का विष डालती है।

और उसकी भाव-हत्या करती है।

हत्या से तो मात्र व्यक्ति मरता है,

लेकिन भाव-हत्या से समग्र संस्कृति मरती है।

वह संस्कृति

जो करोड़ों लोगों की सुख-शान्ति थी।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

Shameless dress

मात्र अपने ही character का Risk नहीं है,

बल्कि सम्पूर्ण समाज के character का Risk है।

यह माफ करने योग्य अपराध नहीं है, इसकी सजा कुदरत देती है।

(७) सात्विक लज्जा :

लज्जा दो प्रकार की होती है।

पहली-अनुचित लज्जा।

जो लज्जा तुमको मर्यादापूर्ण व्यवहार करने

और मर्यादापूर्ण वेश पहनने में संकोच पैदा करे

वह अनुचित लज्जा है।

आज बहुत सारे अच्छे घर की लड़कियों को

यह लज्जा सताती है।

सारी लड़कियाँ Dress से लेकर

Behaviour तक में अनेक प्रकार की आजादी का उपयोग करती है।

और यदि मैं इन सारी बातों में Limit में रहूँगी तो मैं कैसी लगूँगी?

सभी मेरा कितना मजाक उड़ाएँगे?

शायद मुझे चिढ़ाएँगे...

इस प्रकार की लज्जा अनुचित लज्जा है।

यदि सारा गाँव चोरों का हो,

तो क्या एक इमानदार को भी शरम के कारण चोर बन जाना चाहिए?

या सम्मानपूर्वक अपनी इमानदारी को बचाकर रखना चाहिए?

हो सकता है कि सारे चोर उसका मजाक उड़ाएँ।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

'भगत' कहकर उसे चिढ़ाएँ,

लेकिन जो प्रामाणिक है, वह इस बात को अच्छी तरह समझता है,

कि यह एक प्रकार से अपनी चोरी का बचाव है।

एक प्रकार की ईर्ष्या है।

दूसरों के सद्गुणों के प्रति असहिष्णुता है।

किसी के चढ़ाने से हम अपनी सम्पत्ति को छोड़ नहीं देते हैं

तो फिर सद्गुणों को क्यों छोड़ देना चाहिए।

वह तो सम्पत्ति की अपेक्षा लाखों गुणा अधिक मूल्यवान है।

अनुचित लज्जा को शास्त्रों में कुदाक्षिण्य कहा गया है।

जिसके कारण अच्छे व्यक्ति का जीवन भी खराब हो जाता है।

My dear,

When a little voice inside you says No.

Firmly say No.

यह शरम का विषय ही नहीं है।

यह तो निश्चलता और निर्भयता का विषय है।

इन बातों में किसी की लाज-शरम में नहीं बह जाना चाहिए।

वह लाज-शरम अनुचित लज्जा है।

मेरी प्यारी,

कभी रास्ते पर जाते हुए हाथी को तुमने देखा है?

कुत्ते चाहे कितना भी भौंकें,

हाथी अपनी चाल में ही चलता रहेगा। मानो कुछ हुआ ही न हो।

हाथी चले बजार, कुत्ता भूके हजार

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कुत्तों को किसी प्रकार का महत्त्व देने की
उसे कोई आवश्यकता नहीं है।
क्योंकि वे कुत्ते हैं और वह हाथी है।
दुर्जन कितना भी भौंकें बेटा,
परन्तु तुम हाथी बनकर रहना।
उसकी हमेशा उपेक्षा करना,
लेकिन अनुचित लज्जा में बहकर
अपने सद्गुणों को मत छोड़ना।

दूसरी लज्जा है **सात्विक लज्जा**
उचित लज्जा।
जो हमें अनुचित कार्य करने से रोकती है,
जो हमें अपनी सभ्यता में सुरक्षित रखती है।
बेटा,
उचित लज्जा ही हमारे जीवन भर की सम्पत्ति है।
वही हमारा सर्वस्व है।
जो फ्रेन्ड, जो बुक्स, जो साईट, जो एटमोसफियर
इस लज्जा को तोड़ दे।
उससे तुम हमेशा १०० फुट दूर रहना।
बृहत्कल्प आगम में कहा गया है –
लज्जाविणासे व स किं न कुज्जा ?
एक बार इस लज्जा का विनाश हो गया,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

फिर तो वह व्यक्ति कौन सा गलत काम नहीं करेगा?

मेरी प्यारी,

दुनिया जिसे Bold कहती है,

उसके जीवन में इस सात्विक लज्जा का

पूरा दीवाला निकल चुका होता है।

उसके जीवन में निम्न कोटि की सारी सम्भावनाएँ खुली होती हैं।

और मुझे कई बार तो ऐसा लगता है।

कि आज के लोग शाब्दिक छल में फँस गए हैं।

यदि प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति के लिए

सही शब्दों का उपयोग प्रारम्भ हो जाए

तो कितनी सारी Misunderstanding दूर हो जाएगी।

बेटा,

लज्जा स्त्री का आभूषण है,

उससे भी अधिक यदि कहा जाए तो

लज्जा स्त्री का स्वरूप है।

लज्जा यदि चली जाए तो

तो स्त्री 'स्त्री' के रूप में मिट जाती है।

चाणक्यनीति में कहा गया है -

असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः असन्तुष्ट ब्राह्मण नष्ट हो जाते हैं।

सन्तुष्टाश्च महीभुजः ।। सन्तुष्ट राजा नष्ट हो जाता है।

सलज्जा गणिका नष्टा लज्जायुक्त वेश्या नष्ट हो जाती है।

निर्लज्जाश्च कुलाङ्गनाः ।।८-१७।। निर्लज्ज कुलीन स्त्री नष्ट

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

हो जाती है।

बृहद्धर्मपुराण में कहा गया है –

गृहेषु तनया भूषा, घर की शोभा सन्तान है।

भूषा संसत्सु पण्डिताः ।। विद्वान सभा की शोभा हैं।

सुबुद्धिः पुंसु भूषा स्यात्, सद्बुद्धि पुरुषों की शोभा है।

स्त्रीषु भूषा सलज्जता ।।४-३० ।। लज्जा स्त्रियों की शोभा है।

अपण्डितो मृतो विप्रो, – जिस ब्राह्मण में विद्वत्ता नहीं है, वह मुरदे के समान है।

मृतो यज्ञो ह्यदक्षिणः । – जिस यज्ञ में दक्षिणा नहीं है, वह मुरदा के समान है।

मृता सभा सुधीहीना, – जिस सभा में विद्वान नहीं हैं, वह मुरदा के समान है।

मृता नारी गतत्रपा ।।४-३१ ।। – जिस स्त्री में लज्जा नहीं, वह मुरदे जैसी है।

इसीलिए नीतिशास्त्रों में

स्त्री को नहाने-धोने के लिए नदी किनारे न जाने की सलाह दी गई है।

कारण कि ऐसा करने से लज्जा का नामोनिशान नहीं रहता है।

हितशिक्षा छत्रीशी में कहा गया है –

नावण धोवण नदी किनारे जाता निर्लज्ज थईए रे ।

मेरी प्यारी,

जो बात नदी किनारे जाने के लिए कही गई है,

वही बात स्वीमिंग पुल, वाटर पार्क, टेनिस क्लब तथा अन्य स्थानों के

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

लिए भी समझनी चाहिए।

ये ऐसे स्थान हैं, जहाँ लज्जा लुट जाती है।

I mean

'स्त्री' लुट जाती है।

Always beware of those.

(८) सात्विक प्रार्थना :

संस्कृत में प्र+अर्थ धातु से प्रार्थना शब्द बना है।

जिसका अर्थ होता है प्रकृष्ट याचना।

याचना में तुच्छ वस्तुओं की याचना होती है,

परन्तु प्रकृष्ट याचना में श्रेष्ठ वस्तुओं की याचना होती है।

सौन्दर्य अथवा सम्पत्ति की माँग याचना है।

परन्तु सद्‌गुणों और सत्कार्यों की माँग प्रार्थना है।

हर रोज सुबह-शाम कम से कम दस मिनिट के लिए

सात्त्विक प्रार्थना करनी चाहिए।

प्रार्थना सात्त्विक ही होती है।

परन्तु कुछ मुग्ध लोग प्रार्थना को सांसारिक माँगों से कलुषित कर देते हैं।

इसलिए मुझे 'सात्त्विक प्रार्थना' कहना पड़ा है।

My dear,

प्रार्थना एक दिव्य उर्जा है।

एक अपूर्व शक्ति है।

गहन ध्यान में डूबा हुआ मन जितना शान्त होता है,

उतना ही

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

प्रार्थना के समय भी शान्त होता है।

स्ट्रेस, टेन्शन, डिप्रेशन, एंगर, ग्रीड

इन सबों से मन रूपी जल उद्विग्न होता है।

विज्ञापन इसे और भी कलुषित करता है।

जबकि प्रार्थना उसे स्वच्छ और शान्त कर देता है।

प्रार्थना

शारीरिक, मानसिक और पारिवारिक आरोग्यता की

संजीवनी है।

समूह प्रार्थना तथा समूह भोजन

परिवार को लम्बे समय तक जोड़े रखनेवाली जंजीर है।

बाहर के विकट संयोगों में भी हमारी पवित्रता और हमारे चरित्र को सुरक्षित रखने की शक्ति प्रार्थना देती है।

हो सके तो समूह में, अन्यथा अकेले,

प्रार्थना is must

Really must

(९) सात्त्विक समर्पण :

अपने आपको योग्य व्यक्ति के अधीन रखना सात्त्विक समर्पण है।

वह व्यक्ति पिता या पति हो सकता है।

सास या जेठानी हो सकती है।

हमारा व्यक्तित्व, हमारा विनय, हमारी नम्रता।

यह सब ऐसा ही होता है।

कि वे हमें सहजता से हमारी भूल कह सकते हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और हम उन्हें आनन्दपूर्वक स्वीकार कर स्वाभाविक रूप से उनके ऊपर अमल कर सकते हैं।

उपदेशमाला में कहा गया है –

इग दिवसम्मे बहुआ सुद्दा असुद्दा जीव परिणामा ।

एक व्यक्ति को एक दिन में अनेक अच्छे और बुरे विचार आते हैं।

अच्छा आदमी हर समय अच्छा ही हो, ऐसा कोई नियम नहीं है।

किस व्यक्ति को किस समय कैसा विचार आए

और उस विचार के अधीन होकर वह व्यक्ति क्या कर डाले,

इसका वास्तव में कोई भरोसा नहीं है।

इस स्थिति में हमारे चरित्र की सुरक्षा

सात्त्विक समर्पण से ही हो सकती है।

समर्पण कोई गुलामी नहीं है।

बल्कि सुरक्षा है।

सात्त्विक समर्पण का दूसरा नाम वृद्धोपजीवन है।

बुजुर्गों का आश्रित होकर रहना।

बुजुर्गों को आश्रय बनाकर रहना।

जो भी करें, वह उनसे पूछकर करें।

उनका मार्गदर्शन प्राप्तकर करें।

यदि वे कड़वे शब्दों में कहें

तो भी सहर्ष उसे स्वीकार करें।

छगन एक दुकान में सेल्समैन की नौकरी कर रहा था।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मगन उसी दुकान में कुछ खरीदने गया।

सेठ ने छगन को 'ए बेवकूफ!' ऐसा कहकर

कोई वस्तु लाने को कहा।

छगन ने हँसते-हुए वह वस्तु लाकर दे दी।

शाम को मगन ने छगन को फोन किया।

'तुम्हारे सेठ ने तुम्हें बेवकूफ कहा। और तुमने सुन लिया?'

छगन ने जवाब दिया -

"क्यों नहीं सुनता, मैं कोई बेवकूफ थोड़ा हूँ?"

मेरी प्यारी,

यदि सम्पत्ति के लिए समर्पण रखा जा सकता है,

तो शील के लिए क्यों नहीं?

सेठ के सामने ऊँची आवाज में बोलनेवाला नौकर

आर्थिक लाभ गँवा देता है, मूर्ख के रूप में प्रसिद्ध होता है।

और अपने परिवार में समाज में अपमानित होता है।

ठीक इसी प्रकार

बुजुर्ग लोगों का विरोध करनेवाला व्यक्ति

सात्त्विक सुख-शान्ति का लाभ गँवा देता है।

वह सही अर्थ में तो मूर्खता करता है।

और अन्त में अपमानित ही होता है।

बेटा,

Art of earning से भी

अधिक Important Art of dedicating है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

सम्भव है कि बुजुर्गों का Nature... उनका Style

हमारे साथ Match न हो,

So what ?

हमें उनके साथ Match हो जाना चाहिए।

यही तो सात्त्विक समर्पण है।

मेरी प्यारी,

हम अपनी Life में हर जगह

हमारी choice या wish नहीं देखते हैं।

बल्कि plus-minus देखते हैं।

I mean लाभ-नुकशान।

लोकल ट्रेनों की धक्कामुक्की सहन करके हर रोज ५०-१०० कि. मी. की यात्रा करनेवाले मुम्बई के लोग

जो काम करते हैं। वह क्या उनकी choice है? क्या वह उनका Fun है?

But they saw their benefit in that activity

यदि कोई ऐसा कहे कि "यह क्या?

क्या मुझे रोज ऐसे ही धक्के खाने हैं?

मजदूरी करनी है?

इधर से उधर भटकना है?

सिर पर काम का बोझ रखना?

सेठ की डांट-फटकार सुननी?

नहीं चाहिए मुझे ऐसी नौकरी?"

तो इसका परिणाम क्या आएगा?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसका परिवार या तो भीख माँगेगा या भूखा मरेगा।

मेरी बेटी,

ऐसा शॉर्ट टेम्पर और शॉर्ट विजनवाला मनुष्य

विश्व का महान - सबसे महान मूर्ख कहलाएगा।

कुछ अल्हड़ लड़कियाँ ऐसी मूर्खता करती हैं

और अपने चरित्र की और अन्त में अपने सारे घर-संसार की कबर खोद डालती है।

स्थेयं वृद्धानुवृत्या च

जीवन के इस संग्राम में

हमारे अभिभावक ही हमारे कवच हैं।

कवच जरा सा चुभता है।

अथवा थोड़ा सा छिल भी देता है।

परन्तु मात्र इतने से उसे फेंक नहीं दिया जाता।

यदि वह हमसे दूर हो गया तो शस्त्रों के मृत्युतुल्य प्रहार हमें छलनी-छलनी कर देगा।

हो सकता है कि सेठ के अधीन रहने में कभी सेठ को अधिक लाभ होता हो,

परन्तु अभिभावक के प्रति समर्पित रहने में

हमारे स्वयं के पक्ष में ही अधिक लाभ है।

कारण कि यह समर्पण हमें जो चारित्र का उपहार देता है,

जो सुख शान्ति का स्वर्ग प्रदान करता है,

उसका मूल्यांकन करना असम्भव है।

आगमों में कहा गया है -

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

एवायरियं उवचिट्ठएज्जा

अनंतनाणोवगवो वि संतो । - दशवैकालिक सूत्र

शिष्य यदि असीम ज्ञान प्राप्त कर ले, फिर भी उसे गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित रहना चाहिए।

कारण कि समर्पण में ही चारित्र की सुरक्षा है।

मेरी प्यारी,

संसार में सबसे श्रेष्ठ गुरुजन होते हैं।

हम भले ही उनसे अधिक समझदार, अधिक शिक्षित और अधिक योग्य हो जाएँ,

परन्तु उनके प्रति समर्पण ही हमारे हित में है।

यदि हम छोटा होकर भी उनके प्रति समर्पित न हो सकें,

तो वे बड़े होकर हमारे प्रति समर्पित हो जाएँ

ऐसी आशा रखने का सवाल ही कहाँ आता है?

परिणाम?

खींचतान... व्यर्थ विवाद... गृहक्लेश... तंग वातावरण...

सुख का सत्यानाश।

और आज नहीं तो कल चारित्र का भी नाश।

बेटा,

हमारे बड़े-बुजुर्ग ही हमारी छत्रछाया हैं।

छत्र का लाभ तुमको तभी मिलेगा,

जब तुम उसके नीचे रहोगी।

छत्र के ऊपर चढ़ने का प्रयास बेवकूफी है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

'भले ही हमें धूप सहन करनी पड़े,

भले ही बरसात में भीगकर बीमार पड़ जाएँ,

पर हम किसी के Under में नहीं रहेंगे।'

ऐसे स्वाभिमान (!)को तुम क्या कहोगी?

हो सकता है कि छतरी में कहीं छेद हो,

उसके किसी तार में जंग लग गया हो,

शायद ऐसा कुछ न भी हो,

फिर भी छतरी को हमेशा हाथ में पकड़कर ऊपर ही रखना पड़ेगा।

यह कष्ट तो होगा ही।

परन्तु सारी दुनिया ने इसका Plus point ही देखा है,

उसे अपनाया है।

और उसके नीचे खड़े रहना खुशी से स्वीकार किया है।

Smart you are my daughter.

मैं जो कहना चाहता हूँ, वह तुम समझ गई होगी।

(१०) सात्त्विक कार्यशीलता :

हमारे यहाँ एक कहावत है -

खाली मन शैतान का घर

इससे मिलती जुलती एक विदेशी कहावत है -

An Empty mind is devil's workshop.

हमारे अन्दर के दोष ही Devil है।

जब हम अकेले होते हैं, खाली होते हैं, तब वह बाहर निकलता है

और अपना काम शुरु कर देता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

वे दोष जब काम करने लग जाते हैं, तब हमारा काम तमाम हो जाता है।

उससे बचने का एक ही उपाय है।

Always be buisy in good activities.

जो काम नहीं करते रहते हैं, उनके शरीर पर चरबी चढ़ जाती है।

और मन पर मैल का थर चढ़ जाता है।

ये दोनों स्वस्थ जीवन को तहस-नहस कर देते हैं।

मेरी प्यारी,

वर्त्तमान में हम ऐसे समय से गुजर रहे हैं,

जिसमें मनुष्य ऊर्जा के गलत विकल्पों में बुरी तरह से फँस गया है।

वैसे तो वह बाईक या कार के बिना कहीं जा नहीं सकता।

और वैसे हर रोज सुबह बगीचे में गोल-गोल घूमा करता है।

वैसे तो वह कपड़े धोने के मशीन पर निर्भर है

और वैसे जिम्नेशियम में जाकर कसरत करता है।

इस प्रकार डबल ऊर्जा बर्बाद होती है।

पर्यावरण दूषित होता है, रोग बढ़ते हैं।

खर्च बढ़ता है। मँहगाई बढ़ती जाती है।

और अन्त में मनुष्य हैरान-परेशान हो जाता है।

मेरी प्यारी,

जिम्नेशियम के सारे मशीनों और साधनों के ऊपर

Micro Research किया जाए

तो पता चले

कि वे सारी वस्तुएँ

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

हमारे यहाँ अलग-अलग रूपों में थी ही।

पत्थर की चक्की के रूप में... मथनी की रस्सी के रूप में...

कपड़े धोनेवाले धोका के रूप में... झाड़ू या पोथा के रूप में...

रोटी बनाने के बेलन के रूप में... चटनी पीसनेवाले पत्थर के रूप में...

कूएँ से पानी खींचनेवाली रस्सी के रूप में... गाय दुहने की पद्धति के रूप में

मूसल के रूप में... खरल के रूप में...

चूल्हा फूँकनेवाली फुँकनी के रूप में... रोटी बनानेवाली पद्धति के रूप में...

इन सारी वस्तुओं के यान्त्रिक विकल्पों को अपनाने

और फिर शरीर को जरूरी कसरत पूरी करने के लिए

जिम में जाकर अन्य यान्त्रिक विकल्पों का उपयोग करना

और इसमें अपनी आधुनिकता समझना

यह आज के विश्व की बहुत बड़ी नासमझी है।

इसप्रकार आर्थिक तन्त्र, सामाजिक तन्त्र

और शारीरिक तन्त्र अधिक दिनों तक नहीं चल सकता है।

आज अमेरिका की ९०% जनसंख्या कर्जदार है।

इसमें इस Wrong system का

बहुत बड़ा योगदान है।

एक दिन ऐसा जरूर आएगा

जब ट्रक और ट्रेक्टर का स्थान फिर से बैलगाड़ी ले लेगी।

लेकिन यह तो वैश्विक स्तर की बात है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

हमारे जीवन में व्यक्तिगत स्तर पर

वह दिन आज भी आ सकता है।

मेरी प्यारी,

आज अर्थतन्त्र के प्रश्न या ऊर्जातन्त्र के प्रश्न विकट हैं,

परन्तु उससे भी विकट है चारित्र का प्रश्न।

यन्त्रों और नौकरों को सारा काम सौंपकर

बेकार बैठा व्यक्ति चारित्र की धज्जियाँ उड़ाता है।

यह ऐसी स्थिति में जिसमें शरीर तो बर्बाद होता ही है

घर की सुख-शान्ति भी छिन जाती है।

पैसों की कमी तो होती ही है,

पारिवारिक प्रेम में भी कमी आती है।

तलाक की नौबत भी आ जाती है।

और बच्चे बिल्कुल निराधार हो जाते हैं।

सेठानी बनकर T.V. के सामने बैठे रहने से

या Shoping या Party celebration करने से

हम सुखी हो गए हैं, ऐसा मानना यह निरी भ्रमणा है।

Ultimately यह दुःख का रास्ता है।

सुख का रास्ता है सात्त्विक कार्यशीलता।

पर्याप्त और सही दिशा में किए गए श्रम का

अन्य कोई विकल्प नहीं है।

My dear,

गुजरात का एक प्रदेश है - काठियावाड।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसमें काठी समाज के लोग रहते हैं।

उस समाज में जब बेटी विदा होती है

तब माता अपनी बेटी को एक विशेष शिक्षा देती है -

"बेटा,

रोज सूरजवन्दना करने के बाद तुम अपनी दोनों हथेलियों को देखना और एक प्रश्न करना कि तुम्हारी ये दोनों हथेलियाँ पहले जैसी ही हैं?

या अधिक घिस गई हैं?

यदि पहले जैसी ही हों तो कल की अपेक्षा आज थोड़ा अधिक काम करना।"

मेरी प्यारी,

शारीरिक रोगों का उपचार मानसिक उलझनों का समाधान

सास-देवरानी-जेठानी-ननद के साथ मधुर सम्बन्ध

और स्वस्थ चारित्र का उपाय

वह सभी उस काठी 'माँ' की इस एक शिक्षा में समाहित है।

"मैं क्यों घिसाऊँ?"

इस प्रश्न का जवाब है - उजला रहने के लिए।

जो घिसाता है, वह उजला रहता है।

जो पड़ा रहता है, उसमें जंग लग जाता है।

स्कूल में विज्ञान के शिक्षक ने प्रश्न किया,

"आज बहुत सारे यन्त्रों का आविष्कार किया जा रहा है।

तुम बड़े होकर कौन से यन्त्र का आविष्कार करोगे?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बोलो पिन्टु ।"

"मैं ऐसे यन्त्र का आविष्कार करूँगा,

जिसका बटन दबाओ और होमवर्क हो जाए ।"

"भारी आलसी है तू तो । और तुम चिन्टू?"

"मैं ऐसे यन्त्र का आविष्कार करूँगा

जो पिन्टू के मशीन का बटन दबा दे ।"

एक को होमवर्क ही नहीं करना था ।

और दूसरे को बटन दबाने का श्रम भी नहीं करना था

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः ।

नास्त्युद्यमसमो बन्धु कृत्वा यं नावसीदति ।।

आलस्य मनुष्य के शरीर में रहनेवाला महाशत्रु है ।

उद्यम के समान कोई स्वजन नहीं है, जिससे मनुष्य सुखी होता है ।

बेटा,

जहाँ काम का बँटवारा होता है, वह ऑफीस है ।

जहाँ काम की समझ होती है, वह परिवार है ।

फरमानेवाली पद्धति से घर में सबका मन तुरन्त उचट जाता है ।

यह उचाट अन्त में विभक्त परिवार तक ले जाता है ।

और बात वहाँ भी नहीं रुकती है ।

विभक्त होने के बाद भी ये विषाणु दिखाई देते हैं ।

पति और बालकों के साथ, शिष्टाचार के नाम पर ।

शिष्टाचार अच्छी बात है ।

परन्तु उसके नाम पर मन के साथ छल होता है ।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और परस्पर अन्तर बढ़ता जाता है।

यह तो अच्छी बात नहीं है ना?

मन का सोचा हुआ सब हो जाएगा

लेकिन इसके परिणामस्वरूप हम दुःखी हो जाएँगे।

तो ऐसा होने का क्या मतलब?

मेरी प्यारी,

सात्त्विक कार्यशीलता शरीर और मन का अमृत है।

संयुक्त और स्वस्थ परिवार की यह संजीवनी है।

Character के लिए यह Oxygen है।

(११) सात्त्विक तितिक्षा :

शरीर और मन के स्तर पर सम्यक् सहन करने की वृत्ति।

मुलायम गद्दी, रेशमी वस्त्र, इत्र और परफ्यूम

A.C. और Coolers, सिज़नल फ्रूट्स...

In short

हर तरह से सभी अनुकूलता भोगनी

और मानसिक स्तर पर किसीका कुछ भी सुनने को बिल्कुल तैयार न होना

यह स्थिति बहुत खतरनाक है।

एक Level की Luxury जिसके लिए जरूरत बन जाती है।

वह प्रतिकूल परिस्थितियों में या तो आत्महत्या कर लेता है या उसका शेष जीवन नरक बन जाता है।

जीवन में कर्कशता को अपनाने की और प्रतिकूलता को सहन करने की

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

आदत होनी चाहिए। यह अत्यन्त आवश्यक है।

“सबकुछ अनुकूल हो, तो मैं सुखी।”

सुख की ऐसी जिसकी व्याख्या हो,

उसका Most of Life दुःख में व्यतीत होता है।

कारण कि 'सबकुछ अनुकूल हो'

ऐसी स्थिति या तो आती ही नहीं है और यदि कभी आ जाती है, तो टिकती नहीं है।

मेरी प्यारी,

हमारी कुशलता और हमारी महानता तो इसमें है।

कि तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच भी,

शारीरिक रोगों के साथ भी,

किसी के कड़वे शब्दों को सुनने के बाद भी हम सुखी ही रहें।

वास्तव में कष्ट बाहर नहीं होता है।

कष्ट वही होता है, जिसे हम अपने मन पर लेते हैं।

जिसे इस रहस्य का ज्ञान नहीं है।

वह प्रत्यक्ष रूप से कष्ट से दूर भागता है।

परन्तु वास्तव में कष्ट की तरफ ही जा रहा होता है।

टॉल्सटॉय ने एक बहुत सुन्दर बात कही है -

If you want to be happy,

तो अपने आनन्द को किसी के अधीन बनाना,

यही सबसे बड़ा Ignorance है।

मेरी प्यारी,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

फोड़ देना... तोड़ देना... काट डालना... छोड़ देना... निकल जाना

यह सब तो एक मूर्ख भी कर सकता है।

मजा तो तब है कि उसीमें टिके रहना और उसे निभाना

यही इच्छनीय है।

बेटा,

जिसके पास सात्त्विक तितिक्षा नहीं है

वह एक ही भव में अनेक भव का भ्रमण करता है,

और इसीमें उसके सच्चे सुख का, उसके चारित्र का

वास्तव में दीवाला निकल जाता है।

My dear,

जीवन में शायद तुम सबकुछ भूल जाओ,

परन्तु ये ११ secrets को याद रखना,

यही ज्ञान तुम्हारी वास्तविक शोभा बनेगा।

तुम्हारा गौरव बनेगा और तुम्हारा स्वर्ग बनेगा।

Give me promise my dear,

Love you so much.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

Earning

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

प्यारी बेटी,

नौकरी के विषय में स्त्रियों का व्यक्तिगत अभिप्राय लिया जाए,

तो शायद सैकड़ों की संख्या में भिन्न-भिन्न अभिप्राय मिलेंगे।

परन्तु हमें सर्वप्रथम मध्यस्थ विचार करना है।

जरूरतमंद परिवार में स्त्री-पुरुष और बालक भी नौकरी करते हैं। यह तो एक संयोग की बात है,

परन्तु

जरूरत के बिना मात्र आर्थिक स्वतन्त्रता के विचारों को पोषण के लिए

अथवा मात्र बचत करने के लिए

या उच्च जीवनशैली के लिए स्त्री यदि नौकरी पर जाती है,

तो एक जरूरतमंद परिवार का निर्वाह रुक जाता है,

कारण कि शिक्षितों के लिए नौकरी की सम्भावना बहुत कम है।

सम्भावनाओं की अपेक्षा काम करनेवाले बहुत अधिक हैं।

यदि शिक्षित स्त्री के बदले एक शिक्षित बेकार पुरुष काम करे तो उसके परिवार का सुखपूर्वक निर्वाह हो सकता है।

शायद नौकरी की बहुत अधिक सम्भावनाएँ हों,

फिर भी यदि स्त्री बाहर जाती है,

तो उस परिवार की क्या दशा होगी?

पति काम-धन्धे से थका-मांदा घर वापस आया है,

घर की स्थिति अस्त-व्यस्त है।

दो-तीन काम पेन्डिग पड़े हैं।

भूख जोरो की लगी है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

पर रसोई का कोई ठिकाना नहीं है।

पति को सब पता है,

कि जिसप्रकार वह स्वयं थका-मांदा आया है,

उसी प्रकार पत्नी भी थकी-मांदी आई है या आनेवाली है।

फिर भी पति की जो अपेक्षाएँ टूटी हैं, वह तो टूटी ही हैं।

परिणाम?

Home-war.

सामान्य कारणों से अथवा अकारण गुस्सा,

तीखे और कड़वे शब्द,

झगड़े और अशान्ति,

परस्पर सतत् दोषारोपण,

तंग वातावरण।

मेरी प्यारी,

घर में वेतन का दो चेक आए

यह सबको अच्छा लगता है,

परन्तु घर को उस दूसरे चेक की

बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

बालक स्कूल से घर आए,

तो उसे माँ की गोद चाहिए,

उसे किसी टीचर या स्टूडेन्ट की कम्पलेन करनी है,

उसे अपने पराक्रम की बात करनी है,

उसे कहीं चोट लगी है, तो उसे 'माँ' के पास रोना है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसे सहानुभूति और प्रेम की जरूरत है।

परन्तु घर जिस कारण से घर था, वह कारण ही नदारद है।

बालक दुःखी होता है...एक खालीपन का अनुभव करता है....

थोड़ा नर्वस होता है... थोड़ा गुस्सा होता है...

धीरे-धीरे उसका स्वभाव चिड़चिड़ा और विचित्र बन जाता है।

अब वह छोटी-छोटी बात में उबल जाता है।

किसीकी बात नहीं मानता है।

उसकी संवेदनशीलता क्षीण होती जाती है।

और कठोरता बढ़ती जाती है।

बेटा,

परिवार उस दूसरे चेक की कीमत है।

सुख-शान्ति और आनन्द उस दूसरे चेक की कीमत है।

स्वस्थ और प्रेमभरी सन्तान उस दूसरे चेक की कीमत है।

सतत सौहार्द्रपूर्ण वातावरण उस दूसरे चेक की कीमत है।

पहले ये सारी कीमत चुकानी पड़ती है, फिर वह दूसरा चेक मिलता है।

मात्र दूसरे के लिए

अपने कैरियर और आमदनी की आहुति देने की बात नहीं है।

इसके अतिरिक्त इस दूसरी भूमिका को अदा करने में स्त्री स्वयं जो दुःख सहन करती है, वह वही समझ सकती है।

वह चाहे कितनी भी निष्ठा से

घर और व्यवसाय को सम्भालने की कोशिश करे,

फिर भी सभी असन्तुष्ट ही रहते हैं,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

व्यवसाय में बॉस की अपेक्षा पूरी करनी

और घर में परिवार की।

इन दोनों जिम्मेदारियों के बीच स्त्री पिसती जाती है।

मानो कोई जंगली जानवर पीछा कर रहा हो,

और भागमभाग करना।

दिमाग पर हमेशा टेन्शन लेकर

और सतत् सबके असन्तोष के बीच जीना,

यह स्त्री के ऊपर अत्याचार नहीं तो और क्या है?

My dear,

व्यवसाय में स्त्री जैसे-जैसे सफल बनती है,

वैसे-वैसे उसके व्यक्तिगत जीवन में समस्याएँ बढ़ती जाती हैं।

एक पत्नी और एक माँ के रूप में जब वह असफल हो जाती है,

तो बाहर की सफलता का कोई मूल्य नहीं रहता।

व्यवसाय में सफल होनेवाली स्त्री

यह चाहती है कि उसके पतिदेव घर और बालकों की देखभाल करें।

दूसरी ओर पति अपने पुरुष स्वभाव के कारण

पत्नी की व्यावसायिक सफलता से ईगो हर्ट का अनुभव करता है।

परिणामस्वरूप पत्नी के साथ उसकी दूरी और घर्षण दोनों बढ़ते जाते हैं।

बेटा,

Never say - ऐसा नहीं होना चाहिए।

इसका कोई मतलब है, जो है, वह है।

तुम उसे बिल्कुल गलत साबित कर दो फिर भी वह है, तो है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

स्वभावो ह्यपर्यनुयोज्यः ।

Nature एक ऐसी वस्तु है,

जिसे तुम Why? नहीं कह सकती।

Fire hot है तो है।

Why hot? इसका कोई जवाब नहीं।

वास्तव में ऐसा प्रश्न किया ही नहीं जा सकता।

स्वभाव को तो मात्र समझना होता है।

और

समझकर योग्य व्यवहार करना होता है।

स्त्री की व्यावसायिक सफलता

जिस प्रकार पुरुष के Nature को suit नहीं करती,

उसी प्रकार स्त्री के स्वयं के Nature को भी suit नहीं करती है।

यह एक ऐसी Duty है, जिसमें स्त्री को पता भी नहीं चले, इस प्रकार उसका प्रकृतिदत्त स्त्रीत्व लुप्त हो जाता है।

और एक पुरुष के लक्षण उसके व्यवहार में व्याप्त हो जाता है।

बेटा,

स्त्री की Outdoor duty से उसे कितने पैसे मिलते हैं,

इस बात का कोई वजूद नहीं रहता,

कारण कि वह Duty ही उसके Self-cost पर मिलती है।

I mean,

उस Duty के cost के रूप में वह अपने-आप का

अपने स्त्रीत्व का समर्पण कर देती है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मेरी प्यारी,

कोई हमें करोड़ों रुपये दे दे,

इस शर्त्त पर

कि हमे मर जाना है,

तो क्या हम वह शर्त्त स्वीकार करेंगे?

यदि हमें Existence ही न रहना हो,

तो क्या करना उन करोड़ों रुपयों का?

स्त्री का अस्तित्व

यही परिवार का अस्तित्व है।

स्त्री नष्ट हो जाए तो

सारा परिवार ही नष्ट हो जाता है।

न गृहं गृहमित्याहुः गृहिणी गृहमुच्यते ।

घर घर नहीं है, बल्कि गृहिणी ही घर है।

समस्त राष्ट्र का यदि कोई स्तम्भ हो तो वह गृहिणी है।

हिटलर ने यह सत्य भलीभांति समझा था।

उसने सत्ता पर आने के साथ ही स्त्रियों को नौकरी से मुक्त कर दिया था और कहा था कि

आप अपने पति को खूब प्रेम दें।

अपनी सन्तान का श्रेष्ठ निर्माण करें।

यही आपकी सबसे बड़ी देश-सेवा है।

जर्मनी को विश्व के सर्वोच्च स्थान पर पहुँचाने के लिए

आपकी इस सेवा की ही जरूरत है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बेटा,

स्त्री कोई टी.वी. सेट नहीं है,

जो जरूरत के मुताबिक तुरन्त चैनल बदल सके,

घर में बाहर की अपेक्षा अन्य गुणों की आवश्यकता पड़ती है।

अन्दर-बाहर की यह खींचातानी

आखिरकार पारिवारिक झगड़े में बदल जाता है

या डिप्रेशन में कन्वर्ट हो जाता है।

मेरी प्यारी,

एक-दो वर्ष का बालक

आया के द्वारा मार-पीटकर सुला दिया जाता हो,,

पाँच वर्ष का बालक सतत् एकाकीपन का अनुभव करता हो,

आठ वर्ष के बालक की माँ फ्रीज हो और बाप टी.वी.हो,

दस वर्ष का बालक आज तक

कभी प्रेम और वात्सल्य का अनुभव ही नहीं किया हो,

बारह वर्ष का बालक सारी दुनिया को धिक्कारने लगा हो,

इस स्थिति ने अमेरिका जैसे देशों में

चौदह वर्ष के हत्यारे और आतंकवादियों को पैदा किया है।

स्कूलों में गोलियाँ चलनी और हत्याकांड होना, वहाँ की नियमित घटना है।

मेरी प्यारी

आया या नौकर-नौकरानी

कभी माँ का स्थान नहीं ले सकती।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

'माँ' का प्रेम... वात्सल्य... आत्मीयता
बालक के लिए ऑक्सीजन होता है।
विदेशों में करोड़ों बचपन
इस ऑक्सीजन के अभाव में घुटकर मर रहे है।
स्त्री का कर्त्तव्य उत्तम गृहिणी बनना है।
इसके अतिरिक्त उसकी सारी Duties,
जिसकी शायद International level पर प्रशंसा होती हो,
परन्तु,
वह Wrong number पर Talk जैसा है,
यह Talk कितना भी Smart क्यों ना हो,
चाहे कितना भी Inteligent क्यों ना हो,
Actualiy उसका कोई Meaning नहीं है।
गीता के शब्द याद आते हैं -
परधर्मो भयावहः परधर्म भय उत्पन्न करनेवाला है।।
नारी यदि नारीधर्म छोड़कर पुरुषधर्म अपनाने जाए,
तो यह वास्तव में Danger है।
मेरी प्यारी,
सम्पत्ति का सर्जन सुख के लिए होता है।
यदि ऐसे सर्जन के पीछे सुख ही न हो
तो फिर यह सर्जन करने का क्या Purpose है ?
यह तो जीने के लिए जहर खाने जैसा है।
जॉब या बिजनेस करनेवाली नारी

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

अपनी सारी शक्ति लगाकर

इन सारे अंतिमो को मिलाने का प्रयास करे

तो इतनी खींचतान होगी

कि उसका सीधा Result

शारीरिक रोग और मानसिक तनाव के रूप में मिलेगा,

बैकपेन से लेकर डायबिटीज़ तक

बी.पी. से लेकर अटैक तक।

टेन्शन से लेकर डिप्रेशन तक।

अब?

दवा... ट्रीटमेन्ट... खर्च...

पैसे के लिए इतने सारे झंझट खड़े किए।

अब उन झंझटों को सुलझाने के लिए

सारे पैसे झोंक देना।

यहाँ तक कि कर्ज भी लेना।

सुधीर्हि सर्वं परिणामरम्यं

विचार्य गृह्णाति, चिरस्थितीह ।

बुद्धिमत्ता तो इसमें है कि हम सोचे

मात्र 'अच्छा' नहीं चाहिए

परन्तु Result में अच्छा चाहिए।

प्रत्यक्ष रूप में 'अच्छी' लगनेवाली वस्तु का भी Result यदि भयंकर हो

तो क्या उस वस्तु को अच्छी कही जा सकती है

या खराब से भी अति खराब कहा जाएगा?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

एक दुश्मन जब दोस्त के रूप में मिलता है,

तब वह पहले की अपेक्षा अधिक खतरनाक बन जाता है।

बेटा,

पिछले लाखों वर्षों में जो न आया हो,

ऐसा कल्चरल अटैक आज के समय में आया है।

अच्छे से अच्छे व्यक्ति को भी बिल्कुल नीच कक्षा में रख दे।

ऐसा एटमोसफेयर आज क्रिएट हुआ है।

परिणामस्वरूप आज मनुष्य जहाँ भी जाता है,

वहाँ उसकी वासनापूर्ति का साधन ढूँढता है।

वह आम रास्ता हो सकता है।

रिक्शा, बस या ट्रेन हो सकती है।

दुकान या ऑफीस हो सकता है।

घर और परिवार के सुरक्षाचक्र से निकलकर

नारी जहाँ भी जाती है, वहाँ उसकी सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं होती।

भीड़ का लाभ उठानेवाले से लेकर

एकान्त का लाभ उठानेवालों तक

उन सबों के बीच नारी अकेली होती है।

वासना के भूखे भेड़ियों के बीच

उस अकेली नारी की सुरक्षा का क्या?

इस प्रश्न का

नारी विकासवादियों तथा नारी स्वातन्त्रवादियों के पास

कोई जवाब नहीं है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

दुर्घटनाओं की शृंखला तेजी से बढ़ती जा रही है।

नारी टूटती जा रही है।

परिवार टूटते जा रहे हैं।

मेरी प्यारी,

जब टी.वी. इन्टरनेट, मोबाईल, सिनेमा,

न्युज़पेपर्स इनमें से कुछ भी नहीं था,

तब भी नारी किसी पुरुष से बात करने में संकोच का अनुभव करती थी।

वह अपने अंग तो क्या,

अपना चेहरा दिखाने में भी पाप समझती थी।

वह थी हमारी स्वर्णिम संस्कृति

जिसमें व्यक्तिगत गंदगियाँ, बलात्कार, तलाक

आदि की सम्भावनाएँ न के बराबर थी,

आज एक ओर मीडिया के द्वारा वासना को भड़काया जाता है

और दूसरी ओर नारी को सैकड़ों, हजारों पुरुषों के बीच

मर्यादारहित वेश में खड़ी कर देने की हिमायतें चल रही हैं।

पेट्रोल की बरसात कर फायरगन चलाने जैसी स्थिति है।

जिसका परिणाम सारी दुनिया जानती है।

मेरी प्यारी,

दुनिया हमारे हाथ में नहीं है।

लेकिन हम तो हमारे हाथ में हैं।

हमारे साथ शायद अन्य किसी प्रकार का दुर्व्यवहार न हो,

परन्तु

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कम से कम हजारों लोग हमारे ऊपर नजर बिगाड़ेंगे।
इतना तो निश्चित है।
क्या यही हमें मंजूर है?
यह ऐसी स्थिति है, जिसमें वेश्या आनंदित होती है,
और खानदानी नारी आघात और वज्राघात का अनुभव करती है।
आग लगे ऐसे रुपये को
जिससे हमारे खानदान को... हमारे चरित्र को... हमारे संस्कार को
हमारी अन्तरात्मा की आवाज को... हमारी लज्जा को...
बिल्कुल चिथड़े-चिथड़े कर दिया है।
बेटा,
एक महत्त्वपूर्ण बात यह है
कि नारी को आर्थिक परिस्थिति के विषय में मात्र अपने पति के ही
अधीन रहना चाहिए।
आज की नारी को इसमें गुलामी का आभास हुआ,
इसलिए वह स्वयं पैसा कमाने गई।
इसमें उसे बॉस की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी।
पति के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के अधीन होना,
इससे अधिक जोखिम और क्या हो सकता है?
किसी प्रकार के सम्बन्ध के बिना भी
नारी का शोषण करनेवाले पुरुषों की संख्या कम नहीं है।
उस समय बॉस के रूप में बैठा हुआ पुरुष
क्या इस आर्थिक सम्बन्ध का लाभ नहीं उठा सकता है?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसे खुश रखना क्या नारी की नौकरी का एक भाग नहीं बन जाता है?

More clear कहूँ,

तो क्या वह उसकी नौकरी का आधार नहीं बन जाता है?

बेटा,

सत्य बहुत कड़वा होता है।

सत्य दीपक की तरह स्पष्ट होता है।

लेकिन यह दुनिया स्वयं ही लापरवाह बनकर

स्वयं ही अपनी आँखों में धूल झोंककर

मौत के रास्ते पर दौड़ने लगी है।

इस परिस्थिति में जो होना चाहिए, वह हो रहा है।

मेरी बेटी,

तुमको होशियारी से काम लेना है।

'जो होगा, वह देखा जाएगा'।

'अब तो यह सब चलेगा ही'।

यह सब होशियारी का रास्ता नहीं है।

कुछ दिनों पहले सूरत में एक घटना घटी।

बीस वर्ष की एक लड़की ने ग्यारहवें मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली।

Why?

वह जहाँ नौकरी करने जाती थी,

वहाँ एक युवक के साथ उसे प्रेम हो गया था।

उसके पिता ने उसे दो Options दिये थे।

या तो यह सम्बन्ध तोड़ दो या चार वर्ष तक इन्तजार करो।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

लेकिन उसने तीसरा विकल्प पसन्द किया।

बेटा,

हमारा स्वभाव ऐसा है

कि जो नजदीक हो, उसके प्रति हम आकर्षित हो जाते हैं।

इसे प्रेम नहीं कहा जाता है।

प्रेम तो प्रगाढ़ होता है।

परन्तु यह तो क्षणिक आवेग होता है।

यह बहुत जल्दी पिघल जाता है।

फिर भिन्न जाति, भिन्न समाज-

अलग संस्कार, अलग रीति-रिवाज

ये सारी जुदाई

दोनों को धीरे-धीरे अलग करने लगती है।

और तलाक की नौबत आ जाती है।

फिर Second hand बनी हुई उस नारी का

दूसरी बार जहाँ विवाह होता है।

वहाँ उसे समाधान ही करना पड़ता है।

सूरत के उस पिता का कोई दोष नहीं था।

मैं तो कहता हूँ कि उस लड़की का भी कोई दोष नहीं था।

वह जिस स्थिति में थी, वहाँ ऐसा होना सामान्य बात थी।

सारा दोष इस System का था।

जहाँ वासना की इस बाढ़ में

जवान स्त्री अकेली घर से बाहर निकले,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

पुरुषों के बीच सफर करे, उनके साथ काम करे, उनके साथ मिले-जुले,
कौन बच सकता है?
इस स्थिति में जो स्त्री या पुरुष
पूरी तरह से बच जाए,
जिसका मन भी न बिगड़े,
उसे आज के समय का भगवान मानना चाहिए।
नीरखी के नवयौवना, लेश न विषय निदान ।
गणे काष्ठ की पूतली, ते भगवान समान ।।
Let me say my daughter,
भगवान को भी विचलित कर दे ऐसा यह समय है।
आज नारी को पहले की अपेक्षा Double cover की
और Double Security की जरूरत है।
और ऐसे समय में वह More open
और More insecured बन चुकी है।
यह देखकर समझदार लोगों का हृदय द्रवित हो जाता है।
वे इस विषय में कुछ भी बोलने जाएँ,
तो उन्हें विकासविरोधी माना जाता है।
पुरानी विचारधारा वाला और दकियानूसी माना जाता है।
और नारीवादी संस्थाएँ उनके विरोध में जुलूस निकालते हैं।
इसे अज्ञानता और करुणता की एक सीमा माननी चाहिए।
मेरी प्यारी,
नारी को घर की जरूरत होती है और घर को नारी की जरूरत होती है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

घर की रानी,

जब किसीकी नौकरानी बनने के लिए घर से बाहर निकलती है,

तब वह खुद भी हैरान-परेशान हो जाती है।

और सारा घर हैरान-परेशान हो जाता है।

ऋग्वेद की एक ऋचा में

विवाह के समय कन्या को दिया जानेवाला आशीर्वाद लिखा हुआ है -

"तू अपने घर की रानी बनकर राज करना।"

सफल और सुखी स्त्री के बहुत सारे रहस्य इस एक ही वाक्य में समाहित हो गए हैं।

बेटा,

सार यही है

कि एक स्त्री जब कमाती है,

तब उससे बहुत ज्यादा गँवाती है,

In other words

Earning woman

Is like a Burning woman.

हमारी संस्कृति में स्त्री को आर्थिक स्वतन्त्रता थी ही।

पति अपनी सारी कमाई पत्नी के हाथ में रख देता था।

जब उसे बाहर जाना होता था, तब पति पत्नी से पैसा माँगता।

पत्नी पूछती भी सही "क्यों इतने सारे रुपये?"

पति की कमाई को अपनी ही कमाई समझकर घर की रानी बनकर रहती थी।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

आज भी करोड़ों गृहिणियाँ ऐसी हैं,

ये Burning woman

यदि उन्हें देखे, तो सचमुच ईर्ष्या करने लगेगी।

इसमें आखिरी प्रश्न यह हो सकता है

कि आज की मँहगाई में दोनों को काम करना ही पड़ता है।

तो इसका सरल समाधान है

कि इस प्रकार हर तरह से दुःखी होकर, केरेक्टर का रिस्क लेकर कमाने का प्रयास करना,

इससे अच्छा सादगी और सन्तोषपूर्वक जीने का प्रयास करना

ही उत्तम है।

यह कला यदि आ जाए तो मँहगाई कभी परेशान नहीं करती।

विदेशी यहीं धोखा खा गए हैं।

पहले उन्होंने अपना जीवनस्तर बहुत ऊँचा कर लिया होता है,

फिर मात्र पति-पत्नी ही नहीं

बल्कि घर के सारे लोग काम पर लग जाते हैं।

फिर भी घर का खर्च पूरा नहीं होता,

ऊपर से सभी लोन में फँस चुके होते हैं।

मैं तो यही कहूँगा कि यह सरासर मूर्खता है।

यह सारा System ही गलत है।

Always remember my daughter,

जिनकी कमाई हमसे भी आधी है,

वे भी जीते हैं?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

जिनकी कमाई उनसे भी आधी है, वे भी जीते हैं।

महाभारत में विदुरजी ने कहा है-

सहस्त्रिणोऽपि जीवन्ति	हजार रुपयेवाले भी जीते हैं।
जीवन्ति शतिनोऽपि हि	और सौ रुपयेवाले भी जीते हैं।
धृतराष्ट्र! विमुञ्चेच्छां,	हे, धृतराष्ट्र! आप तृष्णा को छोड़ दें।
न कथञ्चिन्न जीव्यते ।	किसी भी तरह नहीं जी सकते, ऐसा नहीं है।

इच्छा और तृष्णा अनेक प्रकार की हो सकती है... एक निश्चित शहर.... एक निश्चित इलाका... एक निश्चित प्रकार का घर... ब्रान्डेड कपड़े...

मँहगे आभूषण... मँहगे फर्नीचर...

विशेष प्रकार की सुख-सुविधाएँ...

मेरी प्यारी,

मनुष्य कभी भी सिच्युएशन्स से दुःखी नहीं होता,

वह दुःखी होता है

अपनी इच्छाओं और तृष्णाओं से और अपने आग्रहों से ।

तृष्णा एक ऐसी राक्षसी है, जो मनुष्य के सारे गुणों को निगल जाती है।

तृष्णा न हो तो परिवार के साथ बैठकर आनन्द से नमक-रोटी खानेवाला मजदूर भी सुखी है।

और यदि तृष्णा हो तो बहुत बड़ा उद्योगपति भी दुःखी है।

भर्तृहरि ने सच ही कहा है-

स तु भवतु दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला

गरीब वही है, जिसकी तृष्णा बड़ी है।

सेक्सपियर ने एक दूसरी बात कही है-

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

A poor & content is rich & rich enough.

My dear,

पहले इच्छा करनी,

और फिर उस इच्छा को पूरी करने के लिए

अपने आपकी आहुति देनी।

इससे तो अच्छा इच्छाओं से मुक्त हो जाना ही सही नहीं लगता?

पंचसूत्र में सुख का यही रहस्य समझाया गया है -

अणिच्छेच्छा इच्छा

इच्छा यही करो कि मुझे किसी चीज की इच्छा न हो,

Desire to be desireless.

बेटा,

ये सारे जीवनसूत्र हैं।

जीवनभर याद रखने योग्य।

जीवन में पग-पग पर अपनाने योग्य।

इच्छाओं के पहाड़ के नीचे कुचलकर मर जाने की अपेक्षा

इच्छाओं को ठुकरा देना

यही श्रेयस्कर है।

Yes my daughter,

Desire is Weight,

Desire is Death.

संसार में कुछ मूर्ख नारियाँ भी होती हैं,

जो रोज-रोज नई-नई वस्तुओं की माँग करके पति को परेशान कर डालती

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

है।

वे नहीं जानतीं कि वे जिस डाल पर बैठी हैं, उसे ही काट रही हैं।

क्षमता से अधिक काम और तनाव

पति को रोगी बनाता है... उदास और चिड़चिड़ा बनाता है...

और असमय ही बूढ़ा बना देता है...

ये सभी

पत्नी के द्वारा पति को दी जानेवाली

एक प्रकार की कठोर सजा ही है ना?

छगन और मगन दोनों इकट्ठे हुए।

दोनों बिल्कुल उदास थे।

दोनों के चेहरे लटके हुए थे।

छगन ने मगन से पूछा,

"तुम क्यों उदास हो?"

मगन ने कहा, "मेरी पत्नी की आँख में रेती का कण घुस गया,

ट्रीटमेन्ट में ५००० रुपये खर्च हो गए।"

छगन ने कहा, "तुम्हारा तो सस्ते में हो गया,

मेरी पत्नी की आँख में तो पड़ोसन का नेकलेस घुस गया।

५ लाख खर्च हो गए।"

My dear,

इच्छाओं को पूरी करने के लिए

कमानेवाले के ऊपर दवाब डालना या खुद कमाने चले जाना

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

यह नारी के लिए शोभास्पद नहीं है।

नारी का कर्त्तव्य तो यही है कि पति जितने रुपये लाएँ उसमें कुशलतापूर्वक घर चलाना।

That's possible my daughter.

यही अच्छा है और यही करना चाहिए।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

ENGAGEMENT

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

एक समय ऐसा था

जब अभिभावक ही सन्तान का विवाह निश्चित कर लेते थे।

और विवाह के दिन तक वर-कन्या एक दूसरे को देखते भी न थे।

कोई-लड़का बहादुरी करके छिपकर लड़की को देख लेता था।

कि किसके साथ मेरा विवाह तय किया गया है।

तो यह भी एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती थी।

Laugh my daughter, laugh... No problem.

बुजुर्ग व्यक्ति ही विवाह तय कर लेते थे,

और विवाह तय करने से पहले सबकुछ देखते थे।

कुलं च शीलं च सनाथता च	कुल... शील... सनाथता...
विद्या च वित्तं च वपुर्वयश्च ।	ज्ञान... सम्पत्ति... शरीर... उमर
वरे गुणाः सप्त विलोकनीया-	ये सात गुण वर में देखने चाहिए।
स्ततः पर भाग्यवशा हि कन्या ।।	फिर तो जैसा कन्या का भाग्य...

अभिभावक संस्कार और रूढियाँ देखते थे,

रीतिरिवाज और आजीविका के साधन देखते थे,

परिवार के सदस्य और सास-ससुर का व्यवहार देखते थे,

यह सब देखकर ही वे विवाह तय करते थे।

और उनका निर्णय ही फाईनल माना जाता था।

लड़के-लड़कियों को पूछने का भी रिवाज नहीं था।

और उन्हें किसी प्रकार का विरोध करने का अधिकार नहीं था।

शायद आज की जनरेशन को यह 'जुल्म' लगेगा।

लेकिन बेटा,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

ध्यान देने योग्य बात यह है

कि उस समय विवाह चिरस्थायी होते थे।

For life time.

एक बार विवाह हो गया तो बात खतम।

जीवनभर की शान्ति।

स्वस्थ पारिवारिक जीवन की जड़ें गहरी होती जाती थीं और वृक्ष विशाल होता जाता था।

और उसके ऊपर मधुर फल लगते थे।

आज का चित्र तो बिल्कुल अलग है।

पहले तो

उम्र की परिपक्वता के बिना, पूर्ण ज्ञान और अनुभव के बिना

थोड़ी बहुत मित्रता या कथित प्रेम के क्षणिक आवेग में

पैसा या स्कीन देखकर लड़का-लड़की स्वयं ही पसन्द कर लेते हैं।

यही गलत कदम सिद्ध हो जाता है।

प्रेम की अपेक्षा युवक-युवतियों का

परस्पर व्यवहार बिल्कुल अलग होता है।

लेकिन जब वे साथ रहने लगते हैं,

तब परिस्थिति बिल्कुल बदल जाती है।

और यह बदली हुई परिस्थिति

पसन्दगी की सम्पूर्ण प्रक्रिया को गलत साबित कर देती है।

मेरी प्यारी,

कोई हमें पसन्द करे, इसके लिए आकर्षक दिखने का प्रयास,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

अच्छे वस्त्र और मेकअप का शो करने का प्रयास,
यह सब बहुत बड़ा Risk लेने जैसी बात है।
कारण कि शो कभी जीवन नहीं होता।
और जीवन कभी शो नहीं होता।
प्रेम करनेवाले युवक-युवती
एक दूसरे को पसन्द आएँ, ऐसा प्रयास करते हैं।
लेकिन यह उनका मूलभूत स्वभाव नहीं होता है।
इसलिए वह अधिक दिनों तक टिक नहीं सकता।
थोड़ा समय व्यतीत होने के बाद ही सही पहचान होती है।
और असली चेहरा दिखाई देता है।
तब ऐसा लगता है मानो आकाश से जमीन पर गिरा।
कभी-कभी कोई लड़की बहुत खूबसूरत होती है,
उसका रूप देखकर कोई उसके साथ विवाह कर ले,
और फिर किसी रोग या दुर्घटना में
उसका चेहरा विकृत हो जाए
तब उसका वर उसके साथ क्या करेगा?
क्योंकि उसका विवाह उस लड़की के साथ नहीं,
बल्कि उसके रूप के साथ ही हुआ था।
इसी प्रकार अगाध पैसा देखकर
लड़की का विवाह किसी लड़के के साथ हुआ हो
और बाद में किसी कारण से वह निर्धन हो जाए
तब वह लड़की क्या करेगी?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसका सम्बन्ध तो पैसे के साथ हुआ था।

My dear,

All this is a stupid measurement.

आज लाखों Love Marriages

Divorce में Convert हो जाते हैं।

उसका Secret यही है।

पहले के जमाने में होनेवाले विवाह का आधार

अभिभावक के प्रति समर्पण का भाव था।

इसलिए वे विवाह सफल और टिकाऊ सिद्ध होते थे।

आज के विवाह छोटी से छोटी बात पर टूट जानेवाले

और निष्फल सिद्ध होते हैं।

उसका कारण यह है कि

आज के विवाह का आधार वर-कन्या का मन होता है।

और मन चंचल होता है।

Weather you look beauty or wealth or your choice.

After all you are following your mind.

Only your mind.

छगन ने मगन से कहा,

"तुम्हारा विवाह तो देख-सुनकर हुआ था ना?

तो फिर चार महीने में ही तलाक की नौबत क्यों आ गई?"

मगन ने ढिठाई से कहा,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

"मेरे चश्मे का नम्बर गलत था।"

This is the fact my daughter.

यौवन का आवेग... अपरिपक्व अवस्था...

बाह्य आकर्षण की चकाचौंध...

ये सारे गलत नम्बरवाले चश्मे हैं।

इस चश्मे से कोई भी सच्चाई देख सके।

यह सम्भव ही नहीं है।

एक बात हमेशा ध्यान में रखना

कि इस उमर में पसन्द आना प्रेम बिल्कुल नहीं है।

इलेक्ट्रीसिटी में जिस प्रकार निगेटिव-पोजिटिव एक दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं।

वैसा ही यह स्वाभाविक विजातीय आकर्षण होता है।

इसे प्रेम कहनेवाले वास्तव में प्रेम के अर्थ को समझ ही नहीं पाते हैं।

यह आकर्षण असफल प्रेमविवाह में परिणत होता है।

तब Mostly

लड़कियों का ही शोषण होता है।

I don't say

कि इस विषय में तुम्हें हमारा ही निर्णय मानना चाहिए।

मैं तो तुम्हें मात्र वास्तविकता कह रहा हूँ।

मेरी प्यारी,

ये सारी बातें मात्र इसलिए हैं, कि तेरी एक छोटी सी भूल

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तेरे और हमारे लिए जीवन भर की सजा न बन जाए।

हमारा जीवन आग नहीं बल्कि बाग बने।

तू हमेशा सुखी रहे।

और तेरे सुख से हम सुखी रहें।

इसके अतिरिक्त

आधिपत्य का या आग्रह का हमारा कोई इरादा नहीं है।

बेटा,

पिछले वर्ष

मुम्बई के एक बहुत बड़े व्यापारी ने

अपनी बेटी का विवाह तय किया।

मुख्यमन्त्री भी उसके घर

बिना आमन्त्रण के आते थे, इतना बड़ा उसका नाम था।

इकलौती बेटी थी।

करोड़ों रुपये उसके पापा ने विवाह में खर्च किया।

परन्तु विवाह के एक दिन पहले

वह लड़की लापता हो गई।

सारा परिवार उसे ढूँढते-ढूँढते थक गया।

विवाह केन्सल हो गया।

स्पष्ट शब्दों में कहें तो बहुत बड़ी समस्या हो गई।

सगे-सम्बन्धी-आमन्त्रित मेहमान

सबको जवाब देना भारी पड गया।

किसीको मुँह दिखाना भी मुश्किल हो गया।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मेरी प्यारी,

Can you imagine?

कि उस पिता के हृदय को कितना बड़ा आघात लगा होगा?

कलेजे के टुकड़े जैसी, आखों के तारा जैसी

लाडली बेटी के पीछे बाईस वर्षों तक

इतना लाड़-प्यार लुटानेवाले बाप को

उसकी बेटी ठुकराकर चली जाए,

यह कितनी मर्मवेधक घटना है!

आज अनेको माँ-बाप ऐसे हैं।

जिनकी बेटी उन्हें जीवनभर का दुःख देकर चली गई है।

अनगिनत पिताओं ने बेटी के द्वारा उठाए गए एक गलत कदम के कारण शर्मिन्दा होकर आत्महत्या कर ली है।

कुछ ही समय पहले

कांकरिया तालाब से एक लाश निकाली गई।

उसकी Death-note मिल गई।

उसमें वही कारण लिखा था।

तुम्हें शायद पता नहीं होगा बेटा,

बेटी जब खिलौनों से खेलती है,

तब से ही उसके पिता को

उसके लिए योग्य वर ढूँढने की,

उसके लिए स्वर्ग जैसा घर ढूँढने की

चिन्ता सताती रहती है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

रात-दिन

मेरी बेटी कैसे सुखी रहेगी

इन्हीं विचारों में डूबे हुए पिता के इस प्रेम का क्या कोई मूल्य नहीं है?

New generation के पास यह Comon logic होता है।

“हमें सारी Life Spend करनी है।

इस विषय में हमारी ही Choice का Importance होना चाहिए।”

Well,

परन्तु इस choice पर

Mostly सारी लाईफ स्पेन्ड नहीं होती है।

और वह अच्छी तरह स्पेन्ड न होती हो, तो क्या करना चाहिए?

बेटा,

यह मैं नहीं कहता।

आज का सूक्ष्म सर्वेक्षण कहता है।

कॉलेज के स्मार्ट और सुन्दर लड़के के साथ

जिद् करके भाग कर विवाह करनेवाली आज की लड़कियों को

जब संस्कारभेद की सच्चाई का सामना करना पड़ता है

तो हर पल उसकी आँखों में पानी आ जाता है।

जीवन के जिस सुख के लिए हितेच्छुओं और उपकारियों के प्रेम को ठुकराकर, सामाजिक नीतियों को कुचलकर,

धर्मसंस्कारों को लात मार दिया,

वह सुख ही यदि स्वप्न बन जाए,

तो फिर इतने अपराध किसलिए ?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

सिर्फ दु:खी होने के लिए

मेरी प्यारी,

'माँ-बाप तुम्हारे दुश्मन हैं।'

यह युवापीढ़ी के दिमाग में ठूँसनेवाली

फिल्मी लवस्टोरी भी

इस दुर्घटना के लिए जिम्मेदार है।

शायद

आज की दुनिया का सबसे बड़ा दुश्मन

आज का प्रसारतन्त्र है।

जो करोड़ों लोगों की आँखों में, कानों में और मन में

जहर उगल रहा है।

मनुष्य को पता ही न चले,

इसप्रकार मीडिया उसका Brain wash कर रही है।

फिर तो उस मनुष्य को मित्र दुश्मन लगता है और दुश्मन मित्र लगता है।

सही बात गलत लगती है और गलत बात सही लगती है।

याद आती है महाभारत की वे बातें -

न कालो दण्डमुद्यम्य, शिर: कृन्तति कस्यचित् ।

कालस्य बलमेतावद्, विपरीतार्थदर्शनम् ।।

हम कहते हैं- काल रूठ गया।

इसका अर्थ क्या है?

काल शस्त्र लेकर किसीका मस्तक नहीं काट डालता।

काल का बल तो मात्र इतना है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कि वह मनुष्य को सबकुछ उल्टा दिखलाता है।

एक बार उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई

तो काल का काम पूरा हो गया।

फिर तो मनुष्य स्वयं ही अपनी बर्बादी को निमन्त्रण देता है।

बेटा,

कुछ समय पहले

मुम्बई के प्रतिष्ठित समाज की बेटी

कॉलेज के अपने एक ब्वायफ्रेन्ड के साथ भाग गई।

रातोंरात विवाह हो गया।

मातापिता का तो मानो खून हो गया।

कुछ दिनों तक तो उस लड़के ने उसे अपने साथ रखा।

फिर घूमने के बहाने उसे दुबई ले गया।

वहाँ उसे कहीं रास्ते में ही छोड़कर फरार हो गया।

वह लड़की उसकी राह देखते-देखते थक गई।

तब उसे कहा गया कि १७ लाख रुपये में उसे बेच दिया गया है।

उसके ऊपर तो मानो आकाश टूट पड़ा।

रोते-रोते उसकी आँखें सूज गईं।

उसे मार-पीटकर वेश्या बना दिया गया।

राक्षस जैसे लोग उसके ऊपर भयंकर यातनाएँ करने लगे।

वह एक प्रकार से जेल में थी।

जब अत्याचार उसकी सहनशक्ति से बाहर हो गया

तो एक दिन वह मौका देखकर वहाँ से भाग खड़ी हुई।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

गुन्डे उसे पकड़ पाएँ उसके पहले वह मात्र एक कॉल करने में सफल हो गई ।

“मम्मी, I am very sorry.
मैंने जो भूल की, उसकी बहुत बड़ी सजा मैं भुगत चुकी हूँ ।
अब मुझसे यह सब सहन नहीं होता है ।
यह हमारी अन्तिम मुलाकात है,
अब मैं स्युसाईड कर रही हूँ।
I am realy very sorry.”

बेटा,
घर में लहसुन भी नहीं खानेवाली लड़की को
जब सिर पर मछली की टोकरी लेकर घूमना पड़े
तब वह कथित Love
Life time का Death बन जाता है ।
मायके में एक चींटी भी न मारनेवाली लड़की को
जब उसका पति जबरदस्ती मटनशॉप में बिठाकर
खुद इधर-उधर भटकता रहे,
तब उस लड़की के सामने एकमात्र आत्महत्या का मार्ग ही बचता है।
हाल फिलहाल मुम्बई के पास थाणे में
बिल्कुल ऐसी ही एक घटना घटित हुई है ।
मेरी प्यारी
लड़के की जाति अलग हो तो उसका थोड़ा भी संस्कारभेद

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

विवाहित लड़की को सेट होने में बहुत बड़ी समस्या पैदा करता है।
तो फिर बिल्कुल उत्तर-दक्षिण जैसा भेद हो तो
उसकी तो चर्चा करनी ही बेकार है।
एक ओर लाखों विवाहित जीवनों की यह समस्या है।
और दूसरी ओर हमारी संस्कृति का एक ही वाक्य
सारा समाधान दे देता है -

कुलशीलसमैः सार्धं कृतोद्वाहोऽन्यगोत्रजैः ।। योगशास्त्रम् ।।
विवाह उसीके साथ करना चाहिए
जिसका कुल अपने समान है,
जिसके रीति-रिवाज-संस्कार-धर्म और चारित्र भी
हमारे समान हो,
और जिसका गोत्र भिन्न हो।
(जिससे दूर के भाई-बहन का भूल से विवाह न हो जाए।)

श्राद्धविधि ग्रन्थ में कहा गया है-
समानकुलसदाचारादिशीलरूपवयोविद्याविभव-
वेषभाषाप्रतिष्ठादिगुणैरेव सार्धम् ।
कुलशीलादिवैषम्ये हि मिथोऽवहीलना
कुटुम्बकलहकलङ्काद्यापत्तिः ।।
कुल समान हो, सदाचार आदि समान हो,
स्वभाव और चारित्र समान हो,
रूप, अवस्था और विद्या समान हो,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

वैभव, वेश और भाषा समान हो,
और प्रतिष्ठा आदि भी समान हो,
उसके साथ ही विवाह करना चाहिए।
यदि इन सबों में समानता न हो,
तो परस्पर तिरस्कार और अपमान होता है,
पारिवारिक झगड़े होते हैं
और आर्थिक तथा व्यक्तिगत सम्बन्ध में
कलंक भी लगाया जाता है।

बेटा,
अन्तर्जातीय से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय विवाह तक को
प्रोत्साहन देनेवाले तत्त्वों को यह पता नहीं है,
कि वे सुखी और स्वस्थ जीवन का दीवाला निकाल रहे हैं।
ऊपर से श्रेष्ठ और उदार दिखाई देनेवाली इस प्रवृत्ति का
आन्तरिक चित्र बहुत ही भयानक होता है।
यदि उसकी जाँच की जाए तो उसकी भयानकता देखकर चीख निकल पड़ेगी।
मेरी प्यारी,
फिल्म एक फिल्म ही है
और जीवन तो जीवन है।
फिल्म से सीख लेकर जीवन में उसे अपनाना
प्लास्टिक के भोजन को चबाकर खाने जैसी चेष्टा है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इसके परिणाम में दुःख के सिवा और कुछ नहीं है।

स्वयं जीवनसाथी पसन्द करने में सबसे बड़ी करुणता यह है कि

अपेक्षाओं का पहाड़ लेकर बैठे हुए वे लोग

२५-५०-१००-१५०-२०० तक मीटिंगें करते हैं,

इतनी मीटिंगें करने के बाद भी कहीं फिट हो जाए

ऐसा Fix नहीं है।

और अगर हो भी तो कितना प्रतिशत इसका कोई भरोसा नहीं

एक लड़की से मिलने के बाद वे लोग उसे घूर-घूरकर देखते हैं।

उससे अकेले में मिलते हैं।

अनेक प्रकार के प्रश्न पूछते हैं।

ये सारी बातें बेहूदी की सीमा पार कर जाए ऐसी प्रवृत्ति है।

और यह सारा प्रोसीजर पूरी होने के बाद

अन्त में बात No पर आती है।

तब तो वह लड़की मानसिक स्तर पर विधवापन का अनुभव करने लगती है।

उसके इस आघात की किसको चिन्ता है?

मेरी प्यारी,

यह मीटिंग ही ऐसी है,

जिसमें प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को हर प्रकार से श्रेष्ठ साबित करने का प्रयास करता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

शिष्टाचार और सौजन्य दिखाने के लिए दोनों पक्ष परस्पर स्पर्धा में उतर जाते हैं।

इस स्पर्धा में सच्चाई या सहजता नहीं है,

बल्कि अच्छा लगना/अच्छा कहलवाने की

प्रबल आन्तरिक इच्छा होती है।

इसप्रकार देखने पर

ये सारी मीटिंगें

एक प्रकार का माया-प्रपंच ही बन जाती हैं।

ऐसी मीटिंग का क्या अर्थ?

मीटिंग के नाम पर

अकेले में Boundry-line cross कर

बाद में उस कन्या को निराशा में डाल देनेवाला

और फिर नई मीटिंगों में बीज़ी हो जानेवाले लड़के

इस मीटिंग के सिस्टम को ही गलत प्रूफ कर रहे हैं।

कितना झूठा और कितना भयानक है

यह बदला हुआ चित्र!

सही सिस्टम तो वह था।

जब घर के बुजुर्ग ही अपने तरीके से

कुल-शील-संस्कार आदि सारी बातों को

निश्चित रूप से जान लेते थे

और फिर यदि योग्य लगे तो स्वयं वहाँ जाकर विवाह तय कर देते थे।

वह सिस्टम

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

सम्पूर्ण समाज को सतत् श्रेष्ठ रहने की प्रेरणा देती थी।
गलत काम करनेवाले लोग डरते थे।
हमारे संस्कार सुरक्षित रहते थे।
और परस्पर संस्कारी पात्र मिलने से
एक सुखी जीवन का श्रीगणेश हो जाता था।
हमारे माता-पिता हमारे दुश्मन नहीं हैं, बेटा।
उनके जैसा भला चाहनेवाला
हमारे लिए और कोई नहीं है।
आज की जनरेशन उनके ज्ञान का, उनके अनुभव का
और उनकी हितकर भावनाओं का लाभ लेने के बदले
उनका ही विरोध करनेवाली
और उनका सामना करनेवाली हो गई है।
यही इस जनरेशन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

मेरी प्यारी,
हमारे यहाँ बढ़ई का बेटा बढ़ई बनता था,
लुहार का बेटा लुहार बनता था।
कुम्हार का बेटा कुम्हार बनता था।
मजबूत जातिव्यवस्था के कारण
आनेवाली पीढ़ियाँ वंशपरंपरागत गुणधर्म
बिल्कुल सही रूप में अपना लेती थीं।
प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यापार-उद्योग की कुशलता

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

जन्मजात मिल जाती थी।

उस कुशलता का समाज और देश को पूरा लाभ मिलता था।

सबके पास रोजगार के अवसर तैयार ही रहते थे।

बारह-चौदह वर्ष का बेटा तो कमाने भी लगता था।

आज की मँहगाई, बेकारी और मन्दी की इस आग में

जो यह सारा देश जल रहा है,

उसमें इस जाति व्यवस्था और विवाह व्यवस्था का-अनादर करना ही

बहुत बड़ा हाथ है।

एक ओर उस व्यवस्था को तोड़ डालना

और दूसरी ओर बेकारी भत्ता जैसी व्यवस्था करनी

यह सब हास्यास्पद तो है ही।

गम्भीरतापूर्वक विचार करने योग्य भी है।

मेरी प्यारी,

हमारी प्राचीन वर्णव्यवस्था में रोजगार की सुरक्षा थी।

उसीप्रकार सद्गुणों और स्वास्थ्य की भी सुरक्षा थी।

रिश्वत और भ्रष्टाचार के जाल में आज सारा देश बुरी तरह फँस चुका है।

और पिछले हजारों वर्षों में जो रोग नहीं थे,

वैसे विचित्र प्रकार के रोग चारों ओर व्याप्त हो चुके हैं।

इसका एक कारण है

इस प्राचीन सुव्यवस्थित परम्परा में

अनुचित रूप से दखलंदाजी करना।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

प्राचीन का कोई दुराग्रह नहीं है।

होना भी नहीं चाहिए।

परन्तु आधुनिकता यदि भयानक खतरा बन जाए,

सुखी और स्वस्थ जीवन के लिए एक अभिशाप बन जाए,

सतरंगी परदे के पीछे का चित्र बिल्कुल काला-स्याह हो,

तो क्या करना चाहिए?

एक सज्जन के लिए

हथौड़ा लेकर उसे तोड़ डालने के सिवाय और कोई भी विकल्प नहीं हो सकता

बेटा,

अन्तर्जातीय विवाह करना

यह अन्य जाति की कन्या की

एक प्रकार से हत्या कर देने जैसी है।

कारण कि बाहर की एक कन्या का

जिस जाति में विवाह होता है,

उस जाति के अन्दर की एक कन्या दुःखी हो जाती है।

अन्तर्जातीय विवाह

अपनी भावी सन्तान के प्रति किया गया घोर अन्याय है।

कारण कि वह सन्तान वर्णसंकर बनेगी।

उसके शरीर का आकार, उसका आरोग्य,

उसका विल पावर, उसकी ब्राईटनेस,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसकी मेमरी, उसका कैरेक्टर,

उसकी स्किल्स

उन सबके साथ

एक प्रकार का जुआ खेलने जैसा है।

दुनिया भर के हॉस्पीटल, युनिवर्सिटी और पुस्तक इकट्ठी होकर भी जिसे पूरी न कर सके, ऐसी यह कमी है।

मेरी प्यारी,

इस सम्पूर्ण चित्र का सार यही है

कि अपने मैरेज का डिसीज़न

अपने हाथ में रखने में भलाई नहीं है।

शायद माता-पिता पूछें,

कि तेरे लिए कैसा लड़का/लड़की लाऊँ?

तब स्मार्ट-एट्रेक्टिव-रिच-डिग्रीधारी

ऐसा कोई भी Choice न कहते हुए

बुद्धिमान लड़के या लड़की को अपनी जाति का भी

सुशील और संस्कारी पात्र ही पसन्द करने के लिए कहना चाहिए।

कारण कि यदि जीवन में सचमुच सुखी बनना हो,

तो अन्य सारे मापदण्ड गलत हैं।

बेटा,

जीवन का असली खेल जब प्रारम्भ होता है,

तब फेयर स्कीन या फेयर लुक काम में नहीं आते हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तब वॉक स्टाईल या टॉक-स्टाईल भी काम नहीं आते हैं।

उस समय म्युजिक पीस जैसे पात्र

अपने आपको प्रकाशित करते हैं,

और मनुष्य को दुःखी कर देते हैं।

I Suggest you a book

विवाह करने से पहले

There are eight live stories.

That may be a complete engagement guide.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

FAMILY

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

Purposely my daughter !

I don't say joint family.

Because

Family itself means joint family.

When you asks someone for a pot.

No one gives you a broken pot.

Because actually that's not a pot.

By the same way.

Broken Family is not a family.

My dear,

विवाह का अर्थ

मात्र पति के साथ ही नहीं बल्कि पूरे परिवार के साथ सम्बन्ध होता है।

कुछ लड़कियाँ ऐसी होती हैं, जिन्हें अपने पति और पुत्र के सिवाय सारी दुनिया

बिल्कुल Meaningless लगती है।

उनकी दृष्टि में माँ-बाप एक बोझ के अलावा और कुछ नहीं हैं।

या तो वे पहले से ही Demand करती हैं।

'मुझे सेपरेट फ्लैट चाहिए।'

अथवा

आधी-आधी रात तक

खरी-खोटी बातों से पति का दिमाग खा-खाकर परिवार को तोड़ डालती है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

परन्तु ऐसा करना वास्तव में अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है।

संयुक्त परिवार एक विशाल बरगद है।

उससे अलग रहने पर संसार की धूप अधिक लगती है।

वह एक छतरी की तरह है बेटा।

जो कभी भी छत्रभंग नहीं होने देती।

एक डॉक्टर Children specialist है।

वर्षों से practice करता है।

उसने अपना experience लिखा है।

"पहले मेरे यहाँ पेशेन्ट के साथ

उसकी मम्मी और दादी आती थी।

मम्मी को मातृसहज वात्सल्य के कारण जब बालक की बहुत चिन्ता होती है, तब उसकी सास उसे समझाती है,

कि 'छोटी उमर में यह सब होता है,

दाँत आने लगते हैं तो दस्त भी होता है,

ठंडी हवा लग जाए तो शरदी भी होती है,

और ऋतु बदलता है तो बुखार भी आता है।

कभी जगह बदलती है तो सुस्ती जैसा भी लगता है।

इसमें इतनी चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।

तू एक काम कर, घर जाकर आराम कर।

मुझे वैसे भी नींद कम आती है।

रात को मुन्ना जागेगा तो मैं उसे सम्भाल लूँगी।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

अधिक जागने से तेरी तबियत बिगड़ेगी

तो बेकार में परेशानी बढ़ जाएगी ।'

संयुक्त परिवार की इस मधुरता की मैं प्रशंसा करता था ।

परन्तु अब चित्र बदल गया है ।

बालक के साथ उसके मम्मी-पापा आते हैं ।

मम्मी खूब चिन्ता करती है ।

तो पापा कहता है-

'डॉक्टर साहब कहते हैं ना, अच्छा हो जाएगा ।

ज्यादा नाटक मत कर ।'

पत्नी को धमकाकर पति ऑफिस चला जाता था ।

और पत्नी मेरा दिमाग खाती ...

'डॉ. साहब मेरे बेटे को क्या हो गया है?

यह अच्छा तो हो जाएगा ना?

इसका इलाज तो सही चल रहा है ना...'

न तो उसके पास अनुभव है और न कोई अनुभवी ।

चिन्ता के कारण वह मेरे ऊपर अविश्वास करके

बालक को लेकर दूसरे हॉस्पीटल में जाती है ।

जो इलाज चल रहा होता है, वह भी अधूरा रह जाता है ।

अतः बालक को स्वस्थ होने में विलम्ब होता है ।''

आचारांग-वृत्ति में लिखा है -

एकं हि चक्षुरमलं सहजो विवेक-

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

स्तद्वद्भिरेव सह संवसतिर्द्वितीयम् ।
एतदद्वयं भुवि न यस्य स तत्त्वतोऽन्ध
स्तस्यापमार्गचलने ननु कोऽपराधः ? ।।

एक निर्मल नेत्र है स्वाभाविक विवेक
और दूसरा है विवेकी की संगति
जिसके पास ये दोनों नहीं हैं, वह वास्तव में अन्धा है।
वह यदि कोई गलत कदम उठाता है
तो उसमें उसका क्या दोष है?

My dear,
Bamboo की झाड़ी होती है ना?
उसमें एक विशेषता होती है।
अगर कोई Bamboo नीचे से टूट जाता है,
तो भी वह नीचे नहीं गिरता है।
क्योंकि आस-पास के Bamboo का
उसे Support मिलता है।
वेणुर्विलूनमूलोऽपि वंशगहने महीं नैति ।
जीवन एक War है बेटा।
इसमें अच्छे-बुरे प्रसंग, कष्ट, तकलीफ
ये सभी एक के बाद एक आते ही रहते हैं।
यह समझकर चलने में ही बुद्धिमत्ता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

ऐसी स्थिति में कौन साथ देता है?

हिम्मत बढ़ानेवाला और साथ देनेवाला कौन होता है?

"हम हैं ना? क्यूँ चिन्ता करते हो?"

ऐसा कहनेवाला कौन होता है?

परिस्थितियों के कारण जब हम टूट जाते हैं।

तब संयुक्त परिवार हमें Strong support देता है।

My dear,

Unity is strength.

पाँच ऊँगलियाँ इकट्ठी होती है तब मुट्ठी बनती है।

Joint family is the biggest & perfect social security.

शायद बाहर का कोई भी कष्ट न हो,

तब भी

पति ऑफीस गया हो और जवान स्त्री घर में अकेली हो,

वह क्या बड़ी Insecurity नहीं है?

बेटा,

आज दुनिया में ऐसे बहुत सारे पति हैं,

जिनके मन में शंका का कीड़ा कुलबुलाता रहता है।

कॉलेज के पुराने मित्र... सेलफोन... फेसबुक...

घर में अकेली स्त्री...

फिर ?

झगड़ा... आमने-सामने दलीलबाजी...तू तू मैं मैं और सुख-शान्ति का

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

सत्यानाश।

दुनिया में आज हजारों पति ऐसे हैं,

जिन्होंने व्यावसायिक जासूसों को

पत्नी की जासूसी करने का काम सौंपा है।

हजारों पत्नियाँ पति की जासूसी कराती हैं।

सेलफोन कम्पनी के पास निरन्तर ऐसी डिमान्ड आती है

'इस नम्बर पर जितने भी Calls आते हैं,

उसका TAP मुझे चाहिए।'

शायद पत्नी सही और बेदाग भी हो,

फिर भी उसकी सच्चाई का साक्षी कौन है?

शायद किसी का मन चंचल बन गया हो,

फिर भी जिसकी शरम उसे रोके,

ऐसा घर में कौन है?

मेरी प्यारी,

संयुक्त परिवार में सुरक्षित पत्नी के लिए

पति को जो विश्वास होता है,

उसका सौवाँ भाग विश्वास भी

अकेली पत्नी के प्रति नहीं होता है,

और वह स्वाभाविक भी है।

चारों ओर का वातावरण... आसपास घटित होनेवाली घटनाएँ...

एकान्त और अनुकूलता की फिसलन भरी भूमि... और चंचल मन।

यह सब जानकर पति किसी अनहोनी की सम्भावना करे, तो इसमें कोई

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

नई बात नहीं है।

बेटा,

सुखी दाम्पत्य जीवन का मूल विश्वास है।

विभाजित परिवार में इस विश्वास का हमेशा अभाव रहता है

परिणामस्वरूप पारस्परिक प्रेम सतत् घटता जाता है।

और जीवन एक मरुस्थल बन जाता है।

अकेली स्त्री

शायद हर प्रकार से पवित्र हो,

फिर भी उसे Soft target बनाकर

कौन कब क्या कर डाले इसका क्या भरोसा ?

सास-ससुर-ननद-देवरानी-जेठानी

इन सबके बीच में रहनेवाली नारी के सामने कोई आँख उठाकर भी नहीं देख सकता।

यह स्वाभाविक है।

इस स्थिति में नारी स्वयं भी निश्चिन्त रहती है।

उसका मन शान्त और प्रसन्न रहता है।

परिणाम स्वरूप नए रोगों से भी मुक्ति मिलती है।

घर में तनाव नहीं रहता और स्वस्थ नारी के द्वारा स्वस्थ परिवार खुशहाल रहता है।

जवानी के जोश में

जब पति-पत्नी का परस्पर घर्षण होता है।

पत्नी या बालकों के साथ मार-पीट का प्रसंग आता है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तब सास-ससुर अधिकारपूर्वक उस जोश को शान्त कर देते हैं।

आवेश उतर जाने के बाद तो सबकुछ शान्त हो जाता है और पश्चात्ताप होता है।

लेकिन फिर पश्चात्ताप का कोई मतलब नहीं होता।

यदि पहले से ही शान्ति हो तभी सार्थक होता है।

और यह संयुक्त परिवार में ही सम्भव होता है।

सूरत का एक परिवार

पति-पत्नी खाना खाने बैठे हैं। पत्नी परोस रही है।

पहला कौर खाते ही पति चिल्लाया - "दाल में नमक ही नहीं है। मैं इतनी मेहनत करके कमाता हूँ और तुम सही ढंग से दाल-भात भी खिला नहीं सकती?"

तभी सास ने शान्तिपूर्वक अपने बेटे से कहा,

"धीरु, आज दाल मैंने बनाई है।

बोलो, कुछ कहना है क्या?"

बस बात यहीं समाप्त हो गई।

धीरुभाई शान्त हो गए।

संयुक्त परिवार बालकों को वात्सल्य देता है।

संवाद और सौहार्द्र देता है।

बालक देखता है कि मम्मी-पापा

अपने माँ-बाप के प्रति कितना आदर-भाव रखते हैं!

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उनकी कितनी सेवा करते हैं !

दादा-दादी की उपस्थिति में मम्मी-पापा का बोलना-चालना भी

कितना मर्यादित हो जाता है।

चाचा पिताजी के साथ कितनी शालीनतापूर्वक व्यवहार करते हैं !

दादी की तबियत जब बिगड़ती है

तो सारा घर उनके लिए कितना परेशान हो जाता है!

आज मम्मी की तबियत अच्छी नहीं थी तो चाची ने कैसे उन्हें किचन से बाहर निकालकर सोफे पर सुला दिया था !

My dear,

आज बालकों को Visual education देने की बात चल रही हैं।

जिस School में Smart board होता है

वह School Forward माना जाता है।

But let me say

Joint family is the great smart board.

जिसमें बालकों को अधिकतर जीवनोपयोगी शिक्षा

Not only visual Form में

बल्कि Live Form में मिल जाती है।

बालक जितना पढ़-लिखकर सीखता है,

उससे अधिक वह देख-सुनकर सीखता है।

Joint family में जो सीखने को मिल सकता है

वह सिखलाने में दुनिया की कोई भी शैक्षणिक संस्था सक्षम नहीं है।

एक नारी जब अहंकार या स्वार्थ की भावना से सेपरेट होती है,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तब तात्त्विक दृष्टि से अपने बालकों को विनय-विवेक से, सेवाभाव से, परोपकारवृत्ति से तथा सहिष्णुता से सेपरेट कर रही होती है।

जिसकी कीमत उस नारी को स्वयं ही चुकानी पड़ती है।

मेरी प्यारी,

प्रत्येक 'माँ' की एक इच्छा होती है

कि उसका बेटा हमेशा के लिए उसका बना रहे।

वह कभी उसकी नजर से दूर न हो।

वह उसकी सेवा करे, उसका हौसला बढ़ाए।

उसके प्रति पूर्ण विनयी बना रहे।

परन्तु 'माँ' के लिए ऐसा उपदेश देना

सम्भव नहीं होता।

शायद ऐसा उपदेश संतान को दिया भी जाय उसका कोई अर्थ नहीं

बालक तो आचरण की भाषा समझता है।

उसके पिता ने अपनी मम्मी की कितनी सेवा की ?

उनके प्रति कितना आदर-सम्मान किया ?

उनका कितना हौसला बढ़ाया ?

और दूसरे के प्रति कितना हँसते-हँसते सहन किया ?

यदि यह Visual education है, तो उपदेश की कोई जरूरत नहीं।

और यदि यही नहीं है, तो उपदेश का कोई मतलब नहीं है।

मेरी लाडली,

माँ-बाप की स्वार्थी वृत्ति संतानों को वैसे ही संस्कार देती है।

विदेशों में संयुक्त परिवार जैसी कोई चीज नहीं होती।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इसलिए वहाँ की नई पीढ़ी बिल्कुल आत्मकेन्द्रित हो गई है।

किसी के लिए कुछ विचार करना... किसी के लिए कोई त्याग करना...

किसी को माफ कर देना... किसी के Under में जीना

यह सब उनके लिए Just like impossible हो गया है।

This is the result of breaking a family.

जिसकी बहुत बड़ी कीमत जीवन भर चुकानी पड़ती है।

You may ask my daughter,

कि सास का Nature हमें set न होता हो तो?

ननद का Behavior अच्छा न हो तो ?

देवरानी के साथ मनमुटाव होता हो तो?

I say so what ?

क्या एक 'माँ' को उसके बेटे से अलग कर देने के लिए ये सभी पर्याप्त कारण हैं?

Think nutraly my dear.

Suppose वह सास अगर तुम खुद हो तो ?

तो इस विषय में तुम्हारा क्या Option होगा ?

बेटा,

आज की नवविवाहित लड़कियाँ सास को साथ रखने के लिए तैयार नहीं हैं।

रात-दिन दो पैसे कमानेवाला पुरुष महिलाओं के इस तकरार से दुःखी हो जाता है।

Tell me my daughter,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तुम्हारा बेटा तुम्हारे Old-age में तुम्हारी सेवा करे,

क्या ऐसा तुम चाहती हो?

Then understand.

By the same way

पति के मम्मी-पापा भी ऐसा ही चाहते हैं।

यह मात्र उनकी इच्छा ही नहीं है, बल्कि उनका अधिकार भी है।

जिसे छीन लेने का किसीको अधिकार नहीं है।

मेरी प्यारी,

Age जब ४५-५० को पार कर जाती है।

तब more than 99% ladies का Nature बदल जाता है।

That's but natural

ये सारी परिस्थितियाँ... उनकी पीड़ा...

उसका जो अनुभव करता है, वही समझ सकता है।

इस समय

दूसरे के अनुकूल होना - उसका हौसला बढ़ाना -

उसे सहन करना - और गम खाने का प्रयास करना

या अलग होकर उस उस घाव पर नमक छिड़कने का प्रयास करना चाहिए?

हमारी मानवता क्या कहती है ?

वह व्यक्ति हमारे साथ set हो जाए,

ऐसा आग्रह रखना

क्या यह एक प्रकार की निष्ठुरता नहीं है?

बेटा,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मैं तो मानवता से भी अधिक तुम्हें आत्मीयता की बात करना चाहता हूँ।

Suppose,

Door close करते हुए तुम्हारी finger उसमें कुचल गई।

गहरा जख्म हो गया।

घाव पक गया... पीड़ा धीरे-धीरे बढ़ती ही गई...

बात टीस उठने तक पहुँच गई।

Now the pain is unbarrable.

Who give you such pain ?

Finger no ?

Why don't you cut-off it ?

Tell me why not?

Because it is yours.

Well my daughter.

Now return to the point.

सास का Nature हमें match नहीं होता है।

उनके बोलने-चालने के किसी तरीके से हमें तकलीफ होती है।

तो क्या इसलिए उन्हें cut-off कर देना चाहिए?

इसका क्या meaning ?

That means उनके साथ

हमें किसी प्रकार की आत्मीयता नहीं है।

Finger के साथ आत्मीयता है।

'ममत्व' का भाव है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तो सारी मनुष्य असह्य वेदना देनेवाली Finger को भी

काट नहीं डालता।

उसके साथ थोड़ा भी प्रतिकूल व्यवहार करने का

विचार तक नहीं करता।

बल्कि उसके अनुकूल होने का ही प्रयास करता है।

Can you understand my daughter ?

Real question Nature का है ही नहीं।

बेटे का Nature खराब हो तो

सारी दुनिया निभा लेती है।

Real question तो है आत्मीयता का।

You may ask

सास के साथ कैसे आत्मीयता हो सकती है?

Well, first you answer me

क्या पति के साथ आत्मीयता है ?

If yes, Than understand,

कि इसी में सास के साथ आत्मीयता समा जाती ।

रेलवे स्टेशन पर से दो महिलाएँ गुजर रही थीं।

उनमें से बड़ी उमर की एक महिला को

लूज़ मोशन जैसा हो गया।

दूसरी महिला उसे नजदीक के एक घर में ले गई।

उसके कपड़े प्रेम से अपने हाथों से धो डाले।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसे आराम करने को कहा।

देखनेवालों को लगा कि वह अवश्य उसकी माँ होगी।

धीरे से किसीने पूछा। आपकी मां है क्या

Smile के साथ उसने जवाब दिया-

'यह वो स्त्री है, जिसकी कोख में

नौ महीने तक मेरा सुहाग पला था ।'

I am talking about आत्मीयता।

यदि सास के साथ या ससुराल के अन्य सदस्यों के साथ आत्मीयता नहीं है, तो समझ लें कि वास्तव में पति के साथ भी आत्मीयता नहीं है।

बेटा,

After your marriage

यदि तुम्हें पता चले

कि तुम्हारी मम्मी के साथ तुम्हारी भाभी का व्यवहार अच्छा नहीं है।

अथवा वह उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखती है।

तो तुम्हें कैसा लगेगा ?

तुम्हारी भाभी आधी-आधी रात तक

तुम्हारे भाई को अलग होने के लिए समझा रही है।

ऐसा News तुम्हें मिले

तो तुम्हारे हृदय को कितना बड़ा धक्का पहुँचेगा ?

जिस दिन तुम्हें Message मिलेगा

कि तुम्हारा भाई मम्मी-पापा से अलग हो गया है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तो वह दिन तुम्हारे लिए कैसा रहेगा?

बस my dear,

यही सारे Points of view अपने Side में भी लगाने चाहिए।

एक बात समझ लेना बेटा,

न्याय - अन्याय

तर्क - वितर्क

सही - गलत

चलेगा - नहीं चलेगा

ये सारी बातें प्रेम और आत्मीयता में होती ही नहीं है।

रूपिया आना पाइनो तुं छोड सरवाळो हवे,

आ तो प्रेमनो वेपार छे हंमेशा खोट करशे।

सचमुच मेरी बेटी,

प्रेम के व्यापार में घाटा ही कमाई होती है।

तुम्ही सोचो बेटा,

दूसरों की कमजोर स्थिति में

तर्क की भाषा में तोड़-जोड़ करनेवाला व्यक्ति

अपनी जरूरत के समय दामन फैलाकर प्रेम की भीख माँगे। तो कैसा लगेगा?

Always remember the example of the finger.

भले ही उसमें घाव हो,

घाव पक गया हो,

टीस मारता हो,

असह्य वेदना दे रहा हो,

परन्तु मेरी है।

बात finish.

मेरी प्यारी,

आत्मीयता अमृत है।

जो किसी भी व्यक्ति को खरीद सकती है।

बुरी परिस्थिति में जिस Finger को तुमने सम्भाल लिया है,

वह तुम्हें सारी जिन्दगी Service देगी।

तुम जिस व्यक्ति के अनुकूल होगी,

उसकी किसी इच्छा या आवश्यकता की पूर्त्ति करोगी,

उसकी कोई Ego होगी

तो तुम सामने से उसे fulfill कर दोगी।

तो वह व्यक्ति हमेशा के लिए तुम्हारा हो जाएगा।

देर-सबेर यह परिणाम तो आएगा ही।

'आत्मीयता' तो इससे भी बड़ी वस्तु है,

कि अपने व्यक्ति के लिए हम जो कुछ भी त्याग कर देते हैं।

उससे हमें on the spot आनन्द प्राप्त होता ही है।

बेटा,

आत्मीयता हमेशा आनन्दमय होता है।

हमारे यहाँ एक सुन्दर कहावत है -

घी कहाँ गिरा -दाल में।

गिरा लेकिन waste नहीं हुआ।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

दाल में ही गिरा ना?

Successful ही है।

जहाँ आत्मीयता है,

वहाँ तन से, मन से, धन से -

जिस प्रकार भी सहयोग देना पड़े।

उस समय यही कहावत लागू पड़ती है -

घी कहाँ गिरा - दाल में।

बेटा,

सास-ससुर और ननद के भी कुछ अरमान होते हैं।

बेटा और भाई से उसकी भी कुछ अपेक्षाएँ होती हैं।

वह स्वयं जिस घर में वर्षों से रहता हो,

उस घर के प्रति उसके हृदय में आधिपत्य के भाव जाग्रत होते हैं।

यह भी स्वाभाविक है।

वैसे भी स्त्री का स्वभाव भावुक होता है।

अतः बौद्धिक रूप से उसका व्यवहार उचित हो और हमें पसन्द हो।

ऐसा आग्रह रखा नहीं जा सकता है।

इस स्थिति में जो नारी झगड़े करके वातावरण को दूषित कर देती है।

और पति को समस्या में डाल देती है,

वह सचमुच मूर्ख सिद्ध होती है।

समझदार स्त्री हमेशा पति के माता-पिता और भाई बहन के प्रति आदर की दृष्टि से देखती है।

और उन्हें समझने का प्रयास करती है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

वह इस बात को अच्छी तरह समझती है कि तर्क, दलील और खींचातानी से परिस्थिति बिगड़ती है।

और मन खट्टा होता है।

अहम् को त्यागकर स्वयं कोई भूल न की हो,तो भी

प्रेमपूर्वक अपनी भूल स्वीकार कर लेने से

वातावरण स्वर्गीय बन जाता है।

यह Science एक पंक्ति में दे दिया है।

'बहेनी बा सासरीये नीची नजरे हालजो'

My dear,

This is the top secret of a happy married life.

स्वर्ग का मूल्य इतना ही है -नीची नजर।

दशवैकालिक आगम में कहा गया है -

णीयं सेज्जं गईं ठाणं

णीयं च आसणाणि य ।

णीयं य पाए वंदिज्जा

णीयं कुज्जा य अंजलिं ।।

शिष्य को गुरु की अपेक्षा नीची भूमि पर सोना चाहिए,

गुरु के पीछे चलना चाहिए, गुरु से नीचे रहना चाहिए।

गुरु के नीचे बैठना चाहिए। झुककर गुरु के चरणों में वन्दन करना चाहिए।

और झुककर गुरु के समक्ष अंजलि करना चाहिए।

साधनाजीवन को सफल करने का समग्र रहस्य

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इस एक श्लोक में समाहित है।

इसी श्लोक को सांसारिक जीवन में भी बुजुर्ग व्यक्तिओं के प्रति विनय के सम्दर्भ में भी लागू किया जाए तो लाखों घर टूटने से बच जाएँगे।

हमारे यहाँ ये सारी परम्पराएँ प्राचीन काल से चली आ रही थीं।

परन्तु आज

मनुष्य ने स्वयं ही उन ज्ञानस्रोतों की अवहेलना की है।

वह फीस दे-देकर जो पढ़ रहा है,

वह education

इन जीवनोपयोगी विषयों में अशिक्षित बना डालता है।

बेटा,

आज के समय में अधिकांश लोगों को परेशान करनेवाला कोई प्रश्न हो

तो वह आर्थिक प्रश्न है।

बाजार टूटते जा रहे हैं।

रोजगार कम होते जा रहे हैं।

और प्रत्येक क्षेत्र में मँहगाई बढ़ती जा रही है।

इस समस्या का व्यक्तिगत स्तर पर यदि कोई समाधान है

तो वह है Joint family.

Naturaly उसमें खर्च बहुत कम होता है।

बहुत सारी बातों में तो खर्च आधा से भी कम हो जाता है।

अलग रहने में तो भाड़ा और मेन्टेनेन्स से लेकर घूमने-फिरने और मनोरंजन के खर्च वास्तव में कमर तोड़ डालते हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

अलग घर, अलग धन्धा, अलग व्यवहार, अलग खरीदी,

इन सबों का जब हिसाब लगाया जाता है

तब मनुष्य को अपनी गलती का अहसास होता है।

लेकिन फिर मिया तो गिरे लेकिन टँगड़ी ऊँची ही है।

इस न्याय से इतनी परेशानी झेलकर भी मनुष्य अपने 'अहम्' को सुरक्षित रखता है।

याद आती है हितशिक्षाछत्रीशी **नाति सगाना घरे छोडीने एकलडा नव वसीए**

There are so much benefits Of the Joint family.

But I Know

तुम इतनी बड़ी स्वार्थी नहीं हो।

कि इस Benefits के लिए ही Joint family को नापसन्द करो।

मेरी बेटी,

एक आदर्श नारी के लिए तो

Joint family को पसन्द करने के लिए

यह एक ही Point enough है।

कि एक 'माँ' को उसके बेटे से अलग कर देना।

यह एक निम्न कक्षा का अपराध है।

दुनिया का कोई बहाना इस अपराध को सही साबित करने के लिए सक्षम नहीं है।

My dear,

पारिवारिक आत्मीय सम्बन्धों से जो सम्बन्ध तोड़ लेता है,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसे ऐसे पराए व्यक्ति के साथ पल्ला पड़ने की बारी आती है।

जो व्यावसायिक, लोभी और धूर्त्त होते हैं।

जो कभी भी आत्मीय सम्बन्धों की जगह नहीं ले सकते हैं।

यह खोट हमेशा के लिए खोट ही रहती है।

I hope, यह बात तुम्हारे mind में अच्छी तरह बैठ गई होगी।

Enjoy the joy of the joint family my daughter.

Love you very much.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

HOME

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

लाडली बेटी,

I ask you a question What's a home ?

तुम घर किसे कहती हो?

जहाँ पोस्टमैन पत्र लाकर देता है, वह घर ?

जिसका नाम-ठिकाना सबको दिया जा सके, वह घर ?

No my daughter, That's not enough.

घर वह है

जहाँ तुम अपना सारा भार उतारकर शारीरिक और मानसिक रूप से आपने आपको बिल्कुल हल्का महसूस कर सको।

बेटा,

घर ईंट, चूना और सिमेन्ट नहीं है।

घर का अर्थ है-परिवार, स्वजन।

घर का अर्थ है स्नेह और समर्पण की शाला।

जिस प्रकार पृथ्वी पर्यावरण पर टिकी हुई है,

उसी प्रकार घर भावावरण पर टिका हुआ है।

भावावरण,

जहाँ आत्मीयता है, अपनापन है, समझदारी है,

उदारता है, स्वार्पण है।

Home is sweet and only sweet

Where there is every one

We like to meet.

कुछ लोग ऐसे होते हैं।

जिनके लिए घर भी एक प्रकार का दौड़-धूप

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और सही-गलत प्रवृत्तियों का अनवरत प्रवाह होता है

परिवार के साथ बैठने का उनके पास बिल्कुल समय नहीं होता।

सभी अपनी-अपनी प्रवृत्तियों में मशगुल होते हैं।

जिनके लिए घर अर्थात् मात्र सोने के लिए जगह।

इसमें सहवास तो है, सहजीवन नहीं है।

मेरी प्यारी,

संवाद घर की शोभा है।

समझदारी घर की सुरक्षा है।

प्रेम घर की तुलसीक्यारी है।

बच्चे घर के हृदय हैं।

संतोष घर की सुगंध है।

गृहिणी स्वयं ही घर है।

तुम्हें यह बात कहते हुए

गोरांग ठाकुर की पंक्ति याद आती है

‘केवी रीते मकान घर थशे

दीकरीने ए रीतो हुं जणावुं छुं’

छगन और मगन

बहुत समय के बाद मिले।

मगन ने छगन से कहा,

“अरे, तू तो छः-आठ महीने बाहर घूम-फिरकर आए हो।

बाहर घूमने से बहुत कुछ जानने-सीखने को मिलता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तुमने क्या-क्या सीखा?''

छगन ने तुरन्त जवाब दिया,

''यही कि घर जैसा उत्तम स्थान

और कोई नहीं है।''

एक कहावत है - **धरती का छोर-घर है**।

दूसरी कहावत है - **घर तो घर है, बाकी सब बिल है**।

शर्त्त इतनी है कि हमारी ही किसी भूल से हमारा घर बिल न बन जाए।

घर को स्वर्ग बनाना और नरक बनाना नारी के हाथ में है।

समझदार नारी

घर को स्वर्ग का रूप देती है, जहाँ थका-मांदा व्यक्ति सुख चैन की सांस लेता है और एक सुकून का अनुभव करता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

ART

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

My daughter

There are so many types of art.

राईटिंग, एकाउन्टिंग, ड्रॉईंग, स्वीमिंग,

प्रोग्रामिंग, डिज़ाईनिंग, मार्केटिंग.. etc...etc...

यहाँ जो बात है वह Life-art की बात है.

दूसरों को दु:खी किए बिना सुखी होने का -Art.

दूसरों को धूप दिए बिना छाया का अनुभव करने का -Art.

दूसरों को पीछे किए बिना आगे रहने का -Art.

दूसरों को हराए बिना जीतते रहने का -Art.

दूसरों को अशान्त किए बिना शान्ति प्राप्त करने का -Art.

मेरी प्यारी,

जिसे Life art नहीं आता हो, उसके सभी art व्यर्थ हैं।

बेटा,

एक स्त्री के लिए Most important art यदि कुछ है

तो वह है

नए परिवाररूपी सरोवर में घुल-मिल जाने की कला

पति के माँ-बाप-बहन के साथ स्नेहपूर्ण सम्बन्ध।

पति-सास-ससुर जैसा चाहे, वैसा व्यवहार...

प्रसन्न मौन व्यक्तित्व...

आत्मीयता की सुरभित सुगन्धि।

किसी भी बात में पूर्ण निराग्रही...

दूसरों को श्रेष्ठ मानने की आदत।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

दूसरों को यश प्रदान करने की सहज वृत्ति।

दूसरों के only plus point पर दृष्टि...

दूसरों के Points of view को सम्मान देने की तैयारी...

My dear, this is the life of art.

जिसे बात-बात में बुरा लग जाता हो,

जो हमेशा अपने दुःख का रोना रोता हो,

जो आत्मप्रशंसा की लम्बी-लम्बी बातें करता हो,

सही-गलत बातों में जो खींचातानी पर उतर जाता हो,

भूल जाना, माफ कर देना, झुक जाना, दूसरों के लिए त्याग करना

इनमें से कुछ भी जिसे पसन्द न हो,

सामान्य परिस्थिति में भी जिसे गृहक्लेश का मुद्दा मिल जाता हो,

थोड़ा काम करके भी जिसे बहुत बड़ा काम करने का घमन्ड हो जाता हो,

ऐसी स्त्री के पास

चाहे कितनी भी बड़ी डिग्री का सर्टिफिकेट हो,

वास्तव में उसे मूर्ख ही समझना चाहिए।

मेरी प्यारी,

सही Life-art नहीं समझ सकनेवाले लोग दलील करते हैं-

क्या हम हमेशा ऐसे ही सहन करते रहें?

दूसरे लोग हमें दबाएँ और हम दबते रहें?

क्या हम अपनी जिन्दगी ऐसे ही जीते रहें?

क्या हमें अपना स्वाभिमान नहीं है?

सबकुछ तो सहन कर लेंगे,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

लेकिन कड़वे शब्द, खरी-खोटी बातें कैसे सहन होगी?

यदि मेरी बात सही है, तो इसे कैसे जाने दूँ?

काम मुझे ही करना है तो मैं अपने तरीके से ही करूँ ना?

बेटा,

ऐसी दलीलें तो एक मूर्ख व्यक्ति भी कर सकता है।

I say clearer-

एक मूर्ख व्यक्ति ही ऐसी दलीलें करता है।

सत्य-असत्य और न्याय-अन्याय

इन सारे points को ताक पर रखकर एक होशियार सेल्समैन ग्राहक को सम्भाल लेता है।

और ऐसा करके अपने profits का Level

अधिक से अधिक ऊँचा ला देता है।

सेल्स वर्ल्ड में बड़े-बड़े वर्ल्ड रेकॉर्ड बनानेवालो ने एकमात्र इसी कुशलता के बल पर करोड़ों डॉलर्स की कमाई कर ली है।

My dear,

We have to earn life pleasure

और वह कमाई

मैंने जो अभी कहा उस life art से ही हो सकती है।

ग्राहक को झूठा साबित करके उसकी बात और उसकी शिकायत को किसी भी तरह से गलत साबित करके, खुद ईमानदार है,

यह उसके दिमाग में ठूँसने के लिए मरा जा रहा सेल्समैन

वास्तव में अपना ग्राहक खो देता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और As a result

अपनी कमाई गँवा देता है।

मेरी प्यारी,

घर कोई दुकान नहीं है, और स्वजन ग्राहक नहीं हैं।

मैं तो तुम्हें यह कहना चाहता हूँ

यदि रुपये जैसी तुच्छ वस्तु के लिए भी

जाने देना, भूल जाना, दूसरे को बड़ा मान लेना

यह सब सरलता से खुशी-खुशी...

और आनन्दपूर्वक हो सकता हो

तो जीवन के सही आनन्द को प्राप्त करने के लिए

स्वस्थ और मस्त पारिवारिक जीवन के लिए

और लम्बे समय तक सचोट और उत्तम परिणामों के लिए

यह सब क्यों नहीं हो सकता है?

बेटा,

भौंक तो कुत्ते भी सकते हैं।

और लात तो गधे भी मार सकते हैं।

लेकिन ऐसा करके वे कुत्ते और गधे

अन्त में दुःखी ही होते हैं।

बाजार में दो पैसा कमाने के लिए भी यदि Art जरूरी है

तो समझ लेना

कि जीवन को आनन्द का उपवन बनाना हो

तो सीधे-सीधा मन में धारा हुआ करना,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

अपनी अपेक्षा को सर्वोत्कृष्ट मान लेना,
दूसरे की बातों को काटना,
बड़ा बनने के लिए कुछ भी करना
यह बिल्कुल सही रास्ता नहीं है ।
इस रास्ते से जाने पर उपवन नहीं,
बल्कि कूड़े का ढेर आता है ।
धीरजपूर्वक, प्रेमपूर्वक, आत्मीयतापूर्वक
और हृदयपूर्वक यह Art अपनाया जाए
तो उपवन खुद आकर हमें फूलों का हार पहनाएगा ।
वे फूल जिसकी प्रत्येक पंखुड़ियों में प्रसन्नता होगी,
एक कहावत है –
त्यागे उसके आगे, माँगे उससे भागे
प्रतिष्ठा एक ऐसी चीज है
कि जो इसका त्याग करता है,
उसे यह स्वयं आकर मिलता है
और जो इसकी माँग करता है,
उससे यह दूर भागता है ।
बेटा,
सेल्समैनशिप के जो भी सिक्रेट्स हैं,
वे सभी यदि हम सफल पारिवारिक जीवन के लिए अपना लें
तो इसके लिए हमें कोई बिज़नेस-बुक पढ़ने की
या कोई सेमिनार अटैन्ड करने की जरूरत नहीं रहती ।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

Logic, modesty और Speech

इन ३ points में हमने जिन सद्गुणों की चर्चा की,

उन सद्गुणों को हृदयपूर्वक active बनाने के लिए

यही एकमात्र कर्त्तव्य है।

इसमें मात्र इतना ही समझना है कि खून के रिश्ते में लापरवाही जायज है।

माँ-बेटी एक दूसरे को चाहे कुछ भी कह दे।

लेकिन यह बात दोनों जानते हैं कि हृदय का प्रेम स्थायी होता है।

दूसरे के आँगन में सम्बन्धों की देखभाल करनी पड़ती है।

उसका बहुत ध्यान रखा जाए यह खूब जरूरी बन जाता है।

सम्बन्धों को निभाने के विषय में

एक great secret यह है

कि **सम्बन्धों को यदि टिकाए रखना हो तो**

क्षत्रियवृत्ति नहीं

बल्कि रणछोड़ वृत्ति ही उपयोगी है।

घर के बाहर भी युद्ध करना उचित नहीं है।

तो फिर घर के अन्दर की बात क्या करनी।

आत्मसम्मान और अभिमान

इन दोनों की भेदरेखा में अच्छे-अच्छे लोग धोखा खा जाते हैं।

इस उलझन को सुलझाने की अपेक्षा यदि दूसरों के आत्मसम्मान को प्रमोट करने का लक्ष्य रखें, तो सारी दिशा और दशा बदल जाएगी।

कोई मुझे चाहे, मुझे समझे; यही प्रत्येक व्यक्ति की अभिलाषा होती है।

मेरी प्यारी,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मार्क ट्वेई ने कहा था –

"यदि कोई मेरी या मेरी कृति की प्रशंसा मुझे सुनाए

तो मैं एक सप्ताह तक बिना खाए रह सकता हूँ"

मनुष्यमात्र की यह भूख होती है।

यदि इसे सन्तुष्ट करना आ जाए तो सारे सम्बन्ध सुहाने बन जाएँगे

अपनी भूल न होने पर भी सहज रूप से उसे स्वीकार कर लेना

और दूसरे की भूल को अपने सिर पर ले लेना

यह सामान्य मनुष्य के वश के बाहर की बात है।

एक महान व्यक्ति ही यह काम कर सकता है।

और उस व्यक्ति को अपनी इस महानता का फल

देर या सबेर मिलता ही है।

किसी के स्वभाव से यदि हमें ठेस पहुँचे

तो उसे घाव में बदल देना

यह दुःखी होने की कला है।

और जब ऐसी ठेस पहुँचे तब अपने आपको Take it easy कहकर सम्भाल लेना यह सुखी होने की कला है।

लेकिन हमारी जिद दुःखी होने के लिए ही होती है।

अतः इसके लिए दूसरों को दोष देने का कोई मतलब नहीं है।

My dear,

एक सुन्दर घटना कहीं पढ़ी थी।

उपाश्रय में गुरु बैठे हैं।

कोई व्यक्ति आकर उनके सामने अपनी समस्या प्रस्तुत करता है।

गुरु प्रेमपूर्वक उसका सुन्दर समाधान देते हैं।

वह व्यक्ति आवेश में आकर वही समस्या पुनः प्रस्तुत करता है।

गुरु पहले की ही भांति उसे बहुत अच्छा समाधान देते हैं।

वह व्यक्ति पुनः पुनः उसी समस्या को दुहराता है।

गुरु उसे पूर्ण वात्सल्य पूर्वक सुन्दर समाधान देते ही रहते हैं।

लगभग डेढ़ घन्टे तक यह संवाद चला।

आखिर वह व्यक्ति उठकर चला गया।

एक शिष्य बहुत देर से इस दृश्य को देख रहा था।

आँखों में शिकायत का भाव लेकर वह गुरु के पास आया।

दिल खोलकर गुरु से बात की।

“इस व्यक्ति को आपने इतनी अच्छी तरह से समझाया

फिर भी वह आपका दिमाग खाता रहा?

आपको कितना परेशान किया?”

गुरु ने स्मित करते हुए कहा–

“उसका स्वभाव ही ऐसा था,

इसमें वह भला क्या कर सकता है?”

शिष्य ने कहा –

“लेकिन, आपके साथ भी ऐसा बर्ताव ?”

गुरु शिष्य की ओर देखते रहे।

इसी प्रकार कुछ समय बीत गया।

मानो बात बदल रहे हों,

इसप्रकार गुरु ने कहा,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

"हम रोज सुबह देरासर जाते हैं ना, तब एक व्यक्ति अपने घर से निकलकर हमारे पैर छूता है।

तुमको पता है ना?"

"वह लँगड़ा व्यक्ति ना?"

"हाँ,

वह व्यक्ति कितना टेढा-मेढा चलता है,

तुने मार्क किया होगा - 'हा'

लेकिन वह व्यक्ति लँगड़ा है

तो ऐसे ही चलेगा ना?"

"यह सही है,

लेकिन मेरे सामने भी ऐसे ही चलेगा?

मेरे सामने भी सीधा नहीं चल सकता है ?"

"आप ऐसा क्यों कहते हैं?

उसके पैर लँगड़े हैं, तो वह ऐसे ही चलेगा ना?"

"बस वत्स,

तुमको इतनी बात तो समझ में आ गई ना?

तो समझ लो कि अभी-अभी जो व्यक्ति गया,

उसकी जीभ लँगड़ी थी।"

My dear,

प्रत्येक मनुष्य अधूरा होता है।

उसकी कोई न कोई Limit होती है।

किसी न किसी विषय में वह लँगड़ाता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उस विषय में उससे पूर्णता की अपेक्षा रखनी ऐसी निष्ठुरता है

जैसी निष्ठुरता एक लँगड़े व्यक्ति से वह Normal तरीके से चले, ऐसी अपेक्षा रखने में है।

बेटा,

यह अपेक्षा एक प्रकार की मूर्खता है।

कारण कि इसकी पूर्त्ति सम्भव नहीं है।

लँगड़े व्यक्ति के प्रति जिस प्रकार किसी भी मनुष्य को सहानुभूति होती है।

ठीक उसी प्रकार

किसी का स्वभाव गुस्सावाला हो,

अहंकारवाला हो,

तीखा बोलनेवाला हो,

या ईर्ष्या करनेवाला हो,

यह सब एक प्रकार का लँगड़ापन है।

यह वास्तव में बाह्य अपंगता से भी अधिक दया का पात्र है।

हमारी मानवता हमें

उसके प्रति सहानुभूति का भाव रखना सिखलाता है।

पारिवारिक भावना और आत्मीयता तो इससे भी अधिक

सबको अपने में समा लेना,

और लँगड़ाते हुए शरीर को अपनी तरफ से सपोर्ट देना सिखलाता है।

जंगल में दो व्यक्ति हैं।

एक अन्धा है और दूसरा पंगु (विकलांग) है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

जंगल में भयानक आग लग गई है।

धीरे-धीरे आग फैल रही है।

पंगु देख सकता है, पर चल नहीं सकता।

अन्धा चल सकता है, पर देख नहीं सकता।

अब?

वैसे तो वे दोनों उस आग में जलकर राख हो जाते,

परन्तु उन्होंने एक रास्ता निकाला।

अन्धे व्यक्ति के कन्धे पर लँगड़ा बैठ गया।

लँगड़े के डायरेक्शन के अनुसार अन्धा चलने लगा।

दोनों सुरक्षित रूप से जंगल से बाहर निकलकर शहर में पहुँच गए।

आवश्यकनिर्युक्ति ग्रन्थ में यह बात कही गई है -

अंधो य पंगू य वणे समिच्चा

ते संपउत्ता णयरे पविट्ठा ।।

मेरी प्यारी,

जीवन की सार्थकता

एक दूसरे के अधूरेपन का मजाक उड़ाने में नहीं है,

बल्कि एक दूसरे के अधूरेपन की पूर्त्ति करने में है।

This is the life-art my daughter

Never forget it.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

WIFEHOOD

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

महाभारत के वनपर्व की एक घटना है।

एक यक्ष युधिष्ठिर से प्रश्न करता है –

"सांसारिक पुरुष का घनिष्ठ और सच्चा मित्र कौन है?"

युधिष्ठिर उत्तर देता है –

"पत्नी"

Yes my daughter,

She is a nearest true friend.

जो ऐसी हो, वही सही मायने में पत्नी है।

बाकी तो मात्र नाम की पत्नी है।

सच्चा मित्र किसे कहा जाता है?

जिसमें रत्ती भर भी स्वार्थ न हो,

जो पूर्ण रूप से हितकारी हो,

जिसकी अपनी व्यक्तिगत आकांक्षा न हो।

जो तुम्हारे सुख में ही अपना सुख माने

जो हर प्रकार से तुम्हारा भला चाहे।

जो स्वयं की उपेक्षा करके भी तुम्हारा भला करने का प्रयास करे।

और यह सब करने के बाद भी जिसे यह अहसास हो कि यह सब उसने अपने लिए किया है।

मेरी प्यारी,

सुख के लिए रोकर... सिसककर... परेशान होकर जो मिलता है

वह वास्तव में सुख नहीं होता है। – सुख का मात्र भ्रम होता है

तु कभी भी निरीक्षण करना,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

ऐसा व्यक्ति तुम्हें Almost दुःखी ही नजर आएगा।

बेटा,

हमने जिसे अपना माना हो और

उसके लिए त्याग करने,

उसकी अनुकूलता के लिए अपनी प्रतिकूलता को सहन करने में

जो आनन्द मिलता है, उसके सामने कथित सुख मात्र एक साधन या सुविधा बनकर रह जाता है।

वह आनन्द नहीं है बेटा,

जड़ वस्तुएँ कभी भी आनन्द नहीं बन सकती हैं।

आनन्द तो चैतन्य की अभिव्यक्ति है।

छगन की पत्नी ने प्रश्न किया -

"आज-कल आपके मित्र क्यों बहुत कम आते हैं ?"

छगन कहता है,

"बात फैल जाएगी तो आज जो आते हैं वे भी नहीं आएँगे?"

"कौन सी बात?"

"धन्धे में बहुत बड़ा नुकशान हो गया है।

शायद नादारी लेनी पडे"

"तो फिर मैं भी मायके चली जाती हूँ।

मेरे पापा सच ही कहते थे

कि इसके साथ विवाह मत करो।"

संसार में कुछ नारियाँ ऐसी होती हैं,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

आत्मकेन्द्रित... स्वार्थ में अन्धी... स्वार्थ के लिए झगड़े करनेवाली
स्वार्थ पूर्ण होते ही सम्बन्ध तोड़ देनेवाली ।
ऐसी नारियाँ घर को नरक बना देती है ।
यह नरक मात्र उसके हसबैन्ड के लिए ही नहीं होता है,
बल्कि स्वयं उसके लिए भी होता है ।
Unfortunately हमारे यहाँ
उपयोगी स्त्री-शिक्षा के नाम पर शून्य है ।
प्राईमरी स्कूल से लेकर युनिवर्सिटी तक के सिलेबस में
जीवन के लिए उपयोगी स्त्री-शिक्षा है ही नहीं ।
उसकी सजा
स्त्री के साथ-साथ सारे घर को मिलती है ।

छगन के बेटे ने
होमवर्क करते हुए प्रश्न किया,
"पापा, हसबैन्ड का मतलब क्या होता है?"
छगन ने पहले इधर-उधर देख लिया-
फिर धीरे से जवाब दिया,
"जिसका हँसना बन्द हो जाए,
वह हसबैन्ड ।"
लड़का होमवर्क करता रहा ।
पुनः प्रश्न किया,
"दम्पत्ति का मतलब क्या है?"

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

छगन ने उसी तरह धीमी आवाज में कहा,

"जिसमें पति का दम निकल जाए,

वह दम्पत्ति।"

My dear,

I want to tell you the perfect wifehood.

पाण्डव जब वनवास में थे।

तब एक बार श्रीकृष्ण उनसे मिलने गए।

एक ओर श्रीकृष्ण और पाण्डवों की मन्त्रणा चल रही है

और दूसरी ओर सत्यभामा और द्रौपदी का मिलन होता है।

सत्यभामा कुछ संकोच के साथ

द्रौपदी से प्रश्न करती है –

"क्या आप अपने पाँचों पति के लिए एक समान प्रिय हैं?

तो इसके लिए कोई मन्त्र-तन्त्र या कोई व्रत-विधि...?"

द्रौपदी के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान फैल जाती है।

सत्यभामा आश्चर्य और जिज्ञासा के साथ देखती रहती है

और द्रौपदी के होठ फड़कते हैं।

"पति अपने अधीन रहें,"

ऐसी इच्छा या प्रयत्न जो पत्नी करती है,

पति से उसकी दूरी (Distance)बढ़ती है।

उसके पति का मन उसके ऊपर से उचट जाता है।

घर में साँप होने के कारण मनुष्य जैसे भयभीत हो जाता है,

ऐसा ही उचाट उसे भी होता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

पति का प्रेम जो मैंने जीता है,

उसके कारण अलग हैं।

मैं बार-बार घर के दरवाजे पर खड़ी नहीं रहती।

पति के बिना कहीं घूमने नहीं जाती,

पति के मित्रों का मैं सम्मान करती हूँ।

लेकिन उनके साथ हँस-हँसकर

हँसी-मजाक नहीं करती हूँ।

मैं अहंकार या क्रोध को अपने ऊपर कब्जा करने नहीं देती।

मैं सुबह जल्दी उठ जाती हूँ

और रात को घर का सारा काम निपटाकर

शयनकक्ष में जाती हूँ।

पति ने मेरे ऊपर विश्वास करके जो बातें कही हो

वे बातें मैं कभी भी दूसरों से नहीं कहती।

कोई मेरे पति के बारे में कुछ भी बोले,

तो मैं उसे नहीं सुनती हूँ।

और पति के स्थान को खण्डित करे,

ऐसी कोई भी बात मैं किसीसे नहीं करती। "

नैतादृशं दैवतमस्ति सत्ये ! - हे, सत्यभामा! पति जैसे देव

सर्वेषु लोकेषु सदेवकेषु । - सारी दुनिया में नहीं है।

यथा पतिस्तस्य तु सर्वकामा - उसकी कृपा से सारी इच्छाएँ

लभ्याः प्रसादात्, कुपितश्च हन्यात् ।। - पूरी होती हैं, और उनके कोप से इष्ट विघात होता है।

महाभारत - वनपर्व २३४-२

सम्प्रेषिताया मथ चैव दास्या मुत्था सर्वस्यमेव कार्यम - पति दासी को कोइ काम करने को कहे तो खडे होकर खूद काम कर लेना

जानातु कृष्णस्तव भावमेतं, सर्वात्मना मां भवतीति सत्ये ! - सत्यभामा ! श्रीकृष्ण को यह विश्वास होना चाहिए कि आप सम्पूर्ण रूप से उन्हें ही भजती हैं।

महाकुलीनाभिरपापिकाभीः - जो महान कुल की हो।

स्त्रीभिः सतीभिस्तव सख्यमस्तु - पापिनी न हो

चण्डाश्च शौनाश्च महाशनाश्च - ऐसी सती स्त्रियों के साथ आप मित्रता करना।

चौराश्च दुष्टाश्चपलाश्च वर्ज्याः ।। - जो गुस्सेवाली और हिंसक होती है, बहुत खानेवाली या चोर होती है, दुष्ट या चंचल होती है, उनकी संगति आप कभी मत करना।

My dear,

For a happy wifehood

Management draupadi is very essential.

I know my daughter,

इसमें जहाँ-जहाँ समर्पण की बात आती है।

वहाँ-वहाँ आधुनिक नारी को पूरी आपत्ति है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसका अनुसरण तो बहुत दूर की बात है,

उसका श्रवण भी उनके लिए कष्टदायक होता होगा।

मेरी प्यारी,

प्राचीन व्यवस्था में यह रीति प्रचलित थी।

अतः हमें आँखें बन्दकर यह स्वीकार कर लेनी चाहिए।

ऐसा मेरा कोई आशय नहीं है।

इस व्यवस्था की वैज्ञानिकता और व्यावहारिकता को

समझने का प्रयास करना चाहिए।

प्रकृति ने स्त्री को सहज स्वभाव दिया है।

वह अन्तर्मुख स्वभाव है।

स्नेह, समर्पण, त्याग, सहजता और सहनशीलता

ये सारे उसके महत्त्वपूर्ण गुण हैं।

पुरुष को प्रकृति ने बहिर्मुख स्वभाव दिया है।

उसमें अहंकार, महत्त्वाकांक्षा, जिद, गुरुताग्रन्थि

और आधिपत्य की भावना होती है।

स्त्री सर उठाती है तो उसमें पौरुष प्रगट होता है

और पुरुष सर झुकाता है, तो उसमें स्त्रीत्व प्रगट होता है।

यह स्वभावविरुद्ध चेष्टा है।

जिससे शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक

और सामाजिक समस्याएँ जन्म लेती हैं।

नई विचारधारा की बाढ़ में तर्क है।

साम्यता का आग्रह है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

ऊपर-ऊपर सबके दिमाग में बैठ जाए,

ऐसी प्रस्तुति है।

I say welcome. No objection.

शर्त्त इतनी सी है कि इससे सबका भला होना चाहिए।

इससे दुनिया सुखी होनी चाहिए।

लेकिन ऐसा तो हुआ नहीं।

बल्कि इसके विपरीत परिस्थिति बिगड़ गई।

असफल विवाह और तलाक का प्रमाण

भयानक रूप से बढ़ रहा है।

घर-घर में घर्षण, खींचातानी और झगड़े

एक common problem बन गए हैं।

बालकों को परिवार से संस्कार की शिक्षा मिलनी चाहिए।

उसकी जगह वे अशान्ति सीख रहे हैं।

तंग वातावरण,

उससे भी तंग दिमाग, उससे शारीरिक-मानसिक रोग, उससे होनेवाले खर्चे, और घटती हुई आय।

परिणामस्वरूप

अशान्ति, आवेश और अनहोनी...

आधुनिक विचारों का ये सार्वत्रिक परिणाम हैं।

मेरी प्यारी,

I tell you the top secret

Of A married life

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

पुरुष और स्त्री का मैरेज ही टिक सकता है

दो पुरुषों का नहीं।

आधुनिक विचार

स्त्री को पुरुष बनने के लिए प्रेरित करता है।

आधुनिक विचारों ने ऐसा menia उत्पन्न किया है,

जिसमें स्त्री के लिए जगह ही नहीं बचती।

'स्त्री' मानो कूड़े का ढेर हो गई हो,

और वे झाड़-फूँककर उसे साफ कर रहे हैं।

अगर कहीं कोई स्त्री बची हुई दिखाई देती है,

तो उसका मजाक उड़ाने से लेकर उसका विरोध करने की भूमिका तक उतर जाने के लिए वे तैयार ही होते हैं।

My dear,

बिस्किट क्रीमवाला है।

एट्रेक्टिव है। टेस्टफुल है।

देखते ही मुँह में पानी आ जाए ऐसे हैं।

लेकिन उसे खाने से

दो घन्टे में ही मौत आ जाए वैसा है,

Tell me,

What will we do?

तुम्हारा टेस्ट और तुम्हारी एट्रेक्टिवनेस

तुम्हें मुबारक... ऐसा ही कहेंगे ना हम?

By the same way my daughter

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

Modernism में कुछ ऐसी बात है।
You are a woman my dear,
Always maintain your womanhood.
Wifehood can be maintained
By womanhood only.
और मजे की बात तो यह है
कि तीक्ष्ण तर्क और आग्रह के ऊपर निर्भर इस modernism को
जो नारियाँ अपनाती हैं,
वे अपने घर के अतिरिक्त अन्य सभी जगह
सभी प्रकार के तर्कों और आग्रहों को छोड़कर
समाधान कर सकती हैं
और सहनशील भी बन सकती है।
उसके मन में ऐसी गांठ बँधी होती है
कि "अन्य सभी जगह शीर झुकाना पड़े तो कोई आपत्ति नहीं,
हाथ जोड़ने पड़े या लाचारी दिखानी पड़े तो कोई परवाह नहीं,
लेकिन यहाँ = इस घर में तो
किसी भी कीमत पर... कोई कोम्प्रोमाईज़ नहीं,
हरगिज़ नहीं।"
तेरा भला हो,
क्यों अपने हाथों से दुःखी होती हो?
शायद वह नारी अधिक समाधानवृत्तिवाली नहीं होगी।
फिर भी यदि वह इतना संकल्प करती है,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कि घर में तो मैं नम्र और सहनशील ही बनूँगी

तो भी उसका जीवन सुखी हो जाएगा।

लेकिन का... श।

एक बालक को मनाने के लिए

उसे खुश रखने के लिए

नारी उसके स्वभाव के अनुकूल होती है।

वह खुद

'बालक' बन जाने तक को तैयार रह सकती है,

ठीक उसी प्रकार

यदि दाम्पत्यजीवन को सुखी बनाना हो,

तो पुरुष के स्वभाव के अनुकूल होने के अतिरिक्त

अन्य कोई विकल्प नहीं है।

मेरी प्यारी,

बालपन कोई नारी का स्वभाव नहीं है।

फिर भी वह उसके अनुसार ढल जाती है।

तो फिर पुरुष के अहंकार के अनुकूल होना

यह तो स्त्री का स्वयं का स्वभाव है।

प्रकृति ने उसके अन्दर यह सहज गुण समाहित किया है।

तो उसे तो वह और भी आसानी से निभा सकती है।

थोड़ा अधिक स्पष्ट करूँ

तो उसे उन गुणों को विकसित करने की आवश्यकता ही नहीं है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

नारी को मात्र इतना ही देखना है

कि आधुनिक विचार उसकी सहज प्रवृत्ति को खलेल न पहुँचाए।

याद आती है वो कविता

प्रकृतिदत्त अधिकारों को बिना हानि पहुँचाए पसंदीदा कार्य करने से मैं थोडे ही गुलाम हो जाऊँगी।

पति के साथ सुखी संसार को अधिकार की खींचतान में बिखरने न दे

मैं स्त्री - संपूर्ण स्त्री

मेरी प्यारी,

ऐसी चैनल... ऐसी सीरियल... ऐसी बुक...

ऐसी सहेली... ऐसा ड्रेस... ऐसे विचार...

जो तुम्हारे अन्दर की उस नारी को खत्म कर दे।

उससे हमेशा दूर रहना।

जहाँ-जहाँ भीतर की नारी की मृत्यु होती हो,

वहाँ-वहाँ सुपर वुमैन बनने की लालसा जन्म लेती है।

यह लालसा उसे घर और परिवार के केन्द्र में से निकाल देती है।

परिणामस्वरूप वह व्यक्ति बाह्य जगत में फँस जाता है

वहाँ उसे क्या मिला?

इसका जवाब उसे जीवन भर नहीं मिलता है।

लेकिन उसे इतनी बात जरूर समझ में आ जाती है कि शान्त-प्रसन्न-प्रेमपूर्ण गृहजीवन की अधिष्ठात्री के रूप में उसे जो सन्तोष मिलता, जो सुख और आनन्द प्राप्त होता, उसे उसने गँवा दिया है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बेटा,

लेन-देन का गणित सम्बन्धों के सौन्दर्य को नष्ट कर देता है।

अधिकार का विचार भी प्रेम में बाधक होता है।

शायद तुझे मालूम होगा।

प्राचीन समय में कुछ विशिष्ट समाज में

सती होने की प्रथा थी।

पति की जब मृत्यु होती थी

तब पत्नी अपनी इच्छा से

पति के साथ जीवित ही जलकर मर जाती थी।

वह प्रथा अच्छी थी या खराब,

इसकी चर्चा मुझे नहीं करनी है।

मैं तो तुम्हें यही कहना चाहता हूँ

कि wifehood में कितना बड़ा अभेद

आत्मसात् हो गया हो तब ऐसी घटना घटित होती है।

ऐसी घटना को देखनेवालों ने लिखा है

कि जीवित जल रही उस नारी के

चेहरे की रेखा भी नहीं बदलती है,

इतनी वह स्वस्थ होती है।

उसकी उस प्रसन्नता को देखकर लोग स्तब्ध हो जाते थे।

विश्वास और वफादारी के इस पवित्र सम्बन्ध को

हजारों लोग नतमस्तक होकर वन्दन करते थे।

आज भी भारत में जगह-जगह

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

सती माता के मन्दिर बने हैं।

जो समर्पण के उस काल की संगीत की धुन बिखेर रहे हैं।

एक स्पष्टता कर देता हूँ मेरी बेटी,

पति के पीछे जीवित जलकर मर जाना चाहिए,

ऐसा मैं नहीं मानता,

तू अपने मन में ऐसी बात लाना भी मत।

यह बात तो मैंने अभेद की उस अस्मिता के सन्दर्भ में कही है।

My dear,

विवाह का अर्थ है एक दूसरे में समाहित हो जाने की घटना

चूहा या कॉक्रोच को देखकर भी

चीख उठनेवाली भयभीत नारी

धधकती हुई चिता में ज्वालाओं के बीच

पूर्ण स्वस्थता और पूर्ण प्रसन्नता के साथ

जीते जी जल सकती है,

इसमें अभेद की अस्मिता के सिवाय

और कोई भी रहस्य नहीं है।

मेरी प्यारी,

हमारे यहाँ 'माँ' का स्नेह सर्वोत्कृष्ट माना जाता है।

परन्तु 'सती' की उस घटना को देखनेवाले कवियों ने

ऐसा काव्य बनाया है कि

'समर्पित प्रेम

वास्तव में एक अद्भुत तत्त्व है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

जन्म देनेवाली माँ बस रो लेती है।

और पत्नी पति के पीछे जीते जी जल मरती है।

बेटा,

थोड़ा नीचे झुकने में जिस नारी का घमण्ड टूटता है,

वह नारी

Original wifehood को समझ ही नहीं पाई है।

अपना रास्ता खुद बनाकर उसके ऊपर चलनेवाली स्त्री को शायद पता नहीं

कि एक पत्नी का स्वयं का रास्ता होता ही नहीं।

प्रेम वहाँ दुविधा नहीं रे

मेरी प्यारी,

जो नारी तलाक लेती है,

वास्तव में उसका विवाह हुआ ही नहीं होता है।

फॉरेन में आज भी ऐसे मैरेज होते हैं,

जिसमें मैरेज से पहले ऐसा लिखित इकरारनामा देना होता है कि 'यदि तलाक हो तो पति को पत्नी के खर्चे के लिए इतने डॉलर्स देने पड़ेंगे।'

हंसी आती है ना बेटा,

ऐसे विवाह को तुम क्या कहोगी?

ऐसे विवाह में कैसा होगा पति-पत्नी का प्रेम?

कैसा होगा उनका घर-संसार?

कैसे होंगे उनके सन्तान?

I mean

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

सनाथ या अनाथ?

गाँव की एक गली में से
एक ज्योतिषी गुजर रहा था।
एक घर में उसकी नजर पड़ी।
गरीबी है.. टूटी हुई झोपड़ी है..
पति बीमार है।
खाट पर पड़ा-पड़ा खाँस रहा है।
पत्नी घर का कोई काम कर रही है।
ज्योतिषी ने कहा, "लाओ, बहन, तुम्हारे हाथ देखूँ"
नजर झुकाए हुए उस औरत ने जवाब दिया।
"हाथ देखना हो तो इनके देख लो।"
ज्योतिषी के मन में जो चल रहा था,
वह उसके होठों पर आ गया ...
"इसका भविष्य तो वैसे ही झलक रहा है।
तुम्हारे हाथ लाओ,
तुम्हारा भविष्य देखता हूँ।"
उस स्त्री ने तुरन्त ही जवाब दिया।
"जिस समय हमारा हस्तमिलाप हुआ था ना?
उसी समय मेरे हाथ की सारी रेखाएँ
उनकी रेखाओं में मिल गई थीं।
अब तो जो उनका भविष्य वही मेरा भविष्य।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

देखना हो तो उनके हाथ देखो ।

मेरा हाथ देखने का कोई मतलब नहीं ।”

This is India my daughter,

This is the cause

Why I love India so much.

भारत को मृत्युतुल्य बहुत सारे झटके पड़ रहे हैं ।

इतना होते हुए भी Still it’s living.

सभी जगह नहीं तो बहुत जगह ।

मेरी प्यारी,

एक स्त्री का एक्सीडेन्ट हो गया ।

हॉस्पीटल में एडमिट हुई ।

ट्रीटमेन्ट शुरु हुआ ।

वह होश में आई ।

तब सबको पता चला कि उसके सिर में लगी चोट के कारण उसकी याददास्त चली गई है ।

हर रोज उसका पति उसका टिफिन लेकर आता था ।

ऑफीस टाईम के अलावा सारा समय उसका पति वहीं हाज़िर रहता था ।

लेकिन ऑफीस के समय भी

वह हर रोज स्वयं टिफिन लेकर आता था ।

यह देखकर नर्स को बहुत आश्चर्य होता था ।

एक दिन उसने पूछ ही लिया ।

“आप किसी के भी साथ टिफिन क्यों नहीं भेज देते ।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

वैसे भी आपकी Wife की Memory तो चली ही गई है।

टिफिन आप लाएँ या कोई और लाए,

इसके लिए तो equal ही है ना? "

पति ने जवाब दिया।

"उसकी स्मृति चली गई है,

इसलिए वह मुझे अपने पति के रूप में नहीं पहचान सकती है, यह बात सही है।

लेकिन मेरी स्मृति तो है ना, कि यह मेरी पत्नी है।"

My dear,

Western culture में

पति या पत्नी

मात्र शारीरिक भूख को मिटाने का एक साधन होता है।

Commodity हो, job हो, या marriage हो,

Use & throw culture वहाँ व्यापक है।

भारत में आप 'हैं' का importance है।

पश्चिम में आप कितने उपयोगी हो का Importance **हैं**

बेकार व्यक्ति को एक ही सेकेन्ड में फेंक दिया जाता है।

We have to decide my daughter,

Where we have to go?

To east or west?

My dear,

The essence of my knowledge says-

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

East or west
India is the best.

रविशंकर महाराज
गुजरात के एक गाँव में गए थे।
एक छोटे से घर में उन्होंने प्रवेश किया।
ओड जाति के पति-पत्नी उस घर में रहते थे।
किसी दुर्घटना में पत्नी के दोनों पैर घुटनों तक कट गए थे।
रविशंकर महाराज ने हाल-चाल पूछा।
पत्नी कहती है,
"मेरी इस परिस्थिति में भी मेरे पति ने
मेरे लिए कोई कमी नहीं छोड़ा है।
मुझे तीर्थयात्रा करने की इच्छा हुई
तो मुझे कन्धे पर बिठाकर चार धाम की यात्रा करवाई।"
रविशंकर महाराज की आँखें भींग गईं।
उन्होंने पति के सामने देखा,
तो वह कहता है,
"क्या मात्र मैं ही इसकी सेवा करता हूँ?
यह मेरी कोई सेवा नहीं करती है?
यह रोटी बनाती है,
मेरा बिस्तर ठीक कर देती है।
कूएँ पर जाकर मेरे कपड़े भी धो देती है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इसके पैर नहीं हैं,

इसकी इसने कोई कमी नहीं होने दी।"

भारत के इस मधुर दाम्पत्य को देखकर महाराज की आँखों से अश्रुधारा झरझर बहने लगी।

मेरी प्यारी,

आज हमें एनी बेसेन्ट, जॉन ऑफ आर्क या

फ्लोरेन्स नाईटेंगल का एट्रेक्शन होता है।

लेकिन वास्तव में हमें अनुपमा, अंजना, सोनल, मदालसा,

सीताजी और मयणा के प्रति गर्व करना चाहिए।

स्त्रीत्व का ऐश्वर्य उनके अन्दर सोलह कलाओं के साथ खिल उठी थी।

Wifehood की वे सजीव प्रतिमा थीं।

मेरी प्यारी,

अंग्रेजों ने अपने शासनकाल में हमारे देश को खूब लूटा।

एक निश्चित समयमर्यादा में

मात्र बंगाल से उन्होंने १५,००० अरब पाउन्ड के मूल्य की लूट की थी।

Imagine my daughter,

उनके कुल शासनकाल में सारे देश से उन्होंने कितनी लूट की होगी?

परन्तु बेटा,

अभी भी यदि हम अपनी संस्कृति को

और अपने संस्कारों को बचा लें,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तो हमने कुछ भी नहीं गँवाया।

हमारी वास्तविक सम्पत्ति तो यही है।

We were talking about management of Draupadi

द्रौपदी ने सत्यभामा से जो बात कही वह मात्र बात नहीं थी।

द्रौपदी ने अपने जीवन में वैसा आचरण करके बताया।

महाभारत की एक घटना है।

वनवास के दरम्यान

अर्जुन इन्द्र से शस्त्रविद्या ग्रहण करने के लिए प्रस्थान करता है।

उसे विदा करते समय द्रौपदी कहती है -

"हे, महाबाहु धनंजय ! आपके जन्म के समय

माता कुन्ती ने आपसे जो अपेक्षाएँ रखी होंगी,

उन सारी अपेक्षाओं को आप पूर्ण करें।

इसके अतिरिक्त आपके मन में भी जो मनोरथ हो,

वे सभी पूर्ण हों, यही मेरी मंगलकामना है।"

Mark my dear,

द्रोपदी अपनी कोइ इच्छा प्रगट नही करती पति अपनी माता की इच्छा पूर्ण करें

अपनी खुद की मनोकामनाए पूर्ण करे इसमें ही द्रोपदी अपना संपूर्ण सुख देखती है इसे कहते है

एक दूसरे में समा जाने की घटना, उसका नाम है wifehood.

नीतिशतक में कहा गया है-

अपने सद्व्यवहार से जो पुत्र पिता को प्रसन्न करे, वही पुत्र है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

जो अपने पति का पवित्र हित चाहे, वही पत्नी है।

जो आपत्ति में मित्र के साथ रहे, वही मित्र है।

वह व्यक्ति पुण्यशाली है, जो इन तीनों को प्राप्त करता है।(६०)

श्रीकृष्ण की भावना थी कि युद्ध न हो,

इसके लिए उन्होंने धृतराष्ट्र और दुर्योधन के साथ कितनी चर्चाएँ कीं।

परन्तु सारी चर्चाएँ असफल रहीं।

युद्ध की तैयारियाँ होने लगीं।

हस्तिनापुर से विदा होने के पहले

श्रीकृष्ण कुन्ती के पास आए।

सारी बात कही।

और पूछा,

"क्या आपको अपने पुत्रों को कोई सन्देश देना है?"

कुन्ती ने जो जवाब दिया

वह आज भी महाभारत के उद्योगपर्व के

१३७वें अध्याय के बीसवें श्लोक में अंकित है –

"हे, पुत्रो ! द्रौपदी जो भी कहे,

उसके ऊपर आप पूरा ध्यान देना।

और उसकी जो इच्छा हो, उसके अनुसार करना"

वह पत्नी जो पति का पवित्र हित चाहे।

कुन्ती को पता था कि द्रौपदी सही अर्थों में पत्नी है।

पूर्ण पत्नी।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

पुत्रों के सबसे नाजुक पलों में कुन्ती उन्हें जो सन्देश देती है,

उसमें द्रौपदी का complete wifehood झलकता है।

उसके अभेद का यह प्रतिभाव था।

यद्यपि

उन्हें इस प्रतिभाव की कोई अपेक्षा नहीं थी।

अभेद में कभी अपेक्षा होती ही नहीं।

लक्ष्मणजी की पत्नी उर्मिला।

एक बार वह ध्यान में बैठी थी।

कोई देवता उसके समक्ष प्रगट हुए।

उनसे कोई वरदान माँगने को कहा।

उर्मिला को कुछ भी नहीं चाहिए था।

देवता का आग्रह बढ़ता जा रहा था।

अन्त में उर्मिला एक अनोखा वरदान माँगती है।

"जंगल में मेरे पति अपने बड़े भाई की सेवा करते हुए मुझे याद न कर बैठें, ऐसा करना।"

पति के अनुकूल होने के लिए

उर्मिला ने वनवास में साथ जाने का

आग्रह नहीं रखा।

यह बात तो समझ में आती है,

परन्तु पति के अनुकूल होने की

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

ऐसी पराकाष्ठा की वृत्ति ...!!!

शायद एक पत्नी ही इसे समझ सकती है।

इसीका नाम अभेद है।

स्त्री को लक्ष्मी कहा जाता है।

वह इन्हीं गुणों के कारण।

दक्षस्मृति में कहा गया है -

अनुकूला त्ववाग्दुष्टा, - जो अनुकूल हो, निर्दोष वाणी वाली हो,

दक्षा साध्वी पतिव्रता । - कुशल हो, सती हो, पतिव्रता हो।

एभिरैव गुणैर्युक्ता - ऐसे गुणोंवाली स्त्री लक्ष्मी होती है।

स्त्रीः श्रीरेव न संशयः ।। - इसमें किसी प्रकार की शंका नहीं है।

भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री

एक बार पत्रकारों ने उनका इन्टरव्यू लिया।

उसमें एक प्रश्न पूछा गया -

"आप अपनी सफलता का यश किसे देना चाहते हैं?"

शास्त्रीजी ने जवाब दिया - "मेरी पत्नी ललिता को।"

तुमको शायद पता नही होगा बेटा,

ललितादेवी कभी भी शास्त्रीजी के ऑफीस में नहीं आती थी।

कभी चुनावप्रचार नहीं करती थी।

शास्त्रीजी यदि चाहते तो उन्हें कोई 'मन्त्री' का पद दिला सकते थे।

परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया।

ललितादेवी निरक्षर थी।

उन्हें गाँव की हिन्दी ही आती थी।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इसके बावजूद

स्वतन्त्र भारत के सर्वश्रेष्ठ प्रधानमन्त्री ने

अपनी सफलता का सम्पूर्ण यश उन्हें दे दिया।

कारण कि निरक्षर कहलानेवाली उस महिला ने

आदर्श पत्नी की भूमिका को श्रेष्ठ रूप से निर्वाह कर

उन्हें पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त कर दिया था।

पत्नी का स्वयं का जो भी था,

वह पति को समर्पित कर दिया था।

और पति ने स्वयं का जो भी था,

वह पत्नी को समर्पित कर दिया था।

आज भी हमारे देश में

जगह-जगह ऐसे उदाहरण देखने को मिलते हैं।

जो पत्नी ऐसा सोचती है कि मैं तो समर्पण कर दूँ,

लेकिन बाद में मुझे इसका बदला न मिले तो?

वह सही अर्थों में पत्नी है ही नहीं।

पत्नी का अर्थ ही समर्पण है।

जहाँ बदले की थोड़ी सी भी आशा हो,

वहाँ समर्पण नहीं सौदा है।

शिष्य गुरु के पास एक प्रश्न लेकर आता है।

"आपने तो कहा था,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कि जो प्रतिष्ठा का त्याग करे – उससे दूर भागे
उसके पीछे प्रतिष्ठा दौड़कर आती है।
मैं २५ वर्षों से प्रतिष्ठा से दूर भाग रहा हूँ,
लेकिन अभी तक मुझे प्रतिष्ठा नहीं मिली है।
ऐसा क्यों हुआ?”
गुरु स्मित करते हुए शिष्य के सामने देखते रहे।
और प्रेमपूर्वक बोले –

“वत्स, तू प्रतिष्ठा से दूर भागता है, यह बात सही है, लेकिन तेरी नजर हमेशा यही देखती रहती है कि प्रतिष्ठा पीछे से आ रही है या नहीं?”

शिष्य को अपनी भूल समझ में आ गई
कि वास्तव में वह प्रतिष्ठा से दूर भाग ही नहीं रहा था।
उसे प्रतिष्ठा नहीं मिली
इसमें गुरु की बात अक्षरशः सत्य निकली।

मेरी प्यारी
सौदा और बदला की दुर्गन्ध
हमारे स्वार्पण और समर्पण को खुरच न डाले,
यह अत्यन्त जरूरी है।
कोई व्यक्ति हमारा अनुचित लाभ न उठा जाए,
वह अधिक न कमा जाए, हमें नुकशान न हो जाए,
इसलिए सौदा किया जाता है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

परन्तु जब वह व्यक्ति हम स्वयं हों,

तब क्या ?

अभेद में कुछ भी खोना नहीं होता है, बेटा,

इसमें तो तुम जितना लुटाओ, उतनी ही कमाई है।

आज की नारी को साईन्स में एडमिशन लेने की जितनी जरूरत है,

इससे लाख गुणा जरूरी है इस अभेद साईन्स को समझने की।

कारण कि उसे समझे बिना उसका जीवन सुखी हो,

इसकी कोई सम्भावना नहीं है।

छगन की पत्नी ने एक बार छगन के ऊपर केस किया।

पत्नी की जोरदार दलीलों ने कोर्ट में छगन की धज्जियाँ उड़ा डालीं।

छगन की हार हो गई।

जज ने छगन को ऑर्डर किया,

“तुम्हें अपना आधा वेतन अपनी पत्नी को देना पड़ेगा।”

यह सुनकर छगन तो खुश होकर नाचने लगा।

लोगों ने इसका कारण पूछा

तो उसने कहा -

“अब मुझे आधा वेतन तो मिलेगा ना।

पहले तो पत्नी ही सारा वेतन ले लेती थी।”

बेटा,

जीवन वन में मायावी स्वर्णमृग होते हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

एक बात का हमेशा ध्यान रखना

कि हम जिसे जीवनसाथी के रूप में चाहते हैं,

उसके और हमारे बीच सुवर्ण न आ जाए।

सुवर्णमृग तो एक छलावा है मेरी प्यारी,

उसे प्राप्त करने के लिए

असली सुवर्ण हाथ से निकल जाता है।

सुवर्णमृग की कथा हमेशा दर्दनाक रही है।

उसे पाने के लिए लक्ष्मणरेखा लांघनी पड़ती है।

और जीवन में से सुख और आनन्द गंवाना पड़ता है।

पैसा और पैसे से मिलनेवाली सुविधाओं के पीछे भागना

बहुत ही जोखिमभरा है।

सुविधाएँ जैसे-जैसे आदत बनती जाती है,

वैसे-वैसे मनुष्य मशीन बनता जाता है

इसकी अधिक लालसा मनुष्य को एकाकीपन की ओर ले जाता है।

Western countries में इन्हीं कारणों से

लोग डिप्रेशन में चले जाते हैं और ड्रग्स के गुलाम बन जाते हैं।

My dear,

सुविधाएँ देनेवाली इन सारी वस्तुओं के बिना भी काम चलेगा,

पैसा नहीं हो तो चलेगा।

लेकिन प्रेम के बिना, वात्सल्य के बिना

और परिवार के प्रेम के बिना तो चलेगा ही नहीं।

वास्तविकता जब यही है,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तो अधिकार के लिए लड़ने की बात,

सम्पत्ति और साधनों के लिए झगड़े करने की बात

बिल्कुल वाहियात बन जाती है।

भारतीय नारी का समग्र पत्नीत्व

इस एक ही वाक्य में समा जाता है -

कुलाङ्गनानां पतिरेव देवः ।

खानदानी नारियों के लिए तो उसके पति ही देवतारूप हैं।

बेटा,

आज भी अपने यहाँ यह wifehood

एकदम practical और active है।

विकृतियों की लपेट में आनेवालों को छोड़कर

आज भी इस देश की नारियाँ पति को 'तुम' कहकर नहीं बुलाती है।

पति अगर थोड़ी दूरी पर हो तब उसका ध्यान खींचने के लिए

वह नारी

अपने सन्तान का नाम लेकर बुलाती है।

और जो बात कहनी हो वह कर लेती है।

Point बहुत ही छोटा है।

परन्तु इसमें भारतीय सफल विवाहित जीवन का

हिमालय जैसा रहस्य समाहित है।

नारी

इसमें नारी ही रहती है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

पुरुष

इसमें पुरुष ही रहता है।

और इसके परिणामस्वरूप

एक प्रसन्न दाम्पत्य को विकसित होने का

अवसर प्राप्त हो जाता है।

मेरी प्यारी,

कई लोगों का प्रश्न यह होता है

कि हम तो स्वार्पण, समर्पण Wifehood सबकुछ करेंगे

लेकिन पुरुष में ऐसी पात्रता न हो तो?

गलत जगह पर आवश्यकता से अधिक विनय नहीं हो जाएगा?

और इसके कारण वह हमें दबाए, अन्याय करे। ऐसा नहीं होगा ?

तो बेटा,

इसका जवाब बहुत ही सरल है।

अयोग्य पात्र के साथ विवाह ही नहीं करना चाहिए।

Engagement के Point में

बुजुर्गों के द्वारा पसन्दगी की जो बात कही गई है।

उसमें इस सवाल का जवाब आ ही जाता है।

पहले तो पैसे और रूप के अयोग्य मापदण्ड को लेकर चलना

और फिर

वह पात्र समर्पण के योग्य है ही नहीं, ऐसा कहना।

यह तो अपने ही हाथों से दुःखी होने का रास्ता है।

बुजुर्गों के द्वारा चुस्त तरीके से

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

संस्कारों और सद्गुणों का ही आग्रह रखना

और वैसा ही पात्र पसन्द करना

वही सन्तानों के लिए जीवनभर के सुखों का रिजर्वेशन है।

मेरी प्यारी,

दुनिया का यह पुराना रिवाज है।

जिस-जिस वस्तु की माँग होती है, उसकी पूर्त्ति होगी ही।

Demand creats production.

रूप और पैसे की माँग होगी

तो लोग उसके पीछे दौड़ेंगे।

और संस्कारों और सद्गुणों की माँग होगी तो उसके लिए आतुर होंगे।

I Suggest you again

तुम सगाई करो उससे पहले

यह इंगेजमेन्ट गाईड यदि व्यापक बन जाए

तो सारे समाज की शकल बदल जाएगी।

वैसे

अपना भविष्य सुधारना तो अपने हाथ में है

एक सुन्दर संस्कृत ग्रन्थ है -

श्रीचन्द्रकेवलिचरित्र।

इसमें wifehood के ६ factors बतलाए गए हैं -

(१) **अभ्युत्थानमुपागते गुरुपतौ**- बुजुर्ग या पति आएँ तो खड़े हो जाना

(२) **तद्भाषणे नम्रता**- उनके साथ नम्रता से बात करनी चाहिए।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

(३) **तत्पादार्पितदृष्टिः**- नजर उनके पैरों पर रखनी चाहिए।

(४) **आसनविधिस्तस्योपचार्यः स्वयम्** । - उनके बैठने की व्यवस्था स्वयं करनी चाहिए।

(५) **सुप्ते तत्र शयीत**- वे सो जाएँ, तब सोना चाहिए।

(६) **तत्प्रथमतो मुञ्चेच्च शय्यामपि**- उनसे पहले बिस्तर छोड़ देना चाहिए ।

प्रोच्चैः पुत्रि ! निवेदिताः कुलवधू-सिद्धान्तधर्मा अमी ।। - बेटी ! खानदानी नारी के ये सैद्धान्तिक स्वधर्म हैं।

मेरी प्यारी,

पत्नी का भावसौन्दर्य कैसा होता है।

उसका एक अद्भुत शब्दचित्र रामायण में है

पथि पथिकवधूभिः सादरं पृच्छ्यमाना...

जंगल में एक पगडंडी है।

पगडंडी पर श्रीराम, सीताजी और लक्ष्मणजी जा रहे हैं।

अन्य कई यात्री भी साथ हो गए हैं।

उनकी पत्नियाँ धीरे से सीताजी के नजदीक आती हैं

और आदर के साथ पूछती हैं -

कुवलयदलनीलः कोऽयमार्ये ! तवेति ?

हे पूज्या !

ये जो आगे जा रहे हैं ...

जिनके शरीर की कान्ति नीलकमल की पंखुड़ियों जैसी है

वे आपके क्या लगते हैं?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

स्मितविकसितगण्डं व्रीडविभ्रान्तनेत्रं,

मुखमवनमयन्ती स्पष्टमाचष्ट सीता ।।

यह प्रश्न सुनते ही सीताजी के गाल स्मित से विकसित हो गए।

आँखों में लज्जा उभर आई।

और सिर को नीचे झुकाकर

इस प्रकार सीताजी ने स्पष्ट जवाब दिया।

मेरी प्रिय,

यह मेरे पति है

My dear,

'He is my husband'

यह एक छोर है

और सीताजी का जवाब दूसरा छोर है।

दोनों ओर की 'पति' की विभावना में

जमीन और आसमान का अन्तर है।

एक ओर दंगे जैसी करुणता है

और दूसरी ओर प्रसन्न और मधुर दाम्पत्य है।

बेटा,

नारी को नारी बनकर कुछ भी खोना नहीं है।

बल्कि पाना ही है।

सीताजी के समर्पण ने उन्हें श्रीराम से भी

अधिक पूजनीय बना दिया और हमलोग देख ही रहे हैं-

'सीता-राम' इसप्रकार भगवान के भी आगे उनका नाम आ गया।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसमें Reason यही था।

Perfect wifehood.

बेटा,

इस Subject की एक आखिरी बात।

पति जब परदेश गया हो, तब पत्नी को कुछ वस्तुएँ नहीं करनी चाहिए।

जैसे कि

याज्ञवल्क्यस्मृति में कहा गया है-

क्रीडां शरीरसंस्कारं, समाजोत्सवदर्शनम् ।

हास्यं परगृहे यानं, त्यजेत् प्रोषितभर्तृका ।।१-४ ।।

खेलकूद, शरीर की सजावट (मेक-अप आदि)

समाज के उत्सवों का दर्शन, हास्य, दूसरों के घर जाना,

ये सारे काम

जिसके पति परदेश गए हों, उस नारी को नहीं करना चाहिए।

इस विधान के पीछे की वैज्ञानिकता समझने जैसी है।

पति जब दूर है।

उस समय यदि नारी इसप्रकार का व्यवहार करे,

तो उसके मन की पवित्रता भी बनी रहती है।

और किसीका मन उसके ऊपर नहीं बिगड़ता है।

इन दोनों लाभों से उस नारी का शीलपालन सरल हो जाता है।

तीसरा लाभ यह भी है कि पति की अनुपस्थिति में

बनठनकर घूमनेवाली स्त्री को देखकर

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

किसी को भी उसके चरित्र के ऊपर शंका हो सकती है।

उपरोक्त संयमपालन से ऐसी बदनामी से वह बच सकती है।

मेरी प्यारी,

एक खानदानी नारी का सौन्दर्य, उसका शृंगार

यह सब उसके पति के लिए होता है।

Make-up के Point में हम यह देख ही चुके हैं।

इसीलिए जब नल का वियोग हुआ

तब दमयंती ने यह प्रतिज्ञा की थी।

विकृती रक्तवासांसि, ताम्बूलं च विलेपनम् ।

भूषां च न गृहीष्टामि, नलस्य मिलनावधेः ।।

जबतक नल से मिलन न हो

तबतक

मैं दूध, दही, घी, तेल, गुड़ और तली हुई वस्तुएँ नहीं खाऊँगी

रंगीन कपड़े नहीं पहनूँगी, पान नहीं खाऊँगी, मेक-अप नहीं करूँगी, और अलंकार नहीं पहनूंगी।

हितशिक्षा-छत्रीसी में यही बात कही गई है-

निज भरतार गयो देशावर

तव शणगार न धरीएजी,

जमवा नाति वच्चे नव जईए

दुर्जन देखी डरीएजी।

(डरना- उनसे विशेष रूप से दूर ही रहना।)

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

दलपत्त पिंगल के शब्द हैं–

शशि ! शा शणगार हवे सजवा ?

गुणवंत पति परदेश गया।

मेरी प्यारी,

खानदानी नारी की यह विशेषता है

जिससे उसके पति का उसके प्रति प्रेम अनेकगुणा बढ़ जाता है।

एक नारी के लिए उसके पति के प्रेम के गुणाकार का सीधा अर्थ उसके सुख का गुणाकार ही है।

'तो फिर हमारे सुख का क्या?'

ऐसा प्रश्न यदि आधुनिक नारी करे, तो उसका जवाब इसीमें आ जाता है।

My dear,

मात्र आगे बढ़ने से शतरंज में विजेता नहीं बना जाता

कई बार पीछे का दो स्टेप

हमें और अधिक आगे ले जाता है।

जीवन की भी कुछ ऐसी ही बात है।

हमारे पूर्वजों के पास

इस जीवनविज्ञान का सूक्ष्मज्ञान था।

उन्होंने उसे प्रायोगिक रूप से अमल भी किया।

और इसीलिए वे सुखी थे।

I hope,

अब तुम भी ऐसी ही बनोगी।

Love you very much.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

FREEDOM

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

Music teacher ने

छगन के बेटे से Question किया।

"तुम्हें कौन से Instrument की आवाज

सबसे अधिक पसन्द है।"

उसने तुरन्त Answer दिया

स्कूल में छुट्टी का जो Bell बजता है, वह"

Everyone likes freedom my daughter,

But

कई बार आजादी

मात्र नाम की आजादी बन जाती है।

एक सेठ जब नौकर को छुट्टी देता है,

तब वह नौकर खुश नहीं होता है।

कारण कि छुट्टी का अर्थ

वह अच्छी तरह से समझता है।

मेरी प्यारी,

स्वतन्त्रता का उद्देश्य भी वास्तव में तो सुख के उद्देश्य को पूरा करने के लिए होता है।

जो स्वतन्त्रता मनुष्य को सुख से दूर ले जाए ऐसी स्वतन्त्रता का कोई मूल्य नहीं रह जाता है।

बेटा,

आज जिसका बहुत ही menia चला है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उस नारी–स्वातन्त्र्य के विषय में कुछ ऐसा ही हुआ है।

स्वैर विहार के कारण हमारे प्राचीनतम व्यवस्था के मँहगे संस्कारों का हनन हुआ है।

जिसमें आखिरकार शोषण तो स्त्री का ही होता है।

स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छंदता का आचरण करनेवाली स्त्री

आखिरकार दुःखी ही होती है।

आज की नारी को घूँघट में बन्धन लगा।

उसने घूँघट हटा दिया।

लेकिन वह घूँघट ही तो उसकी सुरक्षा थी।

वह उसके विकास में अवरोधक नहीं था।

बल्कि उसके उपर नजर बिगाड़नेवालों के लिए अवरोधक था।

जैसे–जैसे घूँघट हटते गए

वैसे–वैसे नारी और अधिक परेशान होती गई।

उसके शोषण का प्रमाण भयानक रूप से बढ़ता गया।

और आज स्थिति यह आ गई है,

कि घर से बाहर गई हुई स्त्री

हर रोज थोड़ी–थोड़ी अधिक असुरक्षित होती जा रही है।

रोज सूरज उगने से पहले

हजारों नारियाँ किसी नराधम के हाथों लुट चुकी होती है।

This is the cost of the freedom.

मेरी प्यारी,

इन्डिपेन्डेन्स नहीं होना चाहिए, ऐसा नहीं है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मात्र उसका गलत अर्थ नहीं करना चाहिए।

'स्व' को नियन्त्रित करने की शक्ति

दूसरे के हाथों में न देकर स्वयं के काबू में रखे, यही स्वतन्त्रता है।

हमारी परम्परा की नारी सही मायने में स्वतन्त्र थी।

क्योंकि वह अपनी मर्यादाओं को भली-भांति समझती थी।

और उन रेखाओं को पार करने का विचार तक नहीं करती थी।

बेटा,

लगाम घोड़े को होती हैं,

गधों को नहीं।

प्रकृति में जो भी श्रेष्ठ प्रजातियाँ हैं,

वे अपनी-अपनी विशिष्ट मर्यादाओं का पालन करती हैं।

सामान्य स्तर का जानवर

किसी के खेत की बाड़ को तोड़कर अन्दर घुस जाता है।

और उसकी फसल को नुकशान कर डालता है,

जबकि विशिष्ट जाति का पशु

अपनी मर्यादा को समझकर अनुशासन में रहता है।

ग्वालों और किसानों के लिए यह हर रोज के अनुभव की बात है।

अब

अपने खानदान की रक्षा करनी या उसे गँवा देनी

इसका हमें ही ध्यान रखना होगा।

My dear,

प्रकृति का प्रत्येक तत्त्व

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

यहाँ तक कि चन्द्र, सूर्य और तारे भी

किसी न किसी नियम के अनुसार ही चलते हैं।

नियम से रहित जीवन

जीवन नहीं है।

बेटा,

क्रिकेट, फुटबॉल, पकड़ा-पकड़ी इत्यादि

किसी भी खेल में कुछ निश्चित नियम होते हैं।

जिनका पालन किए बिना उन खेलों को खेलना असम्भव है।

जब खेल-कूद में नियमों का होना जरूरी होता है

तो जीवन में क्यों नहीं?

मेरी प्यारी,

आज की दुनिया जिसे Freedom कहती है

वह स्त्री या पुरुष दोनों के लिए खतरनाक है।

इसमें भी स्त्री के लिए अधिक खतरनाक है।

कारण उसका सहज सौन्दर्य और उसकी कोमलता

इन दोनों के कारण यह कथित स्वतन्त्रता उसे नष्ट कर डाले,

इसकी पूरी सम्भावना है।

हमारी सामाजिक व्यवस्था में नारी को उत्कृष्ट सम्मान दिया गया है।

और उसकी इस परिस्थिति को ध्यान में रखकर

उसकी सुरक्षा सहज रूप से हो जाए, ऐसी व्यवस्था की गई है।

मनुस्मृति में कहा गया है -

पिता रक्षति कौमारे- कौमार्य में पिता रक्षा करता है,

भर्ता रक्षति यौवने । – युवावस्था में पति रक्षा करता है,

रक्षन्ति स्थाविरे पुत्रा, – और पुत्र वृद्धावस्था में रक्षा करता है,

न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ।।९–३।। – स्त्रियों के लिए स्वतन्त्रता उचित नहीं है।

भारत की इस सुदृढ़ स्त्री–सुरक्षा से वंचित होकर

आज अमेरिका जैसे देशों की स्त्रियाँ

हर प्रकार से त्राहि–माम् पुकार रही है।

कौमार्य में उसका छत्र बनकर रहनेवाला पिता नहीं है।

युवावस्था में उसके साथ खड़ा रहनेवाले पति का कोई ठिकाना नहीं।

और उसकी वृद्धावस्था आए,

उससे पहले ही उसके बेटे उससे अलग हो गए होते हैं।

बिल्कुल अलग

हर प्रकार से अलग।

मेरी प्यारी,

परम्परा के रहस्य को समझे बिना,

उससे होनेवाले लाभ–हानि का विचार किए बिना,

रैलियाँ निकालनी, स्वतन्त्रता के नारे लगाने

और मनुस्मृति की प्रतियाँ जलानी

यह तो बहुत ही आसान है।

कठिन और दुरूह तो है

परम्परा को ठुकराने के परिणामों का सामना करना।

आज लाखों नारियाँ इस कठिनाई को भुगत रही है।

बेटा,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

हमारी परम्परा ने तो ऐसा कहा ही नहीं

कि नारी पिता आदि के पैरों के नीचे कुचलाती रहे।

या उसकी गुलाम बनकर रहे,

जिसे थोडा भी संस्कृत आता हो,

वह समझ सकता है

कि इस श्लोक में यही कहा गया है कि

अलग-अलग अवस्था में

स्त्री की रक्षा करने की सम्पूर्ण जिम्मेदारी

उसके पिता, पति और पुत्र की है।

वजह

स्त्रीप्रकृति स्वयं अपनी सुरक्षा कर सके, यह सम्भव नहीं है।

उसकी स्वतन्त्रता - उसका अकेले रहना, अलग रहना, असुरक्षित रहना, अनियमित रहना, अमर्यादित रहना

यह अत्यन्त खतरनाक होने के कारण उचित नहीं है।

न स्त्रीः स्वातन्त्र्यमर्हति ।

वास्तविकता तो सूरज की तरह स्पष्ट है।

टनों धूल उड़ा दो,

फिर भी सूरज तो सूरज ही है।

वास्तविकता तो वास्तविकता ही है।

Western culture के अन्ध अनुकरण में

इस वास्तविकता की उपेक्षा करनी

यह स्वयं ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बेटा,

कुत्ते को मारने से पहले

उसे पागल घोषित करना पड़ता है।

इसी प्रकार भारतीय मूलभूत संस्कृति को खत्म करने के लिए

उसके ऐसे दोषों का ढिंढोरा पीटा गया,

जो वास्तव में उसमें थे ही नहीं।

भारतीय संस्कृति ने

नारी को सही अर्थों में जो गौरव प्रदान किया है

सुरक्षित जीवन जीने की जो व्यवस्था दी है,

सारी दुनिया में उसकी कोई उपमा नहीं है।

मेरी प्यारी,

यदि हमारी परम्परा

नारी को थोडा भी तिरस्कार दृष्टि से

या हीन दृष्टि से देखती होती

तो नारी के लिए जो गौरवशाली विधान

हमारी परम्परा में देखने को मिलते हैं, वे नहीं मिले होते।

परम्परा के विरोधी तत्त्वों को पता नहीं है

कि इसी मनुस्मृति ने

नारी-सम्मान की कैसी उदात्त गरिमा का वर्णन किया है -

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते - जहाँ नारी का सम्मान होता है

रमन्ते तत्र देवताः । - वहाँ देवता प्रसन्न होते हैं।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते - जहाँ नारी का सम्मान नहीं होता है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

सर्वास्तत्राफला क्रिया ॥ ३-५६ ।। – वहाँ सारी क्रियाएँ निष्फल होती हैं।

शोचन्ति जामयो यत्र – जहाँ कन्याएँ शोक करती हैं

विनश्यत्याशु तत्कुलम् । – वह कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

न शोचन्ति यत्रैता– जहाँ कन्याएँ शोक नहीं करती हैं

वर्धते तद्धि सर्वदा ॥ ३-५७।। – वह कुल सदा ही वृद्धि को प्राप्त होता है।

जामयो यानि गेहानि – जिस घर में कन्या का सम्मान नहीं होता

शपन्त्यप्रतिपूजिताः । – इसलिए कन्याएँ जिस घर को शाप देती है।

तानि कृत्याहतानीव – उस घर को

विनश्यन्ति समन्ततः ।। ३-५९ ।। – मानो राक्षसी निगल गई हो, उसी प्रकार वह घर हर प्रकार से नष्ट हो जाता है।

तस्मादेताः सदा पूज्या – अतः जिस मनुष्य को समृद्धि की इच्छा हो,

भूषणाच्छादनाशनैः । – उसे सत्कारों में और उत्सवों में

भूतिकामैर्नरैर्नित्यं, – आभूषण, वस्त्र और भोजन के द्वारा

सत्कारेषूत्सवेषु च ।। ३ -५९ ।। – सदा नारी का सम्मान करना चाहिए।

महाभारत के उद्योगपर्व में कहा गया है –

पूजनीया महाभागाः – स्त्रियाँ पूजनीय हैं। महा भाग्यशाली हैं

पुण्याश्च गृहदीप्तयः । – पवित्र है, घर का प्रकाश है।

स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्ता– स्वयं घर की लक्ष्मी है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

स्तस्माद् रक्ष्या विशेषतः ।।३-५९।। - अतः उनकी विशेष रूप से रक्षा करनी चाहिए।

स्कन्दपुराण के ब्रह्मखण्ड में कहा गया है-

भार्या मूलं गृहस्थस्य - पत्नी गृहस्थ की जड़ है।

भार्या मूलं सुखस्य च - पत्नी सुख की जड़ है।

मेरी प्यारी,

गृहिणी गृहमुच्यते

यह कहकर हमारी परम्परा ने

परिवार में नारी को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है।

राधाकृष्ण... सीताराम... उमामहेश...

लक्ष्मीनारायण... अर्धनारीश्वर...

इन शब्दों में सागर से भी अधिक गहरा

नारीसम्मान समाहित है।

'नारी तू नारायणी' जैसा वाक्य हो

या

'जे कर झुलावे पालणुं

ते जगत पर शासन करे,'

ऐसी काव्यपंक्तियाँ हों,

हमारी परम्परा ने नारी को पूर्ण आदर की दृष्टि से देखा है।

मात्र

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

नारी की सुरक्षा की दृष्टि से

उसकी शरीर संरचना और स्वभाव की दृष्टि से

परम्परा ने उसके सुखी जीवन के लिए जरूरी

जिन मर्यादाओं का उपहार दिया है,

उन्हें बन्धन या जुल्म का स्वरूप देकर

परम्परा को ही समाप्त कर देने का प्रयास

वास्तव में नारी को खत्म कर देने का प्रयास है।

मेरी प्यारी,

कम से कम तुम अपने बारे में

इस प्रयास को कभी सफल नहीं होने देना।

Let real freedom make you happy.

Love you very much.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

EQUALITY

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

समानता।

समवयस्कता।

समकक्षता।

जब इन शब्दों को स्त्री–पुरुष की तुलना में प्रयोग किया जाता है,

तब ये शब्द खूब जटिल बन जाते हैं।

जटिल इसलिए क्योंकि इन शब्दों का बाह्य आकर्षण

अच्छे–भले लोगों को भुलावे में डाल देता है।

My dear,

Most of girls of your age

Have same question -

भाई, रात के साढ़े ग्यारह बजे तक घर न आए

तो भी इसके मम्मी–पापा इसे कुछ नहीं कहते हैं।

और मुझे आने में मात्र साढ़े आठ–नौ बज जाए

तो भी कहने में कुछ भी बाकी नहीं छोड़ते हैं।

ऐसा पक्षपात क्यों?

हम दोनों के लिए एक समान नियम क्यों नहीं?

Here is your answer my daughter,

समान नियम तभी लागू किए जा सकते हैं,

जब दोनों व्यक्ति समान हों।

ऊँट और मछली

ये दोनों जीव अलग हैं।

समान नहीं हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

अतः इन दोनों के लिए नियम
समान नहीं हो सकते हैं।
ऊँट की Lifestyle
यदि मछली पर ठोका जाए
तो मछली को तड़पकर मर जाना पड़ेगा।
My daughter,
शरीर में पैर भी हैं और आँखें भी हैं,
दोनों की अपनी-अपनी भूमिकाएँ हैं।
अपनी-अपनी खूबियाँ हैं।
अपने-अपने स्थान हैं,
इन दोनों में से एक का भी महत्त्व कम नहीं है।
कुछ क्षेत्रों में ऐसा लग सकता है कि पुरुष प्रधान है
परन्तु यह शोषण नहीं, बल्कि एक व्यवस्था है।
जो स्त्री की भलाई के लिए ही है।
तोता यदि मोर के पंख लगा ले,
और मोर को यदि मिर्ची खाने का शौक हो जाए
तो इन दोनों को दुःखी होना पड़ेगा।
मेरी प्यारी,
स्त्री-पुरुष की समानता की बातें करनेवाले ही
हकीकत में स्त्री का अपमान कर रहे हैं।
समानता की उनकी यही परिभाषा होती है कि
स्त्री पुरुष के समकक्ष बने।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इस परिभाषा में ही यह सच्चाई छिपी हुई है कि पुरुष स्त्री से महान् है।

Can you understand my daughter?

अतः समानता के लिए जब-जब प्रयास किए जाएँगे,

तब-तब बात यहीं आकर रुक जाएगी।

वास्तविकता तो यही है

कि अलग-अलग गुणधर्म धारण करनेवाले व्यक्तियों के बीच

समान कार्यक्षेत्र और समान जीवनशैली का आग्रह रखना

यही सबसे बड़ी भूल है।

कभी-कभी समकक्षता की यह स्पर्धा

अप्राकृतिक स्तर पर निम्न कोटि की प्रतिस्पर्धा बन जाती है

आज कॉलेज में पढ़नेवाली हजारों लड़कियाँ

लड़कों के साथ समानता दिखाने के लिए

धूम्रपान और मद्यपान तक की

निम्न भूमिका में पहुँच गई है।

'पुरुषवेष' पहनने का रोग

आज इतना व्यापक होता जा रहा है।

उसकी जड़ में यही वायरस काम कर रहा है।

समकक्षता के भ्रम का यह पुष्टिकरण है।

वास्तव में कोई पुरुष स्त्री का वेष धारण करे

यह भी वैसा ही विचित्र है।

बेटा,

जिस प्रकार किसी पुरुष को चूड़ियाँ पहनाई जाएँ

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तो जिस प्रकार यह उसका अपमान माना जाता है,
उसी प्रकार यदि स्त्री को भी
पुरुष के योग्य कोई वस्तु या कार्य दिए जाएँ
तो उसका अपमान माना जाता है।
तभी सही अर्थों में समानता कही जा सकती है।
स्त्री हो या पुरुष प्रत्येक की अपनी-अपनी भूमिका है।
पुरुष की तरह बाईक चलाकर
ऑफीस जाकर जो रुपये कमाकर लाती है,
वह स्त्री महान है
ऐसी अवधारणा Indirectly
पुरुष को ही महान बना रही है।
आज
जब किसी नारी से प्रश्न किया जाए
कि "आप क्या कर रही हैं?"
तब वह प्रश्नकर्त्ता के आशय को अच्छी तरह समझती है
कि उसका प्रश्न व्यावसायिक दिशा का है।
और यदि वह नारी कोई व्यवसाय नहीं करती होगी
तो वह थोड़ी झिझक के साथ जवाब देगी -
"कुछ नहीं।"
तो क्या वास्तव में वह नारी कुछ नहीं करती है?
क्या परिवार में उसका महान योगदान नहीं है?
सन्तानों का सात्त्विक निर्माण करना

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

क्या सर्वोच्च राष्ट्रसेवा नहीं है?
और इस परम कर्त्तव्य को छोड़कर
नारी कोई अन्य भूमिका निभाने जाए
तभी 'उसने कुछ किया',ऐसा माना जाएगा?
अपने से विपरीत भूमिका निभाने में
प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कई प्रकार के कुप्रभाव भुगतने पड़ते हैं।
एक नारी जब ५० की Speed में
Bike चलाकर कहीं पहुँच जाती है
तब
उसका Balance सही रहा,
उसने Turns सही लिए,
उसने किसी को टक्कर नहीं मारी,
उसने accident नहीं किया,
वह गिरी नहीं,
इतना हुआ
इसका अर्थ यह नहीं है
कि वह ठीक-ठाक पहुँच गई।
ठीक-ठाक पहुँच गई
ऐसा तभी कहा जा सकता है
जब उसे कोई नुकशान न हो।
इस प्रकार वह पहुँच गई हो,
परन्तु वास्तविकता यह नहीं है,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बल्कि इस प्रकार Full speed में

सड़क पर से गुजर जाना

इसे प्रागल्भ्य कहा जाता है।

यह एक प्रकार का पुरुषातन है।

नारी यदि ऐसा पुरुषातन दिखलाए

तो इसमें पुरुष की कोई हानि नहीं होती,

बल्कि नारी के अन्दर

एक प्रकार के विजातीय गुणधर्म उत्पन्न होते हैं,

जो उसके स्वयं के गुणधर्म को हानि पहुँचाते हैं।

परिणाम ?

शारीरिक और मानसिक परिवर्त्तन

दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ

और पारिवारिक प्रश्न

This is just an example my daughter.

ऐसे तो सैकड़ों विषय हैं, हजारों समस्याएँ हैं।

जिसकी जड़ 'समकक्षता' की विभावना में है।

मेरी प्यारी,

यह एक प्रकार की मानसिक हीनता की अभिव्यक्ति है।

जिसे लेकर आज की नारी ने

बिल्कुल गलत दिशा में कदम उठाया है।

इस अवैज्ञानिक दौड़ में उसे मिलनेवाला कुछ नहीं है बल्कि खोना बहुत है।

सामाजिक दृष्टि से भी यह एक अस्वस्थ अभिगम है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

यह दुःख का मार्ग है बेटा,

यदि सुखी होना हो,

तो उसका यही उपाय है

कि तुम जो कुछ हो, वह पूर्ण बनो ।

तुम्हारे अन्दर किसी को समावेश मत करो ।

पुरुष पूर्ण पुरुष बने, स्त्री पूर्ण स्त्री बने,

इसे ही वास्तव में समानता कही जा सकती है ।

बाकी भ्रमणा के सिवाय और कुछ नहीं है।

मेरी प्यारी,

स्वस्थ पारिवारिक जीवन में

स्त्री और पुरुष एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी नहीं हैं।

बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं।

दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं।

Always remember this truth my daughter,

Love you very much.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

PARENTING

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

छगन ने Market से एक बड़ा सा Box लेकर आया।

बेटे को बुलाया।

और Box खोलकर कहा,

"देखो, मैं एक नया रोबोट लाया हूँ।

अब याद रखना

अगर तुम झूठ बोलोगे ना

तो यह रोबोट तुम्हें चपत लगाएगा।"

बेटा बोला, "पापा आप झूठ नहीं बोलते क्या?"

छगन ने दृढ़तापूर्वक कहा,

"तेरी उमर में तो बिल्कुल झूठ नहीं बोलता था।"

रोबोट ने तुरन्त छगन को एक चपत लगा दी।

This happens my dear !

प्रत्येक माता-पिता की इच्छा होती है

कि उसकी सन्तान सर्वश्रेष्ठ बने।

सर्वगुणसम्पन्न बने।

उसमें एक भी अवगुण न हो।

वह जीवन में खूब आगे बढ़े।

परन्तु यह इच्छा सन्तान को किसी International school में Admit करा देने से ही पूरी नहीं हो जाती।

मेरी प्यारी,

सन्तानों में अच्छे संस्कारों का सिंचन करने के लिए

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

स्वयं भी उसमें जुड़ना पड़ता है

और हर तरह से जुड़ना पड़ता है।

श्रेष्ठ सन्तान प्राप्त करने के लिए स्वयं श्रेष्ठ बनना जरूरी है।

जिन माता-पिता के जीवन में संस्कारों की सुगन्ध न हो

वे अपने व्यवहार के द्वारा

अपनी सन्तानों को व्यसनों की ही शिक्षा देते हैं।

परिणामस्वरूप सन्तानों का और उनका स्वयं का भविष्य

दुःखमय बन जाता है।

जो माँ स्वयं ही 'शेमलेस' ड्रेस पहनती हो,

शॉपिंग और ब्युटीपार्लर की शौकीन हो,

टी. वी. और मोबाईल की आदी हो,

सहनशीलता, विनय, विवेक आदि सद्गुणों के विषय में दरिद्र हो,

उसे

अपनी सन्तानों से किसी भी प्रकार आशा रखने का

कोई मतलब नहीं है।

मेरी प्यारी,

सबसे पहली बात यह है

कि माँ-बाप का स्वयं का जीवन अत्यन्त सात्त्विक होना चाहिए।

जो कुछ भी असत् है। खराब-गंदा है।

उसका उनके जीवन में जरा सा भी प्रभाव नहीं होना चाहिए

Number 2

उन्हें सन्तानों के संस्कार के लिए

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

पर्याप्त समय देना चाहिए।

आज माता-पिता अपनी युवावस्था में

सुख-भोग में और पैसे कमाने में व्यस्त होने के कारण

सन्तानों को समय नहीं दे सकते।

परिणामस्वरूप जब ढलती उमर में

उन्हें सन्तानों की जरूरत महसूस होती है,

तब सन्तान उनके हाथ से निकल चुके होते हैं।

उनके सन्तानों की भी यही दशा होगी।

मात्र कुछ अधिक करुण।

यह एक विषचक्र है बेटा,

हम चाहें तो भी इसे तोड़ नहीं सकते।

गुजराती में एक गीत Famous है।

भूलो भले बीजुं बधुं मा-बापने भूलशो नहीं,

अगणित छे उपकार एमना एह विसरशो नहीं।

दो दिन पहले

ऐसा ही एक अन्य गीत मेरे सुनने में आया था।

भूलो भले बीजुं बधुं सन्तानने भूलशो नहीं,

अगणित छे फरजो आपणी एह विसरशो नहीं।

जो माँ-बाप सन्तान को अच्छी बातें कहने के बदले

चॉकलेट-आईस्क्रीम देते हैं

उन्हें भविष्य में

आदर के बदले उपेक्षा मिलती है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

रोते हुए बालक को प्रेम और सान्त्वना देने के बदले

टी. वी. के सामने बिठा दें

या उसके हाथ में मोबाईल पकड़ा दें।

यह सच्चे माँ-बाप के लक्षण नहीं हैं।

ऐसी सन्तान

माँ-बाप के होते हुए भी अनाथ जैसे होते हैं।

भविष्य में वे माँ-बाप की सेवा करें,

इसकी सम्भावना नहिवत् होती है।

कारण कि सही अर्थों में

उसने माँ-बाप का अनुभव किया ही नहीं होता है।

टी.वी., मोबाईल, आया, नौकर, बेबीसीटर,

स्कूल टीचर, क्लास टीचर, ट्यूशन टीचर

ये सभी कभी भी माँ-बाप का स्थान नहीं ले सकते।

जमाने के ज़हर से सन्तान पूरी तरह से बच जाए,

उसके संस्कारों की सुरक्षा हो,

और उसका स्नेह और वात्सल्यपूर्ण निर्माण हो

ऐसे प्रयास करना माता-पिता का परम कर्त्तव्य है।

इस कर्त्तव्य का पालन स्वयं ही किया जा सकता है।

सच्चे माँ-बाप वे हैं

जो सन्तान को जीवन की उच्च दिशा के प्रति प्रेरित करें।

बेटा सांसारिक डिग्रियाँ प्राप्त कर ले।

अथाह पैसा कमा ले।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

अथवा छोटी-मोटी सफलता प्राप्त कर ले,

इसी से गद्गद हो जानेवाले

माता-पिताओं की समझदारी अधूरी होती है।

कई डिग्रीधारी बेरोजगार भटकते हैं।

कई धनवान आत्महत्या करते हैं।

और कई प्रसिद्ध विभूतियाँ

अपने व्यक्तिगत जीवन में बहुत दुःखी होते हैं।

माँ-बाप कर्ज लेकर, खून-पसीना एक कर

जिस सन्तान को पढा-लिखाकर बड़े किए हों,

वही सन्तान जब उनका अपमान करती है,

तब उनके पैरों के नीचे से जमीन सरकने लगती है।

आज अधिकांश घरों की यही स्थिति है।

कि माँ-बाप सन्तानों को पढ़ा-लिखाकर

इस लायक (?)बना देते हैं

कि बाद में उन्हें माँ-बाप ही नालायक लगने लगते हैं।

This is my point my dear,

कि **दुनिया जिसे शिक्षा समझती है, वह पर्याप्त नहीं है।**

इतने मात्र से सन्तोष कर लेना उचित नहीं है।

सही शिक्षा तो तुम्हें स्वयं देनी है।

वह है संस्कारों की शिक्षा, संस्कृति की शिक्षा नैतिक शिक्षा और जीवनसूत्रों की शिक्षा।

मेरी प्यारी,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तुम्हारा स्वयं का जीवन ही
उसके लिए एक उच्च शिक्षा होगी
और वे सारी शिक्षाएँ
उस शिक्षा को मजबूत बनाएगी।

कुछ अभिभावक ऐसे होते हैं
जो मोह के अधीन होकर
सन्तान के प्रत्येक शब्दों को सहन कर लेते हैं।
वे अपनी सन्तानों को
परिपक्वता के बदले गैरजिम्मेदारी की शिक्षा देते हैं।
Art of parenting के सन्दर्भ में
चाणक्यनीति का एक सुन्दर श्लोक है –
लालयेत् पञ्च वर्षाणि, दश वर्षाणि ताडयेत् ।
प्राप्ते च षोडशे वर्षे, पुत्रं मित्रवदाचरेत् ।।
पाँच वर्षों तक
पुत्र का लालन-पालन करना चाहिए – उसे प्यार-दुलार देना चाहिए
आगे के दस वर्षों तक की अवधि में
पुत्र को सही शिक्षा देनी चाहिए,
और उसे शिक्षा-दीक्षा देते समय यदि जरूरत पड़े
तो उसे मारना भी चाहिए।
और जब बेटे का सोलहवाँ वर्ष प्रारम्भ हो जाए
तब उसके साथ एक मित्र की तरह व्यवहार करना चाहिए।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

My dear,

सही समय पर जिसकी गाड़ी छूट गई हो,

उसे सारी जिन्दगी रोना और पछताना ही

बाकी रहता है।

पाँच वर्ष से अधिक उम्र की सन्तान को लाड़-प्यार देना

और

उसे संस्कारों की शिक्षा देने में उपेक्षा करनी

यह एक प्रकार की आत्महत्या करने और कराने के समान है।

चाणक्य कहते हैं -

लालनाद् बहवो दोषा स्ताडनाद् बहवो गुणाः ।

तस्मात् पुत्रं च शिष्यं च, ताडयेन्न तु लालयेत् ।।

अधिक लाड़-प्यार देने से कई प्रकार के नुकशान होते हैं।

और

मारने से बहुत सारे लाभ होते हैं।

अतः पुत्र को और शिष्य को मारना चाहिए

प्यार नहीं करना चाहिए।

मेरी प्यारी,

एक बार कुछ टीचर्स के साथ मेरी मीटिंग हुई थी।

उन्होंने कहा कि हमारे यहाँ एक कहावत थी -

गुरुजी मारे चट, विद्या आवे झट

परन्तु

अब तो ऐसा कानून है

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कि हम किसी लड़के को मात्र एक चपत मारें

तो भी हमें जेल की सजा हो सकती है।

तो फिर हमें क्या गरज पड़ी है ?

लड़कों को पढ़ना हो तो पढ़े

और नहीं पढ़ना हो तो कोई बात नहीं।

Understand my daughter?

फिर तो

मास्टर मारेगा भी नहीं और पढ़ाएगा भी नहीं,

ऐसा हो जाएगा।

बेटा,

कड़वी दवा माँ पिलाए

बाकी सब चने की झाड़ पर चढ़ाए

यदि माँ भी मीठी दवा देने लगेगी,

अच्छी लगने लगेगी, अच्छा लगाने लगेगी

और मोह में पड़कर

जरूरी संस्कारसिंचन की उपेक्षा करेगी,

तो सही अर्थों में वह सन्तान की दुश्मन ही बनेगी।

माता शत्रुः पिता वैरी, येन बालो न पाठितः ।

न शोभते सभामध्ये, हंसमध्ये बको यथा ।।

वह माता शत्रु है और वह पिता वैरी है,

जिसने बालक को सही शिक्षा नहीं दी ।

जिस प्रकार हंस के झुण्ड में कौआ सुशोभित नहीं होता

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसी प्रकार वह बालक

सभा में सुशोभित नहीं होता है।

बेटा,

हम भले ही धनवान हों,

लेकिन बालक को धन का अहंकार

नहीं होने देना चाहिए।

धनवानों के बालक कई बार

बहुत उच्छृंखल, लापरवाह,

औचित्य का पालन न करनेवाले,

यौन वासना से पीडित,

उद्दंड और मवाली जैसे हो जाते हैं।

मुहम्मद बेगडा की एक बेगम थी - सराई

उसका बेटा आबाजान

अधिक लाड़-प्यार में बिगड़ गया था।

एक बार उसने एक किसान की बेटी पर जुल्म किया।

वह किसान राजदरबार में आया।

सिसक-सिसककर रोने लगा।

राजा से सारी बात कही।

मुहम्मद बेगड़ा ने आबाजान को बुलाया।

सराई को भी बुलाया।

भरी सभा में उसने ज़हर का प्याला पी जाने की सजा सुनाई

सराई अपने हाथों से उसे जहर का प्याला पिलाए।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

ऐसा आदेश किया।

कारण कि अनुचित प्यार देकर बेटे को

उसीने बिगाड़ दिया था।

बेटा,

बेटा रुपयों पर लोटे,

ऐसा सपना देखनेवाले माँ-बाप को पता नहीं है

कि जापान में कम उम्र में धनवान हो जानेवाले सन्तानों को

उसके माँ-बाप अब फूटी आँख भी नहीं सुहाते हैं।

छोटी-छोटी बातों में वे माँ-बाप का अपमान करते हैं।

इस स्थिति में माँ-बाप को बहुत बड़ा आघात लगता है।

जिसके परिणामस्वरूप

आज जापान में बड़ी संख्या में आत्महत्या की जाती है।

मेरी प्यारी,

अत्यन्त प्यार और अत्यन्त तिरस्कार दोनों खराब है।

परिवार का स्नेह नहीं मिलता है तो बेटी भाग जाती है।

और बेटा शराब और ड्रग्स का शिकार बन जाता है।

सन्त कबीरदास ने कहा है -

गुरु कुम्हार शिश कुम्भ है गढ़ि-गढ़ि काढै खोट ।

अन्तर हाथ सहार दै, बाहर मारै चोट ।।

कुम्हार जब घड़ा बनाता है

तो ऊपर से चोट देता है और उस चोट से घड़ा टूट न जाए इसलिए

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसे अन्दर से सहारा भी देता है।

निर्माण का यह साइन्स प्रत्येक पैरेन्ट्स को आना चाहिए।

कई बार पैरेन्ट्स
किसी अन्य कारण से आनेवाले क्रोध को
बालकों पर उडे़ल देते हैं।
जिसके अन्तर्गत वे असभ्य शब्द सुनाने से लेकर
उसके साथ मार-पीट भी कर बैठते हैं।
Because they are soft target.
हमारी संस्कृति में इसे अत्यन्त अधम कृत्य माना गया है।
जो-जो Soft होते हैं,
उन्हें तो विशेष वात्सल्य देना चाहिए।
उनकी तो विशेष सेवा करनी चाहिए।
इसकी जगह उसके Softnes का misuse करना
यह तो अत्यन्त लज्जाजनक बात है।
हितशिक्षा छत्रीशी में कहा गया है -
बार बरस बालक सुरपडिमा, ए बे सरिखा कहीजे जी,
भक्ति करे सुख लीला पामे, खेद करे दुःख लहीए जी ।
बारह वर्ष की उम्र तक का बालक और देव की प्रतिमा
ये दोनों समान होते हैं।
जो उनकी सेवा करते हैं, उन्हें सुख समृद्धि मिलती है।
और जो उसे दुःख देते हैं, वे दुःखी होते हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

पुत्र की भलाई के लिए उसे दण्डित करना अलग बात है।
और यह उससे अलग बात है।

मेरी प्यारी,
मैंने ऐसी मम्मी को भी देखा है
जिसे शौक है - सन्तान को स्वीमिंग सिखलाने का
स्केटिंग और आईस स्केटिंग सिखलाने का
डान्सिग और ड्राईविंग सिखलाने का।
परन्तु Life-car को कैसे Drive करनी,
यह सिखलाने की उसे कोई चिन्ता नहीं होती।
बालक भयंकर रूप से जिद्दी होते हैं।
छोटी सी बात में भी खूब गुस्सा करनेवाले होते हैं।
खाने-पीने में बहुत नखरेबाज होते हैं।
सबकुछ Top class का ही उपयोग करने के आदी होते हैं।
किसी भी प्रकार की कोई भी कमी सहन करने को तैयार नहीं होते हैं।
और न किसीकी कोई बात सुनने को तैयार होते हैं।
यह स्थिति पैदा करने में माता-पिता का बहुत बड़ा योगदान होता है।
बेटे को नियमित
रेस्टोरेन्ट में या आईस्क्रीम पार्लर में ले जाती
या घर में ही अनाप-शनाप बनाकर
Force करके खिलाती है
मम्मा को पता नहीं है कि उस बालक के

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को

धक्का पहुँचा रही है।

आज पता नहीं चलेगा

लेकिन जब बेटे को पच्चीस वर्ष में B.P.problem होगा।

तीस वर्ष में डायबिटीज़ होगा।

पैंतीस वर्ष में Chest pain होगा

और बयालीस वर्ष में

एक ही अटैक में रामनाम सत्य हो जाएगा

तब उन सभी वानगियों का

Original cost चुकाना पड़ेगा।

यह मात्र बेटे को ही नहीं,

बल्कि सारे घर को चुकाना पड़ेगा।

बेटा,

बचपन में पड़ी हुई बुरी आदत

सम्पूर्ण जीवन को छिन्न-भिन्न कर देता है।

माता-पिता की ओर से सन्तानों को सम्पत्ति या सुविधाएँ न मिले,

तो शायद चल सकता है

लेकिन सद्गुण नहीं मिलेगा तो हरगिज़ नहीं चलेगा।

संकल्पशक्ति, निर्णयशक्ति, विचारशक्ति,

शान्ति, सहनशीलता, उदारता,

विनय, विवेक, सन्तोष, सरलता,

त्यागशीलता, श्रमशीलता, स्वावलंबिता,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

संयम, करुणा, पवित्रता, प्रामाणिकता

ये सारे सद्‌गुण

बालक के जीवन की सही सम्पत्ति बन सकते हैं।

जीवन में जितनी जरूरत

भोजन, पानी और हवा की है,

इतनी ही जरूरत सद्‌गुणों की है।

My dear,

सर्वप्रथम तुम अपने जीवन में

इन सद्‌गुणों को उतारने का प्रयास करो,

और फिर अपनी सन्तान में ये सद्‌गुण उतरो

इसके लिए अपनी सारी शक्ति लगा देना।

सच्ची माँ

सन्तान के मात्र शरीर का ही नहीं,

मन और आत्मा का भी विचार करती है।

उसकी सुविधाओं की ही नहीं,

उसके सद्‌गुणों का भी विचार करती है।

उसके वर्त्तमान का ही नहीं,

उसके भविष्य का भी विचार करती है।

मेरी प्यारी,

इसी तरह सन्तान भी सुखी हो सकती है

और माता-पिता भी सुखी हो सकते हैं।

नहीं तो

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

दोनों पक्षों को दुःखी होना निश्चित है।

I know my daughter,

आज की मीडिया... आज का एट्मोस्फीयर

ये सारे इन सद्गुणों के विरोधी हैं।

आज के माता-पिताओं के लिए

इस परिस्थिति में सन्तानों का सात्त्विक निर्माण करना

एक बहुत बड़ा चैलेन्ज है।

यह काम कठिन जरूर है परन्तु असम्भव नहीं है।

यदि माता-पिता की प्रबल इच्छा हो तो

आज भी तपोवन संस्कारधाम जैसी

कई संस्थाएँ

इस कार्य को सफलतापूर्वक कर रही हैं।

जिसमें अपनी सन्तानों को एडमिट करने के लिए

सैकड़ों माता-पिता प्रयासरत रहते हैं।

आज माता-पिता के पास दो ही विकल्प हैं

या तो योग्य निरीक्षण कर

अच्छी संस्कारदायक संस्था में

सन्तान को एडमिट कर दें

या

घर में ही ऐसी संस्थाओं जैसा वातावरण

खड़ा कर दें।

सन्तान को और स्वयं को बचाने के लिए

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इसके अतिरिक्त तीसरा कोई विकल्प नहीं है।

मेरी प्यारी,

विश्व के कई महापुरुषों ने कहा है –

All that I am,

My mother made me.

I hope,

तुम्हारी सन्तान भी

जब अपने व्यक्तित्व से प्रभावित होनेवालों के समक्ष

यही घोषणा करेंगे

उस समय तुम्हारी आँखों से आनन्द के अश्रु बहने लगेंगे।

और तुम्हारी छाती चौड़ी हो जाएगी।

Wish you all the best.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

FEEDING

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

एक गुजराती लेखक – दिनकरभाई जोषी
उन्होंने एक सुन्दर स्वानुभव लिखा है।
सौराष्ट्र के एक छोटे से गाँव में
एक घर में वे मेहमान बनकर गए थे।
बड़ा संयुक्त परिवार था।
परिवार के बुजुर्ग के साथ दिनकरभाई बात कर रहे थे।
परिवार की एक लड़की वहाँ आई
और पूछा –
"दादा, रसोई हो गई है। मम्मी पूछती है कि परोस दूँ ?"
दादा ने सहमति जताई।
पहले मात्र पुरुषों की पंगत बैठी।
परिवार की स्त्रियाँ परोसने लगीं।
दिनकरभाई ने देखा
कि खाते-खाते जो वस्तु कम पड़ती
वह माँगनी नहीं पड़ती थी।
"अब बस"
ऐसा कहा जा सकता था।
लेकिन
कढ़ी लाओ, सब्जी लाओ
ऐसा कुछ कहने की जरूरत ही नहीं थी।
दिनकरभाई ने जीवन में एक अपूर्व अनुभव किया।
पुरुषों की पंगत ने खाना खा लिया
उसके बाद स्त्रियाँ खाने बैठीं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उस परिवार के ९० वर्ष के बुजुर्ग को

दिनकरभाई ने इसका रहस्य पूछा।

उन्होंने कहा,

“इस पद्धति से चार लाभ हैं-

(१) बगल की थाली के बदले अपनी थाली में ही ध्यान रहता है।

(२) परिवार के सदस्यों को प्रसन्नतापूर्वक खाते हुए देखकर रसोई बनानेवाले को आनन्द होता है।

(३) आप कोई वस्तु माँगे, इसकी अपेक्षा आपकी आवश्यकता को समझकर कोई परोसे इसमें बहुत अन्तर है।

(४) संयुक्त परिवार में अलग-अलग बहुएँ एक साथ खाने बैठे, तो इसमें तेरा-मेरा का भाव नहीं रहता।

मेरे पिताजी ने मुझे यह बात समझाई, जिसे मैं अपने अनुभव के आधार पर अच्छी तरह समझ सकता हूँ।”

मेरी प्यारी,

अपने हाथों से बनाई हुई रसोई स्वजनों को परोसना

और उन्हें भोजन करते हुए देखकर अपूर्व आत्मसन्तोष के अनुभव का जो आनन्द है, उसे एक नारी ही समझ सकती है।

हितशिक्षा छत्रीशी में

स्त्री को सम्बोधित करते हुए कहा गया है -

“सहुने जमाडी जमीएजी”

अर्थात् सभी को खिलाकर स्वयं खाना चाहिए।

बेटा,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

ऐसी स्त्री सरलतापूर्वक सबका प्रेम जीत लेती है।

स्वयं पहले खानेवाली स्त्री ज्यादा खाती है, ऐसी बात नहीं है।

वह सोना-चांदी खाती है, ऐसा भी नहीं है।

लेकिन ऐसी स्त्री की छाप भोजनप्रिय स्त्री के रूप में पड़ती है।

ऐसी स्त्री

अन्य व्यक्ति के हृदय में स्वयं के प्रति अरुचि पैदा करती है।

सबको खिलाकर खानेवाली स्त्री

भूखी रहती है, ऐसा नहीं है।

बल्कि इसके विपरीत खिलाने का आत्मसन्तोष

और प्रसन्नता उसके भोजन को अमृत बना देती है।

सद्भावना और प्रेम के साथ

स्वजनों के लिए रसोई बनानेवाली नारी

वात्सल्यपूर्वक स्वजनों को रसोई परोसनेवाली नारी

और सबको खिलाकर

गहरे आत्मसन्तोषपूर्वक स्वयं भोजन करनेवाली नारी

हमारी संस्कृति का एक अनोखा आदर्श है।

फ्रीज़ से रसोई निकालकर स्वयं गरम कर

परिवार का प्रत्येक सदस्य अकेले-अकेले खा ले

ऐसी सेल्फ सर्विस...

ऐसा भावनाशून्य भोजन...

ऐसा शुष्क व्यवहार...

ऐसा c grade का पोषण

यह सब पश्चिमी देशों की विडम्बना है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

वहाँ की नारी को

आटा गूँथने से लेकर परोसने तक की झंझट दूर हो गई है।

लेकिन दूसरी ओर उसका सारा जीवन झंझट बन गया है।

दस से बारह घन्टे तक घर से बाहर रहनेवाला

और हमेशा थका देनेवाला काम करना

बॉस की डांट सुननी

और ट्रान्सपोर्टेशन की कोलाहल भोगनी

ये सारे झंझट ही उसका जीवन है।

उसके सामने

कार्येषु मन्त्री - विशेष काम के समय मन्त्री

भोज्येषु माता - खिलाते समय माता

शयनेषु रम्भा - शयनखंड में रम्भा

यह हमारी संस्कृति की नारी क्या बुरी है?

आधुनिकता की दौड़ में

लाखों स्त्रियाँ घर की चिन्ता के साथ-साथ

ऑफिस के काम में व्यस्त होती है।

जबकि हमारे घर की नारी

खा-पीकर

फुल पंखा के नीचे आराम फरमा रही होती है।

मेरी प्यारी,

बासी, बाहर का, जैसा-तैसा और नौकरों के हाथ का खाकर

परिवार बीमार पड़ता है।

अतः उसकी दवाओं के ऊपर खर्च करना

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और उस खर्च को पूरा करने के लिए रसोई छोड़कर कमाने जाना

ऐसी करुणता तुम्हारी कथा न बन जाए।

इसका ध्यान रखने की जिम्मेदारी तुम्हारी है।

My dear,

Kitchen is not duty,

But a power

जिसके द्वारा नारी सबका मन जीतकर

जीवन भर राज करती है।

Enjoy it my daughter

Love you very much.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

MIS-
UNDERSTANDING

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बेटा,

हमारे यहाँ एक भ्रम बहुत ही व्यापक है।

कि पुरुष स्त्री के ऊपर बहुत जुल्म करता है।

उसे शारीरिक और मानसिक दुःख देता है।

पति के पैरों के नीचे कुचलते रहना

यही पत्नी का जीवन है।

यह भ्रम स्त्रियों में ऐसी मानसिकता को जन्म देती है

कि पुरुष उसके दुश्मन हैं।

यह मानसिकता नकारात्मक दृष्टि को जन्म देती है।

परिणामस्वरूप गृहक्लेश से लेकर

गृहभंग तक की वेदनाओं को सहन करनी पड़ती है।

Do you know my dear,

What's the truth here?

Let's listen to the National Crime bearo.

२००७ के एक Report के अनुसार

पत्नी से पीडित होकर ५७,५९३ पुरुषों ने आत्महत्या की थी।

जबकि पुरुष के अत्याचार का भोग बनी हुई

३०,०६४ परिणीत स्त्रियों ने आत्महत्या की थी।

नेशनल क्राईम रेकाड्र्स ब्यूरो ने

१६५० शहरी पुरुषों का Online सर्वे किया।

उनमें से ९८% पुरुष

पत्नी के द्वारा की जानेवाली हिंसा के शिकार हुए थे।

दहेज कानून तथा घरेलू हिंसा की धारा का दुरुपयोग कर

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

असंख्य स्त्रियाँ पुरुषों को परेशान करती हैं।

सेव इन्डिया फैमिली फाउन्डेशन के काउन्सेलर

बतलाते हैं कि उनकी संस्था में घरेलु हिंसा के शिकार पुरुषों के सालाना एक लाख फोन आते हैं।

एक संस्था है - स्वान्चेतन।

प्रत्येक वर्ष पत्नी के अत्याचार का शिकार बने हुए

३५० पुरुषों का वह काउन्सेलिंग करती है,

उनमें से कुछ घटनाओं में पत्नियाँ अपने पति को गम्भीर रूप से शारीरिक हानि पहुँचाती हैं, ऐसा पाया गया है।

सुप्रीम कोर्ट के एक वकील हैं - आर. पी.चग.

उनकी एक संस्था है - क्राईम एगेइन्सट मैन।

इस संस्था में पत्नी के द्वारा पीडित ४०,००० पुरुष सदस्य हैं।

यह संस्था बतलाती है कि

आर्थिक स्वार्थ से रहित स्त्री

किसी भी बात में पति या परिवार के सदस्यों की

परवाह नहीं करती है।

पत्नियाँ जो जुल्म करती हैं,

उसका सबसे बड़ा कारण पैसा है।

पत्नी की वस्त्र और आभूषण की माँग यदि पति पूरी न कर सके तो झगड़ा होता है।

पत्नी की इच्छा होती है

कि पति अपने माता-पिता या भाई-बहनों की
किसी प्रकार से आर्थिक सहायता न करे।
ऐसी अनुचित इच्छा भी
कभी-कभी अत्याचार में परिणत हो जाती है।
मेरी प्यारी,
अब तुम ही बताओ।
कि पुरुष स्त्री के ऊपर अत्याचार करता है,
यह पक्षपाती मान्यता
नासमझी नहीं तो और क्या है?

छगन एक बार क्रिकेटर का ड्रेस पहनकर
किसी स्टेडियम में पहुँच गया।
वहाँ लोगों को भ्रम हो गया।
उनलोगों ने छगन को बैटिंग करने को कहा।
सामने फास्ट बॉलर था।
लम्बा रन-अप लेकर
उसने गजब की बॉलिंग की।
छगन मानो बैट्समैन था, इस प्रकार बैटिंग की।
बॉल सनसनाता हुआ उसके माथे में लगा।
सिज़न बॉल था।
जोर से चोट लगी।
सभी इकट्ठे हो गए।
छगन तो वैसे का वैसे ही स्वस्थतापूर्वक खड़ा रहा।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

सबके आश्चर्य की सीमा न रही।
उन्होंने छगन से पूछा
"तुमने बिना हैल्मेट के ऐसी चोट कैसे सहन कर लिया?"
छगन ने जवाब दिया।
"इसका श्रेय मेरी पत्नी के बेलन को जाता है।"

बेटा,
बेलन–कथा बहुत ही दर्दनाक है।
ऊपर जो संख्या मैंने बताई है,
वह तो बहुत कम है।
घरेलु हिंसा की शिकायत करनी
स्त्री के लिए जितनी सरल है,
पुरुष के लिए उतनी ही कठिन है।
कई पुरुष तो जोरू का गुलाम बनकर
चुपचाप सबकुछ सहन करते रहते हैं।
परन्तु पुरुषत्व के गौरव का हनन न हो
इसलिए घर के बाहर किसीसे कहते नहीं।
बात स्त्रियों के ऊपर दोषारोपण करने की नहीं है।
बल्कि
मात्र गलत नासमझी के कारण
परम्परागत मूल्यों की अवहेलना कर
पति को नकारात्मक दृष्टि से ही देखकर
पारिवारिक सुखों के ऊपर स्थायी रूप से पूर्णविराम न लग जाए।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

उसकी बात है।

गुनहगार कौन?

पुरुष या स्त्री?

इसके जवाब में मै तो एक ही बात कहूँगा

कि दोष ही गुनहगार है,

दोषों के कारण ही सारी समस्याएँ हैं।

यदि प्रत्येक व्यक्ति

प्रामाणिकता से गुणों को प्राप्त करने का

प्रयत्न करने लगे।

तो फिर

यह धरती ही स्वर्ग बन जाएगी।

Try for it my dear.

Wish you all the best.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

LAW

छगन ने एक बार

मगन को फोन किया...

"कोर्ट में तुम्हारा जो केस चल रहा था उसका क्या हुआ?

तुम दोनों भाईयों को तुम्हारे पापा की जायदाद समान रूप से मिल गई ना ?"

मगन ने ठंडी आवाज में जवाब दिया।

"हाँ,

हमदोनों के वकीलों को समान भाग से मिल गयी।"

This is law of the law my daughter,

कोर्ट, पुलिस, हेल्पलाईन,

ये सारे Result Almost निराशाजनक होते हैं।

विशेष रूप से

जब अपने परिवार के सदस्यों की ही शिकायत करनी हो,

तब तुम जीतो या हारो

दोनों तरह से तुम्हें ही नुकशान सहन करना पड़ता है।

For example

Domestic violence prevention Act के द्वारा

पत्नी, माता, बहन या बेटी

शिकायत दर्ज करा सकती है।

उसमें यदि पुरुष दोषी सिद्ध होता है

तो उसे एक वर्ष तक की सजा

और २०,००० रुपये का दण्ड होता है।

इसमें यदि स्त्री जीत जाए,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

तो घर का कमानेवाला व्यक्ति

एक वर्ष तक जेल में रहे

उसकी सजा सारे घर को भोगनी पड़ती है।

घर की स्त्री सदस्यों की सुरक्षा आदि का प्रश्न उपस्थित होता है।

वह अलग।

इतने में बात समाप्त नहीं हो जाती।

जेल से वापस आने के बाद

जेल भेजनेवाली और दण्ड करानेवाली स्त्री के प्रति

उस पुरुष का व्यवहार कैसा होगा?

उस स्त्री का भविष्य कैसा होगा?

Can you imagine my daughter?

यह तो जीत के बाद की बात है।

वैसे तो

कानून के सहारे बेटी को न्याय दिलानेवाले

किसी भी बाप की आँखों में आँसू आ जाते हैं।

कभी-कभी तो कानून के दुरुपयोग के नाम पर

पुलिस स्टेशन से ही

केस रफा-दफा हो जाता है, ऐसा देखने को मिलता है।

कभी-कभी केस अधिक मजबूत हो,

तो वकील आड़े-टेढ़े रास्ते पर चढ़ा देता है,

जिससे केस लम्बा चलता है।

तब कई बातें तो भुला गई होती हैं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और वकील उटपटांग सवाल पूछकर परेशान करता है।

सबकुछ उस समय याद न आए, यह स्वाभिवाक है

Exam में ९५% लानेवाले Brillient student को भी

५ वर्ष के बाद कितना याद रहता है?

न्यायिक निर्णय सबूतों और गवाहों पर आधारित होते हैं।

जिनका इन बातों में प्रायः अभाव होता है।

आखिर

अंग्रेजी प्रथा के अनुसार शंका का लाभ देकर

आरोपी को छोड़ दिया जाता है।

इस बीच कोर्ट के चक्कर लगा-लगाकर

वादी थक चुका होता है।

मेरी प्यारी,

सरकार का आशय उत्तम होते हुए भी

कानूनी दांवपेंच उसे सफल होने नहीं देते।

फेमिली कोर्टों में विचाराधीन पड़े

बहुत सारे केस यूँ ही धूल खाते रहते हैं।

इस प्रकार जीत या हार

दोनों ओर नारी को और सारे परिवार को

सहन करना ही पड़ता है।

इसमें Law का कोई मतलब ही नहीं रहता है।

बेटा,

हमारी परम्परा की सामाजिक व्यवस्था

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

यही उचित रास्ता है।

उसके अनुसार सबसे प्रभावकारी काम

वर्त्तमान में कुछ पंच कर रहे हैं।

जैसा अपराधी - जैसा अपराध

उसे लक्ष्य में रखकर पंच फैसला करता है।

यह तो just प्रासंगिक बात है।

अन्यथा एक गुणवती नारी को

कोर्ट और पंच की कोई जरूरत पड़ती ही नहीं।

My dear,

Original wifehood है तो, कोर्ट की कोई जरूरत ही नहीं है और यदि वह नहीं है तो कोर्ट का कोई फायदा नहीं है।

सारी दुनिया के कानून, कोर्ट, पुलिस और हेल्पलाईन्स एक तरफ हैं।

और दूसरी ओर

Pure and real wifehood.

Let it be protection,

Let it be your pleasure. &

Let it be your peace.

Have an ever happy life my daughter,

Love you very much.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

CRUELTY

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मेरी प्यारी,

यह बात है दुनिया की सबसे नीच क्रूरता की,

जिसमें एक माता एक कसाई से भी क्रूर बन जाती है

और अपनी कोख में पल रहे

निर्दोष और मासूम सन्तान की निर्मम हत्या करा देती है।

My daughter,

यह मात्र सन्तान की हत्या नहीं है,

यह मानवता की हत्या है।

मातृत्व की हत्या है।

मेरी तुमसे हार्दिक प्रार्थना है बेटा,

ऐसे पाप से अपने जीवन को कभी कलुषित मत करना।

इस विषय में

तुम्हारे साथ विशेष रूप से तो कोई बात नहीं कर सकता

लेकिन कुछ ऐसी बातें हैं,

जिनकी जानकारी होनी तुम्हें बहुत जरूरी है।

इसके लिए इसके साथ दो Articles रखे गए हैं।

ध्यान से उसे पढ़ना।

चलो एबार्शन केन्द्र में

गर्भपात की कुछ वैज्ञानिक तथा अन्य स्वीकृत पद्धतियाँ, जो आज भारत में प्रचलित हैं, उनके ऊपर एक नजर डालते हैं। मन को मजबूत कर लो और चलो एबार्शन केन्द्र में।

डी. एन्ड सी. ऑपरेशन : चिकित्सकीय उपकरणों के द्वारा सगर्भा स्त्री के

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

गर्भाशय का मुख चौड़ा किया जाता है। उसके बाद उन साधनों में से एक चाकू अथवा कैंची जैसा कोई हथियार अन्दर डालकर जीवित बालक को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट डाला जाता है। गर्भ में तड़पता हुआ बालक असह्य वेदना भोगते हुए मृत्यु की शरण में जाता है। फिर चम्मच जैसे एक साधन के माध्यम से बालक के शरीर के टुकड़ों को बाहर निकाला जाता है। छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटा हुआ मस्तिष्क, रक्त में डूबी हुई अंतड़ियाँ, बाहर की ओर निकली हुई आँखें, दुनिया में जिसने पहली साँस भी नहीं ली थी, ऐसा फेफड़ा, धड़कता हुआ छोटा सा हृदय, हाथ-पैर आदि सभी टुकड़ों को जल्दी-जल्दी निकालकर डॉक्टर बाल्टी में फेंक देता है, क्योंकि बाहर गर्भपात के लिए खड़ी महिलाओं की लम्बी लाईनें होती हैं। अतः डॉक्टर को यह सब शीघ्र पूरा करना पड़ता है, जिसके कारण बालक को अन्दर तड़पकर मरने के लिए पूरा समय भी नहीं दिया जाता है। यह ऑपरेशन अन्धेरे में तीर मारने जैसा है, हथियार गर्भस्थ बालक के माथे में, छाती में, पेट में या हृदय में न लगकर हाथ-पैर या कन्धे में लगता है, तो बालक जल्दी मरता नहीं है। ७०, ८० या ९० वर्ष जीने के लिए कुदरत ने जो पौधा तैयार किया होता है, उसकी जिजीविषा अत्यन्त प्रबल होती है, अतः जल्दी-जल्दी में गर्भ से बाहर निकालकर बाल्टी में फेंका हुआ धड़कता हृदय देखकर कभी-कभी तो डॉक्टर, नर्स और स्वीपर भी अपनी आँखें फेर लेते हैं।

ये उपकरण कभी जल्दबाजी में तो कभी अनभ्यस्त हाथों के द्वारा गर्भाशय को भी नुकशान पहुँचाते हैं। ऐसे केस में लम्बे समय तक रक्तस्राव होता रहता है, अन्दर घाव हो जाता है, हमेशा प्रदर होता है, यौन उत्तेजना शान्त पड़ जाती है। परिणामस्वरूप दाम्पत्यजीवन प्रभावित होता है और कभी-कभी तो ऐसी स्त्री दुबारा माँ नहीं बन सकती है,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

शोषण पद्धति : गर्भाशय में एक चौड़ी नली का छोर डाला जाता है। वह नली एक पम्प के साथ जुड़ी होती है और उसका दूसरा छोर एक बड़ी बोतल के साथ जुड़ा होता है। नली का एक छोड़ गर्भाशय में अच्छी तरह से डालने के बाद पम्प चलाने से गर्भस्थ बालक गर्भ में ही टुकड़े-टुकड़े में बिखर जाता है। कसाई भी एक झटके में ही बकड़े को हलाल करता है, जबकि इस पद्धति में बालक के अलग-अलग अंग नली के द्वारा खिंचते हुए चले आते हैं। आँखें फटकर बाहर निकल जाती हैं, पम्पिग प्रक्रिया के कारण कमर, छाती, पेट, मस्तिष्क के अन्दर स्थित अवयव फटकर छिन्न-भिन्न होकर बाहर आते हैं। और यदि कोई जीव अधिक मांसल और मजबूत होता हो तो सम्पूर्ण जीव एक बार में ही उछलकर बाहर आता है और बन्द बोतल में जोर से गिरने के कारण वह चूर-चूर हो जाता है। कई बार तो बालक बहुत देर तक बोतल में तड़पता रहता है और सांसें अवरुद्ध हो जाने के कारण ठंडा पड़ जाता है। इस पद्धति में कभी-कभी सम्पूर्ण गर्भाशय ही खिंचकर बाहर आ जाता है, जिसके कारण स्त्री को जीवन भर अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं। कमर का दर्द तो स्थायी रूप से रहता है। उसके बाद का गर्भाधान भी प्रभावित होता है और रक्तस्त्राव के कारण स्त्री कमजोर हो जाती है।

हिस्टरोटोमी (लघु सिजेरियन) : पेट को चीरकर, सगर्भा स्त्री की आँतों को बाहर निकालकर, गर्भाशय को खोलकर जीवित बालक को बाहर निकाला जाता है। फिर उसे बाल्टी में फेंक दिया जाता है। हाथ-पैर चलाता हुआ, उछालें मारता हुआ, रोता हुआ बालक बाल्टी में ही मर जाता है। कुछ जबरदस्त जीव तो घन्टों तक मरने से भी इन्कार कर देता है और ऑपरेशन थियेटर में दूसरा केस तुरन्त प्रवेश करना होता है, अतः बाल्टी में जीते हुए बालक को तीक्ष्ण धारवाले हथियार से काट डाला जाता है अथवा बाल्टी में

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

ही पटककर मार डाला जाता है। यदि कातिल, खूनी, डाकू, कसाई और आदतन नरहत्या करनेवाले ऐसे दो-चार ऑपरेशन देख ले तो या तो अपना धन्धा छोड़कर साधु बन जाएगा या ऐसे काम करनेवालों का खून कर डालेगा।

विषैली क्षारवाली पद्धति : गर्भाशय में एक लम्बी सूई भोंकी जाती है और उसके द्वारा क्षार का द्रव छोड़ा जाता है। चारों ओर से क्षार के द्रव से घिरा हुआ बालक के मुँह में जब थोड़ा क्षार जाता है तो उसे हिचकी आनी शुरु हो जाती है। ज़हर खाए हुए व्यक्ति की तरह गर्भाशय में उसके हाथ-पैर खिंचने लगते हैं, क्षार के असर से उसका सारा शरीर काला पड़ जाता है। अन्त में सांस अवरुद्ध हो जाने के कारण बालक गर्भाशय में ही मर जाता है। फिर उसे बाहर निकाला जाता है। कई बार गर्भाशय से निकालते समय बालक थोड़ा जीवित भी होता है। उस समय उसका शरीर नीला होता है, बाहर निकालते ही कुछ ही देर में वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। ऐसी स्थिति में यदि बालक जुड़वां होता है तो एक मरा हुआ निकलता है और दूसरा जीवित बाहर आता है। परन्तु उसे भी कुछ ही देर में अन्य घातक हथियार से मृत्यु की शरण में भेज दिया जाता है।

समाधान की नई पद्धतियाँ : एक ऑपरेशन में ७ महीने का एक बालक जीवित निकला। उसे इस दुनिया में जीने का अधिकार है, यह व्यक्त करने के लिए वह जोर-जोर से रोने लगा। डॉक्टर ने उसे भंगी को देने के लिए आया को सौंप दिया। रोते हुए बालक को दफनाने से भंगी ने इन्कार किया। आया और भंगी के बीच झगड़ा हुआ। अन्त में आया ने उस बालक को जमीन पर पटक दिया। थोड़ी देर तक तड़पकर वह बालक मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसके बाद उस भंगी ने उस मासूम के शव को स्वीकार किया। आया को दस रुपये मिले, डॉक्टर और उसके सहयोगी को पाँच-पाँच रुपये मिले, नर्स को एक

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

रूपया मिला और अपने ही बालक की हत्यारी माता को पूरे एक सौ रुपये मिले। (ई.१९७२ से भारत सरकार पुरस्कार दे रही है।) गर्भपात की घटनाओं में कई बार लड़कियाँ और माताएँ अज्ञानतावश जानबूझकर गलत जानकारी देती है। और उसकी जानकारी के विपरीत बालक अधिक परिपक्व निकलता है। कुछ केस में मरने से इन्कार करता है और कोई दयालु व्यक्ति उसे दत्तक ले लेता है।

एक बार एक परिपक्व गर्भ का मस्तक शोषण पद्धति में अलग हो गया और उसका धड़ सांस लेने के लिए आधे घन्टे तक छटपटाता रहा।

शाम के समय ऑपरेशन थियेटर के मानव जूठन से भरी हुई बाल्टियों में मरे हुए खदबदाते हुए मनु-सन्तान होते हैं। जिन्हें या तो जमीन में दफना दिया जाता है या भट्ठी में डालकर जला दिया जाता है। जिससे सामान्य नागरिकों को इस लीला का पता ही नही चलता।

इस देश में मुर्गी के अन्डे, मांसाहार आदि पाप माना जाता है। यहाँ लोग कबूतर को दाना देते हैं, चींटियों के बिल पर उसका आहार डालते हैं, मछलियों को तिल के लड्डू खिलाते हैं और साँप तक को दूध पिलाते हैं। जिस बकरी के गर्भ में बच्चा हो, उस बकरी को कत्ल करने से 'दीन' मना करते हैं। लोग अपने सगर्भा पशु को कसाईखाने में नहीं बेचते हैं। प्रयोगशालाओं में प्रयोग के लिए विदेशों में बन्दरों का निर्यात होता था, जिसे लोगों के विरोध के कारण सरकार को बन्द कर देना पड़ा। अब कबूतरों का निर्यात भी बन्द होनेवाला है। यहाँ मोर को मारना अपराध की श्रेणी में आता है। सिंह-बाघ और चीते का शिकार करने पर रोक लगाई गई है। वृद्धा, लूली-लंगड़ी और कमजोर गायों के लिए इस देश में सुखी दाता अनेक गोशाला चलाते हैं। गोवंश का कतल बन्द करने के लिए देश के आचार्य, सन्त और महन्त आए

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

दिनों उपवास पर उतर जाते हैं। और गांधी के इस देश में मानववंश की क्रूरतापूर्वक हत्या के लिए सरकार प्रोत्साहन देती है। प्रचार-प्रसार करती है, उसकी कुल संख्या घोषित करती है, उसके लिए गौरव का अनुभव करती है। औक इस खूनी षडयन्त्र में शामिल पूरी मशीनरी की प्रशंसा करती है।

प्रचार-जाल : सरकार लोगों को फँसाने के लिए लुभावने सूत्रों का प्रचार करती है -'प्रसूतिनिवारण स्त्री का अधिकार है।' यह पंक्ति पढ़कर कोई अनुभवहीन महिला परिवार कल्याण केन्द्र में जाती है तो उसे गर्भपात की सलाह दी जाती है। सलाह देनेवाला स्वयं या उसके दल का कोई अन्य सदस्य होता है। जो बड़ी संख्या में महिलाओं को गर्भपात कराने के लिए तैयार करने में निपुण होता है। वह सगर्भा स्त्री को अनेक प्रकार से समझाता है कि आपको अभी बालक की जरूरत नहीं है। आपका यौवन, आपका सौन्दर्य, आपका शरीर सौष्ठव अगर आपको टिकाए रखना हो तो गर्भपात करा लें। आपको नौकरी करनी है, आपको अपने पति को साथ देना है। आपको विदेश जाना है। आपको मौज-मस्ती करना है, बालक उसमें बाधक बनेगा। पाँच-दस वर्ष रुक जाएँ, अभी गर्भपात करा लें, एबॉर्शन अब कानून की दृष्टि में मान्य है। इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं है। किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होती है, ऊपर से रुपये भी मिलते हैं। अगर आप नौकरी कर रही हैं, तो सवैतनिक अवकाश मिलता है। आप घर पर आराम कर, सरकारी पैसे से दवा-टॉनिक आदि लेकर बिल्कुल तरोताजा होकर जहाँ चाहें घूम सकती हो। एक बार आपने जो भूल की , वह दुबारा नहीं होने देना, लेकिन इस वक्त तो इसे साफ करा ही डालो। इतना होने पर भी यदि कोई धर्मिक भारतीय स्त्री अपने हजारों वर्षों के संस्कार बल पर गर्भपात जैसा पाप करने से इन्कार करती है, तो उसे समझाया जाता है -'अभी तो शुरुआत है। इसमें अभी जीव नहीं है, यह तो

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मांस का लोथड़ा है। उसे निकाल देने में बिल्कुल पाप नहीं है, दर्द भी कुछ खास नहीं होता है। एक सप्ताह में भली-चंगी हो जाओगी, किसी को पता भी नहीं चलेगा।'

और भोली-भाली स्त्री इस प्रचार-जाल में फँस जाती है। उसे यह मालूम नहीं कि तीसरे महीने में तो बालक गर्भ में स्पन्दन करने लगता है। और जीव तो गर्भाधान के समय ही उसमें प्रवेश कर जाता है। मैथुन के समय ही पुरुषवीर्य के शुक्राणु के साथ स्त्रीवीर्य का मिलन होते ही जीवन धड़कने लगता है। जीव ही जीव को जन्म दे सकता है। मृत पदार्थ में से कभी भी जीवन सम्भव नहीं होता। जनसंख्या को कम करने की यह नीच और खूनी चाल है। जिसमें जीवन का इन्कार करने के लिए गलत दुष्प्रचार किया जाता है। इस दुष्प्रचार की जनक स्वयं सरकार है। प्रत्येक व्यक्ति को काम, रोजी-रोटी देने में असमर्थ यह सरकार दुष्प्रचार के द्वारा मनुष्य का कत्लखाना चलाती है। इस देश में अकाल पड़ता है, भूकम्प होता है, आग्निकांड होते हैं, मँहगाई बढ़ती है, मनुष्य चरित्रहीन होता है और अन्त में यादवस्थली से इस देश का सत्यानाश हो जाए तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

गर्भ में जीव का अस्तित्व शुरुआत से ही होता है - बिना जन्म के विकास सम्भव ही नहीं है।

कानून और कुदरती न्याय : सरकारी और गैरसरकारी अस्पतालों के दरवाजों के पीछे ऐसे मानव कतलखाना कानूनी रूप से चल रहे है। डॉक्टर, उसके सहायक, नर्स, झाड़ू लगानेवाला, आया और सन्तति नियमन विभाग के कर्मचारी अपने लाभ के लिए, भौतिक समृद्धि की भूख मिटाने के लिए अधिक से अधिक महिलाओं का गर्भपात करवाने के लिए इन कत्लखानों में हर रोज ला रही है। स्वास्थ्यमन्त्री ने जो अनुमान लगाया है, वह तो अस्पतालों

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

का है, अन्धेरी गलियों में घरेलु वैद्यों के द्वारा जो भ्रूणहत्या और साथ साथ ही सगर्भा माताओं की जो चोर-छिपे मौत होती होगी, उसका अनुमान तो कभी किसीको हो भी नहीं सकता।

कुंवारी माताएँ लोकलाज के कारण गर्भपात कराती हैं, उसकी अपेक्षा बहुत बड़ी संख्या में विवाहित माताएँ कानून के बल पर अपने बालकों की हत्या करती है, बालक नहीं चाहिए तो विवाह क्यों किया? यदि मौज करने के लिए ही विवाह किया हो तो संयम का पालन क्यों नहीं कर सकती हैं? यदि भूल हो गई है तो उसकी सजा क्यों नहीं भुगत लेतीं? गर्भाशय में से असमय ही निकालकर जमीन में दफना दिया जानेवाला बालक यदि माँ-बाप के विरुद्ध कोर्ट में जा सकता तो ! यदि उसे सरकारी वकील की सहायता मिल जाती तो ! हमारे माँ-बाप ने यदि इसी तरह हमारा भी अन्त कर दिया होता तो !

समस्या : अवांछित बालकों के योग्य निदान को राष्ट्रीय सेवा माननेवाले ऐसी दलील करते हैं कि अनिच्छित बालकों को जीवित रखने की अपेक्षा मार डालना ही अच्छा है। इस दलील को यदि योग्य माना जाए तो अवांछित पत्नी को जो लोग जलाकर मार डालते हैं, वे भी एक दिन राष्ट्रीयसेवक माने जाएँगे। फिर तो अन्धे, लूले-लंगड़े, मूक-बधिर बालक तथा बोझरूप बने हुए वृद्धों को भी बढ़ती हुई जनसंख्या को कम करने के बहाने ज़हर का इन्जेक्शन देकर मार डालने के लिए कानून बनाया जा सकता है। लोकतन्त्र में किसी भी मुद्दे पर बहुमत मिल जाने के बाद उसका कानून बनाने से भला कोई रोक सकता है? सत्ता पर विराजमान होने के लिए भी बहुमत तो प्राप्त करना ही पड़ता है ना? बहुमतवाला समाज यदि बीड़ी-भांग पीए तो नियमानुसार कल्याण राज्य में वह शिष्टाचार माना जाता है।

गर्भपात के द्वारा हमने न जाने कितने राम, कृष्ण, बुद्ध और अन्य महान्

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

विभूतियों को धरती पर आने से पहले ही मार डालते हैं। यह निर्दयी कानून सरेआम बालहत्या ही है। दुनिया के अनेक देशों में फांसी की सजा समाप्त हो गई है। खूनी को भी फांसी की सजा नहीं दी जाती है। कारण कि किसी के प्राण लेने का मनुष्य को अधिकार ही नहीं है। गर्भपात तो फांसी की सजा से भी अधिक क्रूर कार्य है। फांसी के बाद तत्काल मृत्यु हो जाती है पीडा नही होती जबकि गर्भपात में बालक तडप तडप कर मरता है। फांसी में तो कम कष्ट है, गर्भपात में तो जीव को अत्यन्त भयंकर पीड़ा होती है।फांसी गम्भीर अपराध की सजा के रूप में दी जाती है, जबकि गर्भपात में बालक का कोई अपराध होता ही नहीं है। दूसरों की सुरक्षा के लिए अपराधी को फांसी दी जाती है। जबकि अपने मौज-शौक, शारीरिक सुख तथा आनन्द प्राप्त करने के लिए प्रजातान्त्रिक समाज अपने सन्तानों की गर्भ में हत्या करता है। फांसी की सजा प्राप्त करनेवाला कुछ वर्षों तक तो पृथ्वी पर बिताते हैं, जबकि गर्भस्थ बालक तो अभी धरती पर सांस भी नहीं लिया होता है। गैस चेम्बर में हजारों यहूदियों को मार डालनेवाले हिटलर को दुनिया जघन्य अपराधी मानती हो तो अपनी सन्तानों को मौत के घाट उतारनेवाले दम्पत्ति को कैसे निर्दोष माना जा सकता है?

वर्ष १९८० में हमने बालवर्ष मनाया। और उसी वर्ष में हमने कितने बालकों की हत्या की, इसकी संख्या यदि स्वास्थ्य मन्त्री बतलाएँ तो हमारा बालप्रेम और जीवदया की सही संख्या जानने को मिल सकता है।

इस दुनिया में तीन व्यक्तियों ने गर्भपात के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द किया है। स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी और ईसाई धर्म के प्रमुख पोप। अन्य बहुत सारे लोग मेरी ही तरह अपने विचार प्रगट करने का प्रयत्न किया होगा, परन्तु इस भौतिकवादी नगारखाने में तूती की आवाज कौन सुने? ईश्वरीय न्याय जैसी यदि

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

कोई चीज होगी तो वहाँ हमारा विरोध जरूर दर्ज होगा।

याद रखें। गर्भाधान के समय ही व्यक्ति की ऊँचाई, उसकी बुद्धि की माप (I.Q)उसके चलने का तरीका, उसकी उँगलियों के निशान, उसका ब्लडग्रुप तथा अन्य कई विशेषताएँ निर्धारित हो जाती हैं। गर्भस्थ बालक का भी एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व होता है। उसके बाद की अवस्था में मात्र उसका विकास ही होता है। यदि गर्भपात को कानूनी माना जाए तो दुनिया में चोरी, खून बलात्कार भी आगे जाकर कानूनी माना जाएगा। जो मारे उसकी तलवार, यह तो जंगल का कानून है। यदि सभ्य समाज इसे स्वीकार करता है तो वहशीपना जल्दी ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हावी हो जाएगा। डॉक्टरों के पिता हिपोक्रेटिक की सौगन्धविधि में स्पष्ट बतलाया गया है -'मैं डॉक्टर बना हूँ जीवन बचाने के लिए, जीवन का नाश करने के लिए नहीं।' और आज के डॉक्टर इस नश्वर जीवन के सुख-चैन के लिए अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर हजारों जीवों का नाश करते हैं। सरकारी समर्थन के साथ-साथ कलियुग के प्रथम चरण की यह बलिहारी है। हो सकता है मात्र इतना ही कि जिनकी आत्मा इसे स्वीकार न करे, वैसे सज्जन ऐसी अन्धी दौड़ में शामिल न हों।

(जनसत्ता परिवार के विशेषांक से साभार)

द साइलेन्ट स्कीम

गर्भ बोला; ओ माँ ! मर गया !

(समकालीन १७ जून १९८५ से एक हृदयविदारक लेख यहाँ प्रस्तुत किया गया है। अपने मस्तिष्क को थोड़ा आराम देकर फिर आगे बढ़ें।)

सन्डे ऑब्जर्बर के कल के अंक में धीरेन भगत ने एबॉर्शन को योग्य परिप्रेक्ष्य में रखनेवाली द साईलेन्ट स्कीम नामक डॉक्युमेन्टरी फिल्म की टीका-टिप्पणी समाज की और शासकों की आँखें खोलनेवाली हैं।'गर्भपात ७० रुपये में' ऐसी

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

अनेकों विज्ञापन हम उपनगरों की लोकन ट्रेनों में कई बार देखते हैं। शहरों के शिक्षितों ने फैमिली प्लानिंग अपना ली है। देश में जनसंख्या नियन्त्रण का होना जरूरी है। इसलिए सरकार ने परिवार नियोजन तथा एबॉर्शन के प्रति उदार अभिगम अपनाया है। टी.वी. या अखबारों के द्वारा हमारे बालक हर रोज निरोध के विज्ञापन पढ़ते हैं। वास्तव में जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ी है, वैसे–वैसे पारिवारिक आय और राष्ट्रीय आय भी बढ़ी है। इस बात को भूल जाते हैं और आर्य प्रजा के विनाश के इस षडयन्त्र में सभी फँस जाते हैं।

'सरल, सुरक्षित और सस्ता एबॉर्शन कर आपको दो घन्टे में घर भेज दिया जाएगा।' ऐसे विज्ञापन सरकारी अस्पतालों में किया जाता है। गैरसरकारी अस्पतालों की तो कोई बात ही नहीं करनी। ऐसे विज्ञापन देते हैं मानो एबॉर्शन तो बच्चों का खेल है। एक छोटा सा सेक्शन पम्प (नली से हवा निकालकर उसके द्वारा किसी भी चीज को चूस लेने या खींच लेने का कार्य करनेवाला साधन।) के द्वारा भ्रूण या कच्चे गर्भ को घड़ी के छठे भाग में डॉक्टर खींच लेता है। मानो सिर से जूँ निकाल रहा हो, कोई खास परेशानी नहीं। ऐसी बातें, छोटे बालक को बहलाया जाए, इसप्रकार प्रचारित की जाती हैं। इस विषय में धीरेन भगत के द्वारा न्यूयार्क के गायनेकोलोजिस्ट डॉक्टर बर्नार्ड नेथेनसन की डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म 'द साईलेन्ट स्कीम' (मौन चीख या शान्त कोलाहल) में किया गया वर्णन सबको सोचने के लिए मजबूर कर देती है।

'क्या एबॉर्शन एक हत्या है?' ऐसा बुनियादी प्रश्न भगत ने उपस्थित किया है। धीरेन भगत को डॉ. नेथेनसन ने हाल ही में पेरिस में कहा कि, साइलेन्ट स्कीम नामक यह फिल्म मैं भारत में दर्शाने के लिए तैयार हूँ। इस फिल्म में नेथेनसन ने अल्ट्रासाउन्ड तकनीक के द्वारा बारह सप्ताह के गर्भ का किस प्रकार एबॉर्शन किया जाता है, उसकी स्पष्ट और विज्युअल प्रस्तुति की है। अमेरिका और यूरोप में यह फिल्म देखनेवालों ने एबॉर्शन के कानून को

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बदलने की माँग शुरु कर दी है।

आज तक चिकित्साशास्त्र ने १६ सप्ताह के भ्रूण को तिल, मस्सा या नाखून से अधिक नहीं मानता था। उसमें सच्चे मनुष्य का सच्चा जीव है। इस बात को 'द साईलेन्ट स्कीम' फिल्म ने प्रमाणित कर दिया है। दर्शकों ने टी. वी. पर देखा कि एबॉर्शन के पूर्व १६ सप्ताह का भ्रूण पूर्ण रूप से मनुष्य है। डॉक्टर चिकित्सकीय साधनों के द्वारा बालक के चारों ओर के आवरण को पंक्चर करता है। वह गर्भ का टुकड़ा कर डालता है। कई बार तो खोपरीवाला बड़ा माथा समस्या उत्पन्न करता है। डॉक्टर भ्रूण के तैरते हुए माथे को फोरसेप की मदद से जोर से दबाकर तोड़ डालता है और अन्त में उसके मस्तिष्क की हड्डियों का टुकड़ा करके सेक्शन पम्प के द्वारा उसे सोखकर, चूसकर बाहर निकाल लेता है।

जिसके पैर यौवन के आवेग में फिसल गए हों, ऐसी लाखों अविवाहित युवतियों के लिए इसके अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं होता। डॉ. नेथेनसन के फिल्म की पराकाष्ठा तो तब आती है, जब वह कच्चा बालक या भ्रूण अपनी हत्या के लिए अपने पास आनेवाले चिकित्सकीय साधनों के प्रति अपनी नाजुक प्रतिक्रिया (रिएक्शन) प्रदर्शित करता है। जगदीशचन्द्र बोस ने कहा था - पत्तों को तोड़ो मत। उसमें जीव है। जगदीशचन्द्र ने यदि 'साईलेन्ट स्कीम' देखा होता तो बेहोश हो जाते।

सेक्शन पम्प जब भ्रूण के पास जाता है, तब बालक के हृदय की गति १४० होती है। जैसे ही पम्प उसके और नजदीक जाता है, तो उस कच्चे बालक के हृदय की धड़कन बढ़कर २०० प्रतिमिनट हो जाता है। वह समझ जाता है कि उसके ऊपर प्राणघातक हमला हो रहा है। अपने जीवनदीप को बुझाने के लिए अपने पास आनेवाले साधन से बचने के लिए वह थोड़ा पीछे हट जाता है। सबसे पहले उसके आस-पास की नाल और उसका आवरण चिकित्सकीय

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

साधन से छिद्रयुक्त हो जाता है और फिर उसे लपेट में लिया जाता है, चूसा जाता है और तोड़ा जाता है।

बालक के माथे को एक झटके में उसके धड़ से अलग किया जाता है, तब वह असह्य वेदना के कारण अपना मुँह खोलता है। यही है साईलेन्ट स्क्रीम (मौन-चीख) माथा तोड़ते समय एनेस्थिशिया देनेवाला व्यक्ति डॉक्टर से कहता है, अब बाकी रहा यह नम्बर वन ! उसके बाद फोरसेप से दबाकर मजबूत माथे को तोड़कर विसर्जित कर दिया जाता है।

एक जीवित असुरक्षित (डिफेन्सलेस) छोटे से मनुष्य की हत्या करनेवाले को भारतीय पीनल कोड की धारा ३०२ के तहत मर्डर केस में गिरफ्तार नहीं किया जाता है। रोनाल्ड रेगन को 'द साईलेन्ट स्क्रीम' फिल्म पसन्द आई और उसने प्रत्येक कांग्रेसमैन (अमेरिकन सांसद) को यह फिल्म देखने की प्रेरणा की थी। रेगन एबॉर्शन का यह कानून बदलने को आतुर था।

ब्रिटेन में कुछ डॉक्टरों ने कहा कि यह फिल्म अतिशयोक्ति करती है, इसमें स्पेशल इफेक्ट है, इसमें विकृतियाँ हैं। परन्तु जब फिल्म निर्माता ने उनसे पूछा कि भाई, इसमें कौन सी तकनीकी क्षति है? तब इस फिल्म के प्रति आपत्ति उठानेवालों में से कोई भी कुछ बोल न सका। कारण कि द साईलेन्ट स्क्रीम एक सच्ची फिल्म है।

सत्य हमेशा कल्पना की अपेक्षा, कहानी की अपेक्षा अधिक चौंकानेवाला होता है। भारत के सांसद यदि साईलेन्ट स्क्रीम फिल्म देख ले, तो फिर एबॉर्शन को स्वीकृति देनेवाला कानून रद्द करने में सरलता रहेगी। एबॉर्शन एक प्रकार की हत्या है, ऐसा प्रावधान यदि भारतीय पीनल कोड में शामिल हो जाए तो वह दिन मानवता के महोत्सव जैसा हो जाएगा।

For maor information

I suggest you some books-

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

(१) चित्कार

(२) घर-घर प्रोब्लम

(३) बहना तुम पवित्र रहना

(४) गर्भ में क्रूरतापूर्ण हत्या।

I know my daughter

ऐसा घृणित काम तुम कभी नहीं कर सकती हो।

फिर भी अज्ञानतावश या किसी नासमझी में

भूल से भी तुमसे ऐसा खतरनाक पाप न हो जाए

इसीलिए मैंने ऐसी बातें तुमसे कही है।

यदि तुमसे सम्भव हो तो तुम्हारी परिचित स्त्रियों में-सहेलियों में तुम इस ज्ञान का प्रसार करना और इस हत्याकाण्ड को रोकने में अपना योगदान देना।

Wish you all the best.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

FOURTH BIRTH

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

बेटा,

पक्षी का एक नाम है द्विज।

द्विः जायते इति द्विजः ।

जो दो बार जन्म ले, वह द्विज।

पहली बार अण्डे के रूप में

और दूसरी बार बच्चे के रूप में

ब्राह्मण को भी द्विज कहा जाता है।

पहला जन्म माता देती है

दूसरा जन्म गुरु देता है।

I'm talking about a woman.

उसके चार जन्म होते हैं।

पहला - जब वह लड़की के रूप में जन्म लेती है।

दूसरा - जब वह विवाहित होती है - पत्नी के रूप में जन्म लेती है।

तीसरा - जब वह माता बनती है - माँ के रूप में जन्म लेती है।

चौथा - जब उसके पुत्र का विवाह होता है - सास के रूप में जन्म लेती है।

यहाँ बात है 4th birth की,

My dear,

शायद तुमने अपनी सास में कुछ बातें नोट की होगी,

जिसमें सुधार अपेक्षित हो, वह उसकी वाणी हो सकती है,

या उसका व्यवहार हो सकता है।

इन सुधारों को तुम जागृतिपूर्वक अपने आप में Apply करना।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

हम इस दुनिया में

मात्र एक व्यक्ति को सुधार सकते हैं, और वह हम स्वयं हैं।

दूसरों के व्यवहार या वाणी के साथ

अपने-आप को set नहीं करना

और दूसरों को सुधारने की प्रवृत्ति करना

यह गलत दिशा की ओर किया गया प्रयास है।

In others words

ये wrong number की बातें हैं।

जिसका कोई मतलब नहीं है।

My dear,

सही दिशा में किया जानेवाला प्रयास मात्र एक ही है

स्वयं को पूर्ण बनाने का प्रयास।

तुम्हारे 4th birth में किस प्रकार पूर्णता आए

इसीकी यह चर्चा है।

एक घर में पुत्रवधू की अँगूठी खो गई।

बहुत ढूँढा, पर नहीं मिली।

पुत्रवधू बहुत टेन्शन में आ गई।

दूसरे दिन Bed-room की चादर पर से

वह अँगूठी मिल गई।

और उसे शान्ति मिली।

तीसरे दिन

एक अनोखी घटना घटी।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

आलमारी में कपड़ों के बीच से

बिल्कुल वैसी ही दूसरी अँगूठी मिल गई।

दोनों अँगूठियाँ बिल्कुल एक जैसी।

बहू घर के सदस्यों से यह बात बतलाती है

और कहती है 'यह कैसा चमत्कार हो गया!'

सास भी कहती है 'सचमुच चमत्कार हो गया।'

शाम को फोन की घन्टी बजी

बहू ने फोन उठाया।

सामने से आवाज आई।

'नीलाबेन है?'

'नहीं, क्यों? क्या काम था?'

'कल उन्होंने ७० हजार की अँगूठी खरीदी थी

उसके पेमेन्ट में ५०० की एक नोट ज्यादा आ गई।

उन्हें कहना कि दुकान पर आकर ले जाए।'

सास मन्दिर से आई।

बहु उसकी गोद में सिर रखकर

सिसक-सिसककर रोने लगी ...

"मम्मी, आपने मेरे लिए... सत्तर हजार की..."

सास ने प्रेम से कहा,

"इसमें कुछ नहीं है बेटा,

इस सत्तर हजार से

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इस घर में सत्तर वर्षों तक वह दीवाली होनेवाली है

जिसकी कीमत करोड़ों से भी नहीं होगी।

मेरी बेटी चिन्ता में हो,

उसके सामने सत्तर हजार की क्या कीमत है?"

My dear,

पुनः एक गुजराती कविता याद आती है,

जिसका भावार्थ इस प्रकार है-

रुपया-आना और पाई का हिसाब-किताब छोड़ दे तू

यह तो प्रेम का व्यापार है, हमेशा घाटा ही देगा।

यह एक जरूरी घाटा है।

यदि यह न हो

तो अन्य हजारों घाटे मनुष्य को चारों ओर से घेर लेते हैं।

आज भी ऐसी पुत्रवधू है, जिसका पति व्यापार के काम से छः-छः महीने तक विदेश में रहता है।

पत्नी को साथ आने के लिए आग्रह करता है

परन्तु उसका एक ही जवाब है

जबतक सासू-माँ है, तबतक इनकी सेवा के लिए मैं यहीं रहूँगी।

मेरी प्यारी,

इस लघुकथा में बहु की विशेषता तो अवश्य है

लेकिन साथ ही सास की विशेषता भी है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

सास यदि सच्चे हृदय से बहू को अपनी बेटी समझे

तो बहू भी उसे सच्चे दिल से अपनी मम्मी समझेगी

एक घर को स्वर्ग बन जाने के लिए

इससे अधिक और क्या अपेक्षा होगी?

I have full faith on you.

तुम इस अपेक्षा को अवश्य पूरी करोगी।

Love you very much.

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

GOOD-BYE

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मेरी प्यारी
दिशाओं का गला भर आए
और हवा की आँखों में भी आँसू आ जाएँ
ऐसा अवसर है
बेटी की विदाई।
बेटी की विदाई के समय
पिता का पुरुषत्व मातृत्व को प्राप्त करता है।
बेटे के विवाह के समय
बाप अधिक जवान बनता है
लेकिन बेटी के विवाह के समय
वह अचानक वृद्ध हो जाता है।
प्रत्येक पिता की यह परीक्षा होती है।
इस अवसर पर
पिता की छाती से लिपटी हुई बेटी के आँसू में
ओस की बूँद जैसी कोमलता होती है
और बेटी के दामन पर पड़नेवाला पिता का एक आँसू
पिता के वात्सल्य का अभिषेक होता है।

प्रभु की कभी प्रार्थना न करनेवाले एक पिता ने
रोज प्रार्थना करने की शुरुआत की थी ...
"प्रभु, इस दुनिया में सभी पुरुषों को तुम अच्छा बनाना
क्योंकि इनमें से ही कोई मेरी बेटी का पति होनेवाला है।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

इस दुनिया की सभी स्त्रियों को तुम अच्छी बनाना
कारण कि उनमें से ही कोई मेरी बेटी की सास और ननद होनेवाली है।
प्रभु,
अगर जरूरत पड़े
तो तुम सारी दुनिया का पुनर्निर्माण करना
लेकिन मेरी बेटी को कोई दुःख न हो
इसका ध्यान रखना।"

मेरी प्यारी,
यह ऐसा अवसर होता है,
जब पिता का रोम-रोम पुकारता है।
"जिस घर से बँधे हैं भाग तेरे
उस घर में सदा तेरा राज रहे।
होटों पे हँसी के फूल खिले
माथे पे खुशी का ताज रहे
मेरे बाग की ऐ नाजुक डाली
तुझे हर पल नई बहार मिले"
बस बेटा,
भावुकता की इस डोर को
अधिक लम्बा नहीं करना है।
मैं तो तुम्हें मात्र इतना ही कहना चाहता था।
कि एक पिता के लिए 'पुत्री' क्या होती है?

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

और वह पिता

जब अपने कलेजे के टुकड़े को विदा करता है

तब कैसी-कैसी उपयोगी सीख देता है।

हमारे लाखों वर्षों के इतिहास में

बेटी की विदाई की जितनी घटनाएँ घटीं,

उनमें से कुछ घटनाओं के कुछ खास उद्गार

यहाँ तुम्हारे लिए प्रस्तुत है।

याद रखना बेटा,

एक स्नेहासिक्त हृदय अन्त में अपने प्रियपात्र को अपने गहरे ज्ञान और लम्बे अनुभव का निचोड़ दे रहा हो,

वह तुम्हारे लिए भी खूब उपयोगी है।

नृप राणी बेटीने भाखे हित सिखामण सारजी

ससरा सासुनो विनय करजो, देव समो भरथारजी

देव-गुरुनी भक्ति करजो, पालजो व्रत नियमजी

राजा और रानी बेटी को सारतत्त्व (Cream)हितशिक्षा दे रहे हैं।

कि ससुर और सास का सम्मान करना।

पति को देवता के समान मानना।

भगवान और गुरु की भक्ति करना।

और व्रत-नियम का पालन करना।

॥ श्रीचन्द्रकेवली रास ॥

पति आणाए रहेजो रे, लज्जा निर्वहेजो रे

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

सासु ससरानी सेवा करजो परे रे

राए मानी ते राणी रे बहेन सरखी जाणी रे

नणंदी देराणीनां मन साचवो रे

गुरु विनय करजो रे, समतामां रहेजो रे

दानगुणे दीपावजो, अम कुल वंशने

एम कही निज बेटी रे हइडाभर भेटी रे,

थई छेटी वल्यां निजघर आंसु भर्या रे।

बेटा,

तुम पति की आज्ञा के अनुसार रहना।

लज्जारूपी गुण को भली-भांति सम्भालकर रखना।

सास-ससुर की सेवा अच्छी तरह करना।

राजा को जो पसन्द आ गई, वह रानी।

तुम उसके प्रति ईर्ष्या मत करना, बल्कि उसे अपनी बहन के समान समझना।

(यह बात उस समय की है, जब बहुपत्नीत्व की प्रथा थी)

ननद और देवरानी के मन का ख्याल रखना।

अपने से बड़ों का आदर करना।

समता में रहना।

दानगुण-से उदारता से हमारे खानदान का नाम उज्ज्वल करना।

ऐसा कहकर राजा-रानी ने अपनी बेटी को हृदय से लगा लिया।

बेटी ने विदा ली।

और वे आँखों में आँसू भरकर राजमहल में वापस आए।

- धम्मिलकुमार रास

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखी - वृत्तिं सपत्नीजने,

भर्त्तुर्विप्रकृता रोषणतया, मा स्म प्रतीपं गमः ।

भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने, भोगेष्वनुत्सेकिनी,

यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो, वामा कुलस्याधयः ।।

शकुन्तला को विदा करते समय

कण्व ऋषि कहते हैं -

श्रेष्ठजनों की सेवा करना ।

सौत की प्रिय सखी बनकर रहना ।

पति से कभी नाराज हो जाओ

तो भी गुस्से से उसके प्रति कोई प्रतिकूल व्यवहार मत करना ।

उसका विरोध मत करना ।

परिवार के प्रति खूब स्नेह रखना ।

सुखभोग में पागल मत बनना

बेटा,

इसी तरह युवतियाँ गृहिणी बनती है ।

इससे विपरीत होने पर

वह घर के लिए व्याधि (Diseases)ही बनती है ।

अभिज्ञान शाकुन्तल (महाकवि कालिदास)

तत्प्रसादेऽप्यनुत्सेकः तदन्यैरप्रजल्पनम् ।

परवेश्मन्ययानं चा - लङ्कृतिर्योषितामियम् ।।

श्रीषेण राजा

अपनी बेटी कनकवती राजकुमारी को विदा देते हुए कहते हैं ।

बेटा,

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

पति तुम्हारे ऊपर खुश हों, फिर भी तुम अभिमान मत करना।

पति के अलावा अन्य किसी पुरुष के साथ बात मत करना।

और दूसरों के घर मत जाना।

बेटा,

ये तीन गुण अलंकार हैं।

जो सही अर्थों में नारी का शृंगार करते हैं।

– **धम्मिलचरित्र**

कुलद्वयोचितं कर्म विधेयं दुहितः सदा ।।

मधुरं वचनं लोके, सर्वप्रीतिकरं स्मृतम् ।

तस्मात् कटूक्तिर्न क्वापि, गदितव्या कदाचन ।।

पितृवच्छ्‌वशुरो मान्यः, श्वश्रूर्मातृवदन्वहम् ।

माननीया ननान्द्राद्याः, सत्कार्याः स्वजनास्तथा ।।

मेरी बेटी,

तुम हमेशा ऐसे ही काम करना

जो तुम्हारे मायके और ससुराल दोनों कुल के लिए उचित हो।

दुनिया में सभी लोगों को मधुर वचन आनंद प्रदान करता है।

अतः तुम कभी कभी, कहीं भी कटु वचन मत बोलना।

बेटा,

श्वसुर को हमेशा पिता की भांति

और सास को हमेशा माता की भांति समझना।

ननद आदि का सम्मान करना

और स्वजनों का सत्कार करना।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

– श्रीचन्द्रकेवलीचरित्र

जंपेज्ज पियं विणयं करेज्ज वज्जेज्ज पुत्ति ! परनिंदं ।
वसणे वि मा विमुंचसु देहच्छाय व्व नियनाहं ।।

मेरी बेटी,
तुम प्रिय वचन बोलना, विनय करना,
दूसरे की निंदा कभी मत करना।
कितनी भी बड़ी आपत्ति के समय में भी
अपने पति का त्याग मत करना।
हमेशा उसकी परछाई बनकर
उसके साथ ही रहना।

– सिरिचंदरायचरियं

पगइचउराए वच्छे ! जइ वि न ते सिक्खणिज्जमिह किंचि ।
तह वि हु अवच्चनेहो, बला वि मुहरीकरेइ ममं ।।
वच्छे ! सरीरकिच्चे पइणो पाणीयभोयणप्पमुहे ।
अवमन्नियपहुभावा सयमेव सया जइज्जासु ।।
मा कइया वि हु मज्जसु, पियएण वियारिया वच्छे ! ।
पइपणएण सुन्ना, महिलाओ धुवं विणस्संति ।।
लोयठिइमेत्तं चिय विभूसणं कणयरयणमईएहिं ।
सीलालंकारो च्चिय पसाहणं कुलपसूयाणं ।।

अनंगसिंह राजा अपनी बेटी
रत्नवती राजकुमारी को विदा करते हुए करते हैं –
मेरी बेटी,
तुम स्वयं ही नैसर्गिक रूप से कुशल हो।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

अतः

यद्यपि मुझे तुम्हें सिखलाने की जरूरत नहीं है।

फिर भी सन्तान के रूप में तुम्हारे प्रति मेरा स्नेह

मुझे बोलने के लिए प्रेरित कर रहा है।

बेटा,

पति की जो कुछ भी सेवा हो ...

उसे पानी देना, खाना खिलाना आदि।

ये सारे कार्य तुम स्वयं ही करना।

यह सब करने में

तुम अपने रानी के पद का विचार बिल्कुल मत करना।

पति तुम्हें सम्मान दे, इससे तुम कभी अकड़ना मत।

कारण कि इससे पति का प्रेम कम हो जाता है।

और इससे स्त्रियाँ निश्चित रूप से नष्ट हो जाती हैं।

बेटा,

स्वर्णाभूषण या रत्नों के आभूषण

ये तो मात्र कहने के लिए आभूषण हैं।

खानदानी नारियों का असली आभूषण तो शील ही है।

इसीसे वह सुशोभित होती है।

– नेमिचरित्र

बेटा,

जापान में जब बेटी का विवाह होता है।

तब उस दिन

पिता अपनी बेटी को ११ सीख देता है –

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

१. "आज विवाह के बाद तू मेरी पुत्री नहीं रही, आज तक तुम जिस प्रकार मेरी और तुम्हारी माता की आज्ञा मानती रही है, उसी प्रकार अब तुम अपने ससुर और सास की आज्ञा का पालन करना।"

२. विवाह के बाद मात्र एक पति तुम्हारा स्वामी होगा। उसके साथ हमेशा नम्रता और बड़ा दिल रखना। अपने पति की आज्ञा का अक्षरशः पालन करना, यह स्त्रियों का सर्वश्रेष्ठ धर्म है।

३. अपनी ससुराल में हमेशा विनय और सहनशीलता का भाव रखना और कार्यकुशल बनना।

४. उनके साथ वैमनस्य मत रखना। नहीं तो पति का प्रेम खो दोगी।

५. कभी भी क्रोध मत करना, पति कोई अनुचित व्यवहार करे तो मौन धारण करना, और जब पति शान्त हो जाए तब नम्रतापूर्वक उसे सही हकीकत समझाना।

६. अधिक बातें मत करना। झूठ मत बोलना और पड़ोसी की निन्दा मत करना।

७. हाथ देखनेवाले ज्योतिषी से कभी अपने भाग्य की वास्तविकता मत पूछना।

८. तुम्हारा घरखर्च कंजूसी से चलाना और सावधानीपूर्वक सारी व्यवस्था करना।

९. अपने पिता की उच्च पदवी और गृहस्थी का ढिंढोरा मत पीटना। पति के समक्ष अपने पिता की धनाढ्यता का वर्णन मत करना।

१०. जवान होने के बावजूद भी तुम युवतियों के समूह में मत बैठना, बल्कि वृद्धा स्त्रियों के पास बैठने की आदत डालना।

११. हमेशा स्वच्छता पूर्वक लज्जा को ढँककर रखे, ऐसे कपड़े पहनना। रंगीन, चटकदार और नए फैशनवाले कपड़े मत पहनना।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

मेरी प्यारी,

एक बेटे के लिए

मरते हुए बाप का वचन जितना मूल्यवान है।

उतना ही मूल्यवान

एक बेटी के लिए

पिता के द्वारा विदाई के समय कहा गया वचन है।

घटना भले ही भिन्न हो

पात्र भले ही अलग हों,

लेकिन यदि तुम समझ सकती हो

तो यही हमारी बात है।

रोकना-टोकना शायद दुनिया में होगा,

माता-पिता का तो सही मार्गदर्शन ही होता है।

खरी-खोटी सुनाना शायद दुनिया में होगा,

माता-पिता का कर्त्तव्य तो तुम्हारा जीवन सम्भालना होता है।

हिटलर कोई और होगा

माता-पिता की बात तो हमेशा हितकर ही होती है।

अमृताप्यधिका शिक्षा मातुर्पितुर्गुरुर्जनस्य ।

माता-पिता और गुरु इन तीनों की शिक्षा

अमृत से भी बढ़कर होती है।

मेरी प्यारी,

तुम्हें Good bye कहने के लिए

मेरी जीभ हिलती ही नहीं।

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

एक पिता के लिए Bye कभी Good नहीं होता

But,

यदि तेरी Life good होगी

यदि तुम सुखी होगी।

तो तुम्हारा सुख

मेरे लिए जीवन भर के लिए सन्तोष बन जाएगा।

मुझे विश्वास है बेटा,

तुम्हारे जीवन में यदि यह ज्ञान साकार बनेगा

तो तुम १००% सुखी होगी और अवश्य होगी।

परिस्थिति चाहे कैसी भी हो

लेकिन तुम सुखी ही होगी।

That's what I want.

My dear,

एक पिता को अपनी बेटी से

और क्या अपेक्षा हो सकती है?

उसके सुख के सिवाय

बेटी सुखी तो पिता परम सुखी।

Please follow this real knowledge my daughter,

Be happy in your life.

With a warm love

Your parents

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter

प्रियम् का बहुजन उपयोगी लोकप्रिय साहित्य

१. स्टोरी-स्टोरी - सचित्र बालकों के लिये कहानियाँ
२. एन्जोय जैनिझम - सचित्र बाल साहित्य
३. लाईफ स्टाईल - सचित्र बाल साहित्य
४. डायमन्ड डायरी - सचित्र बाल साहित्य
५. संस्कार ABCD - सचित्र बाल साहित्य
६. Sanskar ABCD - सचित्र अंग्रेजी बाल साहित्य
७. ध राईट डायट - सचित्र वैज्ञानिक व धार्मिक द्रष्टी से आहार
८. अप्पहियं कायव्वं - संयमी को शास्त्रों का मार्गदर्शन
९. पालीताना आओ तब - कंपलीट यात्रा गाईड
१०. दिवाली उजवने पहेले - उत्सव की गाईड लाईन
११. यह है संसार - संसार का पर्दाफाश
१२. मंगनी करने से पहले - कंपलीट Engagement गाईड
१३. डीले इझ डेन्झरस - अभी नहीं तो कभी नही
१४. संयम कब ही मीले ? - मुमुक्षु की हृदय की बात उनके माता-पिता को
१५. लव यु डोटर - बेटी के लिये पूर्णतः लाईफ कोर्स

प्राप्तिस्थान

शा. बाबुलाल सरेमलजी बेडावाला
सिद्धाचल बंग्लोझ, हीरा जैन सोसायटी
साबरमती, अमदावाद-५
cell - 9426585904 - Email : ahoshrut.bs@gmail.com

Buy Online Hard Copy https://rzp.io/l/LoveUdaughter